धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

सुप्रभात
रांची, सोमवार
09.12.2024
* * नगर संस्करण। पेज : 12

खबर मन्त्र

khabarmantralive.com
रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित
सबकी बात सबके साथ

khabarmantra.net | मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, अष्टमी/नवमी, संवत् 2081 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 148

12 सीरिया में असद शासन का अंत

न्यूज डायरी

भारतीय का कार्डिनल बनना गर्व : नरेंद्र मोदी

नयी दिल्ली। पीएम मोदी ने कहा कि भारतीय पादरी आर्कबिशप जॉर्ज जैकब कूवाकड को पोप फ्रांसिस द्वारा कार्डिनल नियुक्त किया जाना देश के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि जॉर्ज कूवाकड ने ईसा मसीह के अनुयायी के रूप में मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने जॉर्ज जैकब कूवाकड को शुभकामनाएं दीं हैं। इससे पूर्व झारखंड के तेलोस्फोर पी टोप्पो भी इस पद पर रह चुके थे।

झारखंड में तेजी से बढ़ेगी ठंड, बारिश की संभावना

रांची। राज्य में आने वाले तीन दिनों में कंपकंपी बढ़ेगी। अगले तीन दिनों में पांच डिग्री सेल्सियस तापमान में गिरावट आने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार नौ दिसंबर को गढ़वा, पलामू, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, गिरिडीह, देवघर, दुमका, गोड्डा, साहेबगंज और पाकुड़ में ठंढ बढ़ेगी। साथ ही कोहरा और आंशिक बादल भी छाये रहेंगे। हल्के मध्यम दर्जे की बारिश की भी संभावना है।

17 साल बाद संजीव भट्ट बेकसूर साबित हुए

नयी दिल्ली। गुजरात के पोरबंदर जिले की एक अदालत ने 1997 के एक हिरासत में प्रताड़ना मामले में पूर्व आईपीएस अधिकारी संजीव भट्ट को बरी कर दिया। अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मुकेश पंड्या ने कहा कि अभियोजन पक्ष संदेह के अलावा कोई आरोप साबित नहीं कर सका वे बेकसूर साबित हुए। पूर्व आइपीएस संजीव भट्ट जामनगर में 1990 में हुई हिरासत में मौत मामले में आजीवन कारावास और पालनपुर में राजस्थान के वकील को फंसाने के लिए वर्ष 1996 के ड्रग प्लांटिंग मामले में 20 साल की सजा काट रहे थे।

बांग्लादेश ने जीता अंडर-19 एशिया कप टूर्नामेंट

दुबई। रिजान हसन (47 रन और तीन विकेट) के हरफनमौल प्रदर्शन और अजीजुल हकीम (आठ रन देकर तीन विकेट) की बदौलत बंगलादेश ने रविवार को भारत को फाइनल मुकाबले में 59 रनों से हराकर अंडर-19 एशिया कप का खिताब जीता। बांग्लादेश के 199 रनों के जवाब में भारत की शुरूआत अच्छी नहीं रही और 24 के स्कोर तक अपने दो विकेट गवां दिये। टीम 139 रन पर ढेर हो गयी।

समीक्षा बैठक के दौरान आपस में भिड़ गये कांग्रेसी

रांची। धनबाद जिला की तीन विस सीट झरिया, बाघमारा और धनबाद में कांग्रेस प्रत्याशियों की हार को लेकर रविवार को धनबाद में समीक्षा बैठक में पार्टी के दो पदाधिकारी आपस में ही भिड़ गये। दोनों तरफ से जमकर मारपीट हुई। किसी तरह बीच-बचाव कर दोनों को शांत कराया गया। कांग्रेस एससी सेल के प्रदेश कॉर्डिनेटर पिंटू तुरी का आरोप है कि झरिया प्रखंड अध्यक्ष इम्तियाज अली ने चुनाव में पार्टी विरोधी काम किया है।

गहना आभूषण
सोना (बिक्री) : 71500 रु./10 ग्राम
चांदी : 94000 रु./प्रति किलो

तीसरी आंख

विधानसभा का विशेष सत्र आज से पक्ष और विपक्ष ने बनायी रणनीति

इंडी के विधायकों का निर्णय रबींद्रनाथ महतो होंगे स्पीकर

सरकार की उपलब्धियों की चर्चा हो : सीएम

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। विधानसभा का विशेष सत्र सोमवार से शुरू हो रहा है। इसे लेकर पक्ष एवं विपक्षी सदस्यों ने रणनीति बनायी। सत्ता पक्ष ने मुख्यमंत्री आवास में रविवार को अपराह्न तीन बजे से बैठक की। जबकि, प्रमुख विपक्षी दल भाजपा ने रविवार को संध्या सात बजे से बैठक कर रणनीति बनायी। प्रोटेम स्पीकर स्टीफन मरांडी ने वरीय पदाधिकारियों संग बैठक कर सत्र के सफल संचालन पर बल दिया। विशेष सत्र को लेकर सुरक्षा व्यवस्था में चार आईपीएस, 12 से अधिक डीएसपी रैंक के अधिकारी समेत 2000 अतिरिक्त पुलिस जवान तैनाती रहेंगे। ट्रैफिक व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए हर ट्रैफिक पोस्ट पर भी अतिरिक्त जवानों की तैनाती की जा रही है। मालूम हो कि सत्र को लेकर विधानसभा परिसर की 200 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा, धारा 163 लागू कर दी गयी है।

उल्लेखनीय है कि हेमंत सोरेन सरकार के दोबारा गठन के बाद यह पहला सत्र होगा। इस सत्र में स्पीकर के चयन के अलावा अनुपुरूक बजट भी पेश किया जायेगा।

झारखंड विधानसभा के विशेष सत्र को लेकर रविवार को इंडी गठबंधन के विधायकों की बैठक मुख्यमंत्री आवास में हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 09 से 12 दिसंबर तक झारखंड विधानसभा के विशेष सत्र की रणनीति बनायी गयी। बैठक में सत्तारूढ़ दलों झामुमो, कांग्रेस, राजद और भाकपा माले के नवनिर्वाचित विधायक मौजूद थे। बैठक में सीएम और सदन के नेता के तौर पर हेमंत सोरेन, संसदीय

बोल्ड व तार्किक जवाब देने का निर्देश : वित्त और संसदीय कार्यमंत्री राधाकृष्ण किशोर ने मीडिया से बातचीत में कहा कि बैठक में बोल्ड मानसिकता के साथ तार्किक जवाब देने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि विधानसभा चुनाव 2024 के बाद छठी विधानसभा का सत्र शुरू होने से पहले सीएम की अध्यक्षता में बैठक हुई, इस बैठक में मुख्यमंत्री की ओर से कई निर्देश दिये हैं। हेमंत सोरेन ने भी कहा कि विशेष सत्र में सरकार की उपलब्धियों की चर्चा हो। विपक्ष के सवालों का तार्किक ढंग से माकूल जवाब दिया जाना चाहिए।

कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर समेत सभी मंत्री-विधायक शामिल थे। बैठक में स्पीकर के लिए रवींद्रनाथ महतो के नाम पर सहमति बनी। विधायक अनूप सिंह ने कहा कि श्री महतो सीनियर लीडर हैं। वे इस पद के लिए पहली पसंद हैं। रामदास सोरेन ने कहा कि रवींद्रनाथ महतो के नाम पर सहमति बन गयी वह एक बार फिर स्पीकर बनेंगे।

11 को अभिभाषण 12 को विश्वास मत

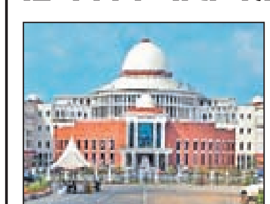

संसदीय कार्यमंत्री ने कहा कि चार दिवसीय विशेष सत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य पूरे किये जायेंगे। पहले दिन नये विधायकों को सपथ दिलायी जायेगी। 10 को विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा। 11 दिसंबर को 11-30 बजे राज्यपाल का अभिभाषण होगा। इसके बाद वित्तीय वर्ष 2024-25 का अनुपूरक बजट सदन में पेश किया जायेगा। 12 दिसंबर राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव, वाद-विवाद सरकार का उत्तर और विश्वास मत हासिल करने की प्रक्रिया पूरी की हो जायेगी।

उग्रवादियों के खिलाफ सबसे बड़ा जन आंदोलन

कई गांव के हजारों लोग तीर-धनुष लेकर निकले, दो का किया 'सेंदरा'

खबर मन्त्र संवाददाता

चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिले के गुदड़ी-गोइलकेरा इलाके में हजारों ग्रामीणों ने उग्रवादियों के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया है। ग्रामीण लोग तीर-धनुष लेकर अभियान चला रहे हैं। उग्रवादियों के खिलाफ आपराधिक घटनाओं से आक्रोशित ग्रामीणों ने पीएलएफआई नक्सली कमांडर मेटा टाइगर और उसके सहयोगी का सेंदरा (पीट-पीटकर हत्या) कर दिया। हालांकि पुलिस की ओर से अब तक इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

स्थानीय लोगों से मिली जानकारी के अनुसार हजारों ग्रामीण पारंपरिक हथियार के साथ सड़क पर उतर गए हैं। वे पिछले तीन दिनों से इलाकों में पहाड़ी के 40 किलोमीटर दायरे में ऑपरेशन सेंदरा अभियान चला रहे हैं।

डीजीपी अनुराग गुप्ता ने चाईबासा में अभियान की समीक्षा की : झारखंड के डीजीपी अनुराग गुप्ता रविवार को चाईबासा पहुंचे और वरीय पुलिस पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने कहा कि पूरे देश से अब नक्सलियों का सफाया हो रहा है। ग्रामीण भी अब पुलिस को सहयोग कर रहे हैं।

डीजीपीने कहा- झारखंड शीघ्र होगा नक्सलमुक्त

डीजीपी अनुराग गुप्ता ने समीक्षा बैठक में कहा कि झारखंड से 95 फीसदी नक्सलियों का सफाया हो गया है। जल्द ही पूरा राज्य नक्सल मुक्त बनेगा। जिला समाहरणालय चाईबासा के पुलिस कार्यालय स्थित सभागार में समीक्षा बैठक में नक्सलियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान, आत्मसमर्पण नीति पर भी चर्चा की। बैठक में उन्होंने पुलिस अफसरों को पुलिसिंग व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने का निर्देश दिया।

जवानों के लिए हैंडसम पॉलिसी: बैठक में पुलिसकर्मियों की ट्रांसफर-पॉलिसी पर भी चर्चा हुई। डीजीपी ने कहा कि जो लंबे समय से नक्सल क्षेत्र में काम कर रहे हैं, उनका ट्रांसफर किया जायेगा। राज्य सरकार ने पुलिस को बहुत सारी सुविधाएं दी हैं। जवानों को 13 महीने का वेतन दिया जा रहा है। ओल्ड पेंशन स्कीम लागू कर दी गयी है। अगर जवान किसी घटना में घायल होते हैं या शहीद होते हैं, तो उनके लिए हैंडसम पॉलिसी है। डीजीपी ने कहा कि झारखंड में करीब-करीब नक्सलियों का खात्मा हो चुका है। पश्चिमी सिंहभूम में मात्र 4-5 फीसदी ही नक्सल समस्या बची है। इसे जल्द खत्म कर पूरे झारखंड को नक्सल मुक्त करेंगे। इसके लिए रिटालियन (जवाबी कार्रवाई), ऑपरेशन, सीआरपीएफ कैंप आदि बिंदुओं पर काम किया जा रहा है।

रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ को जान से मारने की धमकी मामला

बेटी के बॉयफ्रेंड को फंसाने के लिए पिता ने रची थी साजिश, गिरफ्तार

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ को जान से मारने की धमकी देने के मामले में दिल्ली पुलिस ने रांची पुलिस के सहयोग से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। मामले की जांच के दौरान खुलासा हुआ कि कांके थाना क्षेत्र स्थित रहने वाला मिनाजुल नाम के व्यक्ति ने अपनी बेटी के बॉयफ्रेंड मोईज को फंसाने के लिए मोईज के नाम से इश्यू सिमकार्ड से संजय सेठ के मोबाइल पर धमकी दी थी। इस मामले में पुलिस मिनाजुल को गिरफ्तार किया है।

जाने कैसे रची गई साजिश : सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक मिनाजुल की बेटी का मोईज नाम के लड़के से प्रेम प्रसंग चल रहा था। इस वजह से मिनाजुल हमेशा नाराज रहता था। मोईज ने लड़की को एक मोबाइल और अपने नाम से एक सिम कार्ड भी दिया था। इसी दौरान मिनाजुल ने मोईज को फंसाने की नीयत से अपनी बेटी के मोबाइल से सांसद को धमकी दे डाली।

दिल्ली पुलिस जांच के लिए पहुंची थी रांची

दिल्ली पुलिस की टीम जांच के लिए रांची पहुंची थी।

शनिवार को रांची पहुंचने के बाद दिल्ली पुलिस की टीम कांके थाना क्षेत्र स्थित होचर गई। गौरतलब है कि अज्ञात अपराधियों के द्वारा रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ को लाल सलाम के साथ संदेश भेजा गया था। इतना ही नहीं रंगदारी नहीं देने पर संजय सेठ को जान से मारने की धमकी भी दी गई थी। धमकी वाला मैसेज उनके मोबाइल नंबर पर आया था। मैसेज भेजकर उनसे 50 लाख रुपए की रंगदारी मांगी गई थी। संजय सेठ रांची सांसद होने के साथ-साथ देश के रक्षा राज्य मंत्री भी हैं। पुलिस को रक्षा राज्य मंत्री के द्वारा दी गयी सूचना के बाद इस मामले में जांच शुरू कर दी गई। साथ ही झारखंड डीजीपी को अवगत करा दिया गया था।

क्लैट 2025 में संस्कृति पाठक बनी स्टेट टॉपर

रांची। क्लैट परीक्षा में इस बार डीपीएस की छात्रा संस्कृति पाठक ने ऑल इंडिया रैंक 34 हासिल किया है। इस रैंक के साथ वे स्टेट टॉपर भी बन गयी हैं। परीक्षा में अन्य छात्रों ने भी उल्लेखनीय रैंक हासिल कर कानूनी योग्यता और विश्लेषणात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया है। क्वालीफायर में प्रभव शानू (एआईआर 183), ईश बसु (एआईआर 664), अक्षत जैन (एआईआर 1832), सावनजीत (एआईआर 1932), मयंक राज (एआईआर 6835), सुधिष्णा शर्मा (एआईआर 7147), अर्चिता मीनल भेंगराज (एआईआर 9754), सृष्टि खत्री (एआईआर 17202), आद्रिका प्रवीण (एआईआर 33279) है। डीपीएस के प्राचार्य डॉ. आर. के. झा ने कहा कि यह उपलब्धि हमारे छात्रों के समर्पण और कड़ी मेहनत का प्रमाण है।

स्वास्थ्य मंत्री की कुर्सी संभालने से पहले बोले डॉ इरफान

निजी अस्पतालों को मरीज की मौत हो जाने पर बिना बिल भुगतान के सौंपना होगा शव

- निजी अस्पतालों ने बिगाड़ दिए हैं सारे मापदंड
- हर हाल में पूरी करनी होगी आयुष्मान के मापदंड की प्रक्रिया

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। इरफान अंसारी सोमवार को स्वास्थ्य मंत्री का कार्यभार संभालेंगे। इसके पहले ही उन्होंने बड़ी घोषणा की। डॉ इरफान ने कहा कि निजी अस्पताल में इलाज के दौरान अगर किसी मरीज की मौत होती है तो बिना बिल चुकाए शव परिजनों को सौंपना होगा। ऐसा नहीं करने वाले अस्पताल संचालकों पर कार्रवाई होगी। निजी अस्पताल का चाहे जितना भी नुकसान हो, उसे अस्पताल को ही वहन करना होगा। सरकारी अस्पतालों की व्यवस्था पर मंत्री डॉ अंसारी ने कहा कि झारखंड के

सरकारी अस्पतालों को बेहतर बनाने का प्रयास होगा। मरीजों को हर तरह की सुविधा मुहैया कराई जायेगी। इतना ही नहीं निजी अस्पतालों के मनमाने रवैये पर लगाम लगायेंगे।

राज्य में नहीं होने देंगे स्वास्थ्य का व्यवसाय : धनबाद में मीडिया से बात करते हुए श्री असांरी ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से सुस्त है। निजी अस्पतालों ने मापदंड बिगाड़ कर रखा है। डॉ इरफान ने कहा कि स्वास्थ्य के नाम पर बढ़ रहे व्यवसाय पर रोक लगायेंगे। आयुष्मान कार्ड वाले मरीजों का इलाज करने वाले निजी अस्पतालों की उच्चस्तरीय जांच करायेंगे। मापदंड प्रक्रिया में थोड़ी सी भी गलती पाए जाने पर न सिर्फ अस्पताल को सील किया जाएगा, बल्कि कानूनी कार्रवाई भी होगी।

फर्जी डॉक्टरों पर करेंगे कार्रवाई

डॉ इरफान अंसारी मंत्री जामताड़ा भी पहुंचे। वहां उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जामताड़ा स्वास्थ्य विभाग में कई ऐसे लोग हैं जो फर्जी डिग्री लेकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो लोग फर्जी डिग्री लेकर काम कर रहे हैं, उन पर जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी और उन्हें जेल भी भेजा जाएगा। उन्होंने कहा है कि स्थानीय बेरोजगार युवाओं को स्वास्थ्य विभाग में काम करने का मौका दिया जायेगा।

खोजे नहीं मिल रहे अच्छे अधिकारी, भेजने थे 30 नाम, भेजे गये 21

राज्य सरकार ने यूपीएससी को सौंपी आईएएस संवर्ग में प्रोन्नति की सूची

झारखंड में गैर प्रशासनिक सेवा के अच्छे अधिकारियों का है टोटा

- झारखंड को जल्द मिलेंगे गैर सेवा के 6 आईएएस अधिकारी
- 2020-2021 और 2021-22 के बैकलॉग सहित कुल छह पदों पर दी जायेगी प्रोन्नति

सुधीर

रांची। झारखंड में गैर प्रशासनिक सेवा के अच्छे अधिकारियों का टोटा है। राज्य में गैर प्रशासनिक सेवा के अच्छे अधिकारी खोजे नहीं मिल रहे हैं। यूपीएससी को राज्य सरकार की ओर से 30 अधिकारियों के नाम भेजे जाने थे।

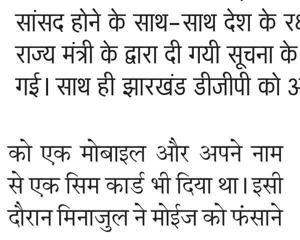

काफी प्रयास के बाद भी राज्य सरकार झारखंड गैर प्रशासनिक सेवा के 30 अधिकारियों को नहीं खोज पायी। अच्छे अधिकारियों की कमी के कारण मात्र 21 अधिकारियों के नाम ही भेजे गये हैं। बता दें कि एक पद के लिए 5 अधिकारियों के नाम भेजे जाते हैं।

बैकलॉग समेत छह पदों पर दी जायेगी प्रोन्नति

राज्य सरकार ने गैर प्रशासनिक सेवा से आईएएस संवर्ग में प्रोन्नति के लिए अफसरों के नामों की सूची यूपीएससी को सौंप दी है। इस बार राज्य सरकार ने 21 अफसरों की सूची यूपीएससी को सौंपी है। इनमें से छह अफसरों को आईएएस संवर्ग में प्रोन्नति दी जायेगी। नियमतः एक पद के लिए पांच नाम भेजे जाने का प्रावधान है लेकिन अफसर नहीं मिलने के कारण 30 की जगह 21 नाम ही भेजे गये हैं। यह प्रोन्नति 2020-2021 और 2021-22 के बैकलॉग सहित कुल छह पदों पर दी जायेगी।

समाज कल्याण से सात और शिक्षा से तीन अधिकारियों के भेजे नाम

राज्य सरकार द्वारा यूपीएससी को भेजी गयी सूची में समाज कल्याण से सात, शिक्षा से तीन, पथ निर्माण से तीन, श्रम विभाग से दो, वाणिज्य कर विभाग से एक, स्वास्थ्य से एक, कृषि से एक, जरेडा से एक, कैबिनेट से एक और आईपीआरडी से एक अफसर के नाम भेजे गये हैं। जिन अधिकारियों के नाम भेजे गये हैं, उनमें राजेश प्रसाद, सुमंत तिवारी, विकास कुमार, विजय कुमार सिन्हा, प्रीति रानी, एसपी सिन्हा, धनंजय कुमार सिंह, विजय कुमार सिन्हा, आनंद, अलका जायसवाल, शिवेंद्र कुमार, कंचन सिंह, सीता पुष्पा और दीपक सहाय का नाम शामिल है।

बिरसा मुंडा जैविक उद्यान में बीमार शेरनी जया की मौत

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। बिरसा जैविक उद्यान में रविवार को शेरनी जया की मौत हो गयी। उसकी मौत के बाद अब जैविक उद्यान में दो शेर ही बचे हैं। उसकी उम्र 15 वर्ष थी। वह वृद्ध हो गई थी और किडनी रोग से ग्रसित भी थी। पिछले 22 दिनों से विशेषज्ञों की सलाह पर जैविक उद्यान के डॉ. ओपी साहू उसका उपचार कर रहे थे। बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी में अब 1644 वन पशु बचे हैं। जिनमें 711 पक्षी तथा बाकी शाकाहारी और मांसाहारी पशु हैं। बताया गया कि शेरनी जया को पांच वर्ष पूर्व 2019 में गुजरात के जूनागढ़ से रेस्कू कर लाया गया था। उसकी मौत के बाद शव का पोस्टमार्टम कर पशु शवदाहगृह में जला दिया गया। वहीं उसके विभिन्न अंग के सैंपल व बिसरा सुरक्षित रख लिया गया है। जिसकी विस्तृत जांच के लिए पशु चिकित्सा महाविद्यालय रांची व विभिन्न संस्थानों में भेजा जाएगा।

भाजपा का 22 दिसंबर से शुरू होगा सदस्यता पर्व

सदस्यता अभियान नहीं संगठन पर्व है : डी पुरंदेश्वरी

भाजपा के प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने कहा कि मजबूत और संघर्षशील भाजपा के लिए अवसर है संगठन महापर्व

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। भाजपा का विधानसभा चुनाव के कारण झारखंड में स्थगित पार्टी का सदस्यता संगठन महापर्व अब 22 दिसंबर से विधिवत प्रारंभ होगा। इसके पूर्व पार्टी ने रविवार को नगड़ी स्थित स्वर्णरेखा बैंक्वेट हॉल में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसकी अध्यक्षता बाबूलाल मरांडी ने की। इसमें पार्टी के प्रदेश संगठन प्रभारी डॉ लक्ष्मीकांत वाजपेई, प्रदेश सदस्यता अभियान की प्रभारी सांसद डी पुरंदेश्वरी, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र त्रिपाठी सहित प्रदेश पदाधिकारी,सांसद, विधायक गण, सदस्यता महापर्व की टोली के सदस्य आदि शामिल हुये। इस अवसर पर सदस्यता प्रभारी एवं सांसद डी पुरंदेश्वरी ने कहा कि भाजपा का सदस्यता कार्यक्रम अभियान नहीं बल्कि संगठन महापर्व है। भाजपा यह संगठन महापर्व अन्य पर्व की तरह अपने विशाल परिवार के साथ मनाती है। उन्होंने कहा कि आज भाजपा विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। पार्टी ने वर्ष 2014 में ऑनलाइन के माध्यम से सदस्यता कार्यक्रम को प्रारंभ किया था। इसमें पूरे देश में 9 करोड़ सदस्य बने थे। आज चार राज्यों जम्मू कश्मीर, महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड को छोड़कर देश भर में 11करोड़ के लक्ष्य को पार करते हुए 11.35करोड़ सदस्य बना लिये हैं। उन्होंने कहा कि चार राज्यों में सदस्य पूरी होने के बाद यह संख्या 14करोड़ तक जा सकती है। उन्होंने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता जो ठान लेते हैं उसे पूरा कर दिखाते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा विचारों और कार्यकताओं की धनी पार्टी है। हमारे पास देश केलिए जीने मरने का जज्बा है। विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश निरंतर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि सदस्यता पर्व के माध्यम से हमें प्रत्येक बूथ के प्रत्येक घर तक पहुंचना है। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश महामंत्री मनोज सिंह ने और धन्यवाद ज्ञान सदस्यता महापर्व के प्रदेश संयोजक राकेश प्रसाद ने किया। इस अवसर पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि लोकतंत्र के पर्व के बाद अब पार्टी संगठन महापर्व में जुट गई है। संगठन महापर्व का लक्ष्य सर्व स्पर्शी, सर्व व्यापी और सर्व समावेशी भाजपा का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि हम विधानसभा चुनाव में संख्या बल में पीछे रह गये। लेकिन 59 लाख लोगों का समर्थन भाजपा को मिला है। उन्होंने कहा कि चुनाव एक पड़ाव है लेकिन हम जनता के बीच बार बार जायेंगे।अपने नीतियों कार्यक्रमों के माध्यम से जायेंगे। उन्होंने कहा कि झारखंड से लोकतंत्र विरोधी,राष्ट्र विरोधी, विकास विरोधी ताकतों से लड़ने केलिये भाजपा के संघर्षशील और मजबूत संगठन को को निरंतर गति देनी है। प्रदेश प्रभारी डॉ लक्ष्मीकांत वाजपेई ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता चुनौतियों को अवसर में बदलने का हुनर जानते हैं। उन्होंने कहा कि यह सदस्यता महापर्व का कार्यक्रम मजबूत और संघर्षशील भाजपा बनाने का अवसर है। कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय ने कहा कि सदस्यता संगठन महापर्व के माध्यम से हमें प्रदेश भर में भाजपा की नई राजनीतिक सुगंध को पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि यह पर्व लोकसंग्रह और शक्ति संचय का भी पर्व है। नागेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि एकात्म मानव दर्शन, अंत्योदय का चिंतन और कार्यान्वयन ही विकसित भारत बनाने में सहायक है। प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने पीपीटी के माध्यम से सदस्यता महापर्व के कार्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रदेश के तर्ज पर आगामी 15 एवं 16 दिसंबर को सभी जिलों में कार्यशालाएं आयोजित होगी। इसमें प्रदेश से नेता शामिल होंगे। जबकि 18 और 19 दिसंबर को सभी 515 मंडलों में कार्यशाला का आयोजन होगा। उन्होने कहा कि 22 दिसंबर को सदस्यता महापर्व का विधिवत शुभारंभ होगा। 25 दिसंबर को झारखंड निर्माता अटल बिहारी वाजपेई की जयंती पर प्रदेश भर में सदस्यता केलिये विशेष कार्यक्रम आयोजित होंगे।

खबर एक नजर में

लालू यादव से मिले झारखंड के श्रम मंत्री

रांची। झारखंड के श्रम और उद्योग विभाग के मंत्री संजय प्रसाद यादव ने पदभार संभालने के बाद रविवार को राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव से पटना में उनके आवास पर मुलाकात की। साथ ही मंत्री ने पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी से भी मुलाकात कर आशीर्वाद लिया और कई मुद्दों पर विचार-विमर्श भी किया।

उद्योग मंत्री संजय यादव से चैम्बर की शिष्टाचार मुलाकात, न्यूनतम मजदूरी दर को बताया अव्यवहारिक

रांची। फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का प्रतिनिधिमंडल परेश गप्तानी के नेतृत्व में नवगठित मंत्रिपरिषद् में उद्योग एवं श्रम मंत्री का प्रभार ग्रहण करने पर मंत्री संजय कुमार यादव से शिष्टाचार मुलाकात कर उन्हें व्यापार व उद्योग जगत की ओर से बधाई दिया। चैंबर ने राज्य के औद्योगिक विकास व रोजगार सृजन के उद्देश्य से विभाग द्वारा किये जानेवाले प्रयासों में सकारात्मक सहभागिता के लिए मंत्री को आश्वस्त किया। चैंबर अध्यक्ष परेश गप्तानी ने श्रम विभाग द्वारा राज्य में प्रभावी किये गए न्यूनतम मजदूरी दर को अव्यवहारिक बताते हुए, उद्योग एवं श्रमिकों के हित में इसमें संशोधन के लिये विचार का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि राज्य में किस प्रकार रोजगार के नये अवसर बढ़ें, इसपर हम सरकार के साथ मिलकर कार्य करने के लिए उत्साहित हैं।

झारखंड विस सत्र को लेकर रांची पुलिस अलर्ट, सुरक्षा में 1000 जवानों की तैनाती

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा का विशेष सत्र सोमवार से शुरू हो रहा है। सत्र को लेकर रांची पुलिस के द्वारा सुरक्षा की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। विधानसभा सत्र के दौरान 1000 से ज्यादा पुलिसकर्मी सड़क से लेकर विधानसभा तक सुरक्षा में तैनात रहेंगे। रविवार को सुरक्षा को लेकर एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने पुलिसकर्मियों को ब्रीफ किया है।

सत्र को लेकर सुरक्षा पुख्ता : झारखंड विधानसभा सत्र को लेकर पुलिस विभाग की ओर से सुरक्षा की तैयारियां पुख्ता कर ली गई हैं। चार दिवसीय सत्र के दौरान सभी 81 विधायक शपथ लेंगे। इसके अलावा राज्यपाल का संबोधन होगा और फिर सरकार को अपना बहुमत साबित करना है।

पुलिस अधिकारियों ने किया ब्रीफ : रविवार को रांची एसएसपी, सिटी एसपी और ग्रामीण एसपी ने सुरक्षा में तैनात होने वाले पुलिस पदाधिकारियों और पुलिस कर्मियों को बारी-बारी से ब्रीफ किया। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया सत्र के दौरान सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रहे इसके लिए पूरे परिसर में चार लेयर का सुरक्षा चक्र बनाया गया है। एक हजार जवानों के साथ-साथ 15 इंस्पेक्टर और 06 डीएसपी रैंक के पदाधिकारी सुरक्षा की निगरानी करेंगे।

वहीं सत्र के दौरान विधानसभा और उसके आसपास के क्षेत्रों में भी सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था की जा रही है। सत्र के दौरान सुरक्षा में तैनात होने वाले सुरक्षाकर्मियों को कई तरह के निर्देश भी जारी कर दिए गए हैं। सुरक्षा में किसी प्रकार की कोई चूक ना हो, इसका विशेष ध्यान रखा जा रहा है। विधानसभा के आसपास कई जगहों पर बैरिकेडिंग की भी व्यवस्था की गई है।

अलर्ट रहने का निर्देश

झारखंड विधानसभा सत्र के दौरान किसी तरह की भी चूक ना हो इसका विशेष ध्यान रखने की हिदायत सभी जवानों को दी गई है। विधानसभा और उसके आसपास के इलाकों में थानेदारों को गश्त करने का निर्देश दिया गया है। खासकर हटिया डीएसपी के क्षेत्र के अलावा धुर्वा, नगड़ी, जगन्नाथपुर, डोरंडा और अरगोड़ा थाना को विशेष रूप से सतर्क रहने की बात कही गई है। साथ ही विधानसभा सत्र को लेकर मेकॉन चौक, सैटेलाइट चौक से लेकर विधानसभा तक दो दर्जन से ज्यादा स्थानों पर बैरिकेडिंग की गई है।

मोबाइल का इस्तेमाल रहेगा बंद

वहीं सत्र के दौरान ड्यूटी पर तैनात रहने वाले पुलिस पदाधिकारियों और जवानों को मोबाइल का इस्तेमाल नहीं करने की सख्त हिदायत दी गई है। पुलिस पदाधिकारियों और जवानों से कहा गया है कि गैर जरूरी या मनोरंजन के लिए मोबाइल का इस्तेमाल करते पाए जाने पर उनपर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

उग्रवादियों-अपराधियों के सहयोगियों को भी थाना में लगानी होगी हाजिरी

डीआईजी ने दिए निर्देश

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड में नक्सलियों और अपराधियों के द्वारा लगातार की जा रही आगजनी और फायरिंग की वारदातों को लेकर डीजीपी के निर्देश के बाद राज्य के सभी जिले की पुलिस अलर्ट हो गयी हैं। डीजीपी के निर्देश के बाद रांची रेंज के डीआईजी ने पांच जिलों के एसएसपी/एसपी के साथ मीटिंग कर दहशत फैला रहे तत्वों के खिलाफ जोरदार कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

इस निर्देश के बाद रांची रेंज के पांच जिलों में रांची, सिमडेगा, खूंटी, गुमला और लोहरदगा में उग्रवादी और आपराधिक गुटों पर नकेल कसने को लेकर पुलिस ने एक्शन प्लान तैयार किया है। उग्रवादी संगठनों पर दबिश बनाने के लिए पुलिस अब उग्रवादियों के साथ साथ उनके सहयोगियों पर भी कार्रवाई करेगी।

झारखंड पुलिस उपद्रवी तत्वों तक हर तरह की सूचना पहुंचाने और उनको सहयोग करने वाले लोगों को चिहिन्त करेगी। पुलिस की ओर से उनकी सूची तैयार की जाएगी, ऐसे सहयोगियों के खिलाफ न सिर्फ थाना में प्राथमिकी दर्ज की जाएगी, बल्कि उनसे प्रतिदिन थाना हाजिरी भी लगवायी जाएगी। अगर जरूरत पड़ी तो ऐसे सहयोगियों को जिला बदर भी किया जाएगा।

रांची रेंज के डीआईजी अनूप बिरथरे के साथ पांच जिलों के एसएसपी और एसपी की हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक में रांची एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा, लोहरदगा एसपी हारिश बिन जमां, सिमडेगा, गुमला और खूंटी के एसपी शामिल थे। बैठक में आगजनी कर रहे इन संगठनों के खिलाफ कार्रवाई की रूपरेखा तैयार की गई।

बैठक में डीआईजी ने सभी एसपी को सख्त निर्देश दिया है कि वे अपने-अपने जिलों में नक्सली घटनाओं को हर हाल में रोकें। उग्रवादियों के खिलाफ अभियान चलाकर उन पर कार्रवाई करें। डीआईजी ने नक्सलियों, स्पिंटर ग्रुप्स और कुख्यात अपराधियों के गिरोह के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए एक्शन प्लान तैयार करने का निर्देश दिया है।

रंगदारी व अगजनी की घटना पर कार्रवाई करे थानेदार

डीआईजी ने बताया कि मीटिंग में एक साल के भीतर रंगदारी, आगजनी व फायरिंग जैसी वारदातों पर संबंधित इलाके के थानेदारों को कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया है। जिसमें कहा गया है कि थाना प्रभारी ऐसी वारदातों की जांच खुद करें। घटना में शामिल अपराधियों व उग्रवादियों के खिलाफ न्यायालय से वारंट जारी कराएं। इश्तेहार चिपकाने के बाद भी अगर अपराधी सरेंडर नहीं करता है तो ऐसे अपराधियों व उग्रवादियों पर इनाम घोषित कराएं।

जिला दो अपराधियों की चल-अचल संपत्ति को करे जब्त

पुलिस द्वारा संगठित आपराधिक गिरोह, उग्रवादियों और स्पिंटर ग्रुप के अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की तैयारी की जा रही है। संगठित गिरोह के कुख्यात अपराधियों और उग्रवादियों की चल अचल संपत्तियों को चिहिन्त कर पुलिस उसे जब्त करेगी। रांची, गुमला, सिमडेगा, लोहरदगा और खूंटी के एसपी को धारा 25 यूएबी व बीएनएसएस की धारा में दी गई शक्तियों का उपयोग करते हुए हर जिला को दो-दो कुख्यात अपराधियों की चल व अचल संपत्ति को जब्त करने का निर्देश दिया गया है। इस कार्रवाई की रिपोर्ट मुख्यालय को सौंपने का निर्देश दिया गया है। डीआईजी अनूप बिरथरे ने बताया कि संगठित गिरोह के कुख्यात अपराधियों द्वारा रंगदारी के पैसे से अर्जित संपत्ति को भी पुलिस जब्त करेगी। इसके लिए पुलिस को निर्देश दिया गया है कि संपत्ति के बारे में जांच पड़ताल करें।

उग्रवादियों के खिलाफ चलाएं ऑपरेशन

डीआईजी ने रांची एसएसपी को भी निर्देश दिया है कि शहर में हर हाल में आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाएं। बुढ़मू समेत अन्य जगहों पर अगजनी की घटना को रोकने के लिए एक्शन प्लान तैयार करें। उग्रवादियों की धड़-पकड़ के लिए ऑपरेशन चलाएं, हर हाल में उग्रवादियों व अपराधियों को गिरफ्तार कर जेल भेजें।

नामकुम में सेना की जमीन की अवैध बिक्री मामले में सरकार के तेवर सख्त

नामकुम के पूर्व सीओ ओम प्रकाश यादव पर विभागीय कार्यवाही चलाने का आदेश

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। नामकुम की तुंबाटोली में सेना के नाम पर अधिग्रहित जमीन के अवैध तरीके से स्थानांतरण के मामले में झारखंड सरकार ने तत्कालीन अंचल अधिकारी नामकुम ओम प्रकाश यादव पर विभागीय कार्यवाही चलाने का आदेश दिया है। सेवानिवृत्त आइएएस अधिकारी गणेश कुमार को विभागीय जांच पदाधिकारी नियुक्त् किया गया है। ओम प्रकाश यादव से 15 दिनों के अंदर लिखित बयान मांगा गया है। अपर समाहर्ता रांची उपास्थापन पदाधिकारी बनाये गये हैं। बताते चलें कि नामकुम अंचल के मौजा- तुम्बागुटु, थाना नंबर-301 खाता नंबर- 08।93, 98 एवं 108 से संबंधित विभिन्न रैयतों की भूमि जो सेना के लिए अधिग्रहित की गयी है का अवैध नामांतरण की स्वीकृति नामांतरण वाद संख्या 1 2159 आर 27,2010-11, 3। 2167 आर 27, 2010-11 के माध्यम से नियम विरूद्ध करने संबंधी आरोप लगा। पूरे मामले में भू-राजस्व विभाग ने 24 अप्रैल 2023 को एक एक पत्र कार्मिक विभाग को लिखा जिसमें रांची डीसी की ओर से 12 नवंबर 2021 को भेजे गये आरोप पत्र भी शामिल था। मामले पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की सहमति के बाद ओमप्रकाश यादव पर विभागीय कार्यवाही संचालित करने का निर्णय लिया गया है। मालूम हो कि नामकुम की तुंबाटोली में सेना के नाम पर करीब 400 एकड़ जमीन अधिग्रहित की गयी थी, लेकिन जमीन को कुछ जमीन कारोबारियों ने अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से दूसरे को बेच दिया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री ने निगरानी जांच का आदेश भी जारी किया था, लेकिन इस आदेश के पहले मामले को लेकर नामकुम थाना में केस दर्ज किया जा चुका था।

राज्य और समाज के विकास लिए अन्तिम व्यक्ति तक राजनीतिक चेतना जरूरीः राजेन्द्र

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के पुर्व सदस्य राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में ग्रैंड ऑकेजन बैंक्विट हॉल में रविवार को सामाजिक सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक कार्य को लेकर बैठक हुई। इसमें विभिन्न जिलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि किसी भी समाज के विकास के लिए अन्तिम व्यक्ति तक राजनीतिक चेतना पहुंचे, ऐसा प्रयास सभी को करना चाहिये। मौके पर उन्होंने राज्य में अपनी भाषा संस्कृति को बढ़ावा देने पर बल दिया। प्रसाद ने कहा कि बहुत जल्द राज्य भर से समाजिक चेतना को लेकर रांची में एक विचार गोष्ठी आयोजित किया जाएगा। बैठक में समाज के प्रबुद्ध जन एकत्रित हुए विभिन्न मुद्दों पर परिचर्चा हुई। बालेश्वर साहू ने सामाजिक कल्याण के लिए इस बैठक के आयोजन पर प्रकाश डाला। परिचर्चा में बालेश्वर साहु,शेखर गुप्ता, विजय साहू, रौशन साहू, प्रकाश साहु, शेखर कुमार, धर्मेन्द्र कुमार पीयूष कुमार समेत हजारीबाग जमशेदपुर लातेहार चतरा धनबाद सिमडेगा रांची रामगढ़ जिला के लोग शामिल थे। उन्होंने कहा कि भविष्य में एक राज्य स्तरीय सामाजिक महासम्मेलन करने पर विचार पर विमर्श किया गया। बैठक में हजारीबाग जमशेदपुर लातेहार चतरा धनबाद सिमडेगा रांची रामगढ़ जिला के लोग शामिल थे।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
(सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार)

सार्वजनिक सूचना

मदनगुण्डी टोल प्लाजा पर 09.12.2024 (08:00:00 बजे) से प्रारम्भ उपयोगकर्ता शुल्क (टोल) की सार्वजनिक सूचना।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 31 के किमी 0.000 से किमी 27.500 (बरही से कोडरमा) के नवनिर्मित खंड के उपयोग के लिए भारत सरकार के राजपत्र अधिसूचना संख्या का.आ.2254 (अ.) दिनांक 12.06.2024 के तहत टोल प्लाजा मदनगुण्डी (चैनेज किमी 12.300, ग्राम–मदनगुण्डी, जिला–कोडरमा) पर उपयोगकर्ता शुल्क दिनांक 09.12.2024 (08:00:00 बजे) से निम्न दरों पर प्रारम्भ होने जा रहा है:

वाहनों की श्रेणी	एकल यात्रा (रू)	एक दिन के भीतर वापसी यात्रा (रू)	मासिक पास का शुल्क एक माह में 50 एकल यात्रा (रू)	शुल्क के जिले के भीतर पंजीकृत वाणिज्यिक वाहनों के लिए एकल यात्रा शुल्क (रू)
कार, जीप, वैन या हल्के मोटर वाहन	45	70	1510	25
हल्के वाणिज्यिक वाहन, हल्के मालवाहन यान या मिनी बस	75	110	2435	35
बस या ट्रक (दो धुरी वाले)	155	230	5105	75
तीन धुरी वाले वाणिज्यिक यान	165	250	5565	85
भारी संन्निर्माण मशीनरी, अर्थ मूविंग उपस्कर और बहुधुरिय यान (4 से 6 धुरी वाले)	240	360	8000	120
अधिक बड़े आकार वाले यान (सात अथवा इससे अधिक धुरी)	290	440	9740	145

टोल प्लाजा से 20 किमी के दायरे में रहने वाले लोगों के स्थानीय गैर–व्यवसायिक वाहनों के मासिक पास की दर 340/– रू होगी।

परियोजना निदेशक, परियोजना कार्यान्वयन इकाई, कनहरी हील रोड, हजारीबाग, झारखंड – 825301

टेलीफोन न0: 065446–270040 ईमेल: piuhazaribagh@nhai.org/ nhaipiuhazaribagh@gmail.com

सड़कें ही नहीं, राष्ट्र का निर्माण भी

विधानसभा चुनाव नतीजों पर आजसू पार्टी की समीक्षा बैठक में बोले पार्टी सुप्रीमो सुदेश महतो

रिजल्ट भले ही हमारे पक्ष में नहीं, पर जनहित के काम जारी रखेंगे

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची । आजसू पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने कहा कि हम जनादेश का सम्मान करते हैं तथा इंडिया गठबंधन द्वारा जनता के साथ किये गये लुभावने वादे को पूरा किये जाने की अपेक्षा सरकार से करते हैं। सरकार जनता के हित में पहले दिन से ही कार्य करें न की चुनावी वर्ष से काम शुरू करे। वादों के अनुसार प्रारंभ से ही कार्य करे। चुनाव में हार जीत लगी रहती है। परिणाम भले हमारे पक्ष में नहीं रहें लेकिन हम जनता के हक, अधिकार और स्वाभिमान की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखेंगे। सुदेश कुमार महतो रविवार को हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय में आयोजित झारखंड विधानसभा चुनाव-2024 के परिणाम की समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। समीक्षा बैठक में पार्टी की संसदीय बोर्ड के सदस्य और विधानसभा चुनाव के प्रत्याशी शामिल थे।

सुदेश महतो ने कहा कि जनहित से जुड़े सकारात्मक मुद्दों में हम सरकार के साथ खड़े रहेंगे लेकिन जहां भी जनविरोधी निर्णय आएंगे वहां हम धारदार विपक्ष की भूमिका निभाएंगे। यह चुनाव इंडिया गठबंधन ने विकास के आधार पर नहीं बल्कि जातीय धुर्वीकरण के आधार पर लड़ा है। जातीय धुर्वीकरण ही इस गठबंधन का आधार है। हमारे गठबंधन के साथियों के साथ समन्वय स्थापित न होना भी इस अप्रत्याशित परिणाम का कारण रहा। उन्होंने कहा कि आजसू के सभी कार्यकर्ता पूर्व की तरह जनता के बीच जाएंगे। उनके बीच उनके लिए काम करेंगे और यदि सरकार अपने वादों पर पिछड़ों को 27% आरक्षण तथा 1932 के खतियान आधारित स्थानीय नीति, युवाओं के लिए रोजगार, वृद्धा व विधवा पेंशन और दिव्यांग व्यक्तियों के लिए वित्तीय सहायता बढाकर 2500 करने तथा जातीय जनगणना के मुद्दे पर प्रभावी ढंग से आगे बढ़ते नहीं दिखेगी तो हम इन मुद्दों को लेकर जनता को फिर से गोलबंद करेंगे तथा मूलवासी, झारखंडी एवं पिछड़ों के हित में सामाजिक व राजनीतिक लड़ाई को अपने मुकाम तक पहुंचाएगे। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी इस राज्य में एक बड़ा मुद्दा है। यह समस्या अपने विकरालतम रूप में जनता के सामने खड़ी है। यह देखना होगा कि वर्तमान सरकार किस रूप में और किस हद तक इस समस्या का समाधान करने में रुचि दिखती है। पार्टी के वरीय उपाध्यक्ष सह गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने कहा कि हम जनता की भावनाओं को अच्छे से समझने में नाकाम रहें। स्थानीय मुद्दों का चुनाव से गायब होना जनता को रास नहीं आया। साथ ही सरकार की विफलताओं को जनता के बीच सही से न पंहुचा पाना भी इस चुनाव परिणाम की मुख्य वजहों में से एक रहा। हम जनता के विश्वास को दोबारा जीतने के लिए समर्पित हैं और इसके लिए अपनी रणनीति को मजबूत करेंगे।

नदियों की सूरत संवारेगी सरकार, हरमू और स्वर्णरेखा का ड्रोन से होगा सर्वे

- दोनों नदियों के अस्तित्व को फिर से बचाने की होगी कोशिश
- नगर विकास सचिव ने जुडको से मांगी वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार ने जुडको के अधिकारियों को हरमू नदी के विकास के लिए अब तक जो काम हुआ है, उसकी वर्तमान स्थिति की रिपोर्ट देने को कहा है। सचिव ने पूछा है कि जितने सिवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बने हैं। उनमें से कितने काम कर रहे हैं और कितने बंद हैं? उसका भी सर्वे करायें। साथ ही जो पाथवे बना था उसकी स्थिति की भी रिपोर्ट मांगी है। प्रधान सचिव ने हरमू नदी के साथ स्वर्णरेखा के पाट की मूल चौड़ाई का आंकलन करने के लिए ड्रोन कैमरे से नदी की शुरूआत से अंत तक की वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी कराने का निर्देश दिया है।

अतिक्रमण पर भी तैयार होगी रिपोर्ट

हरमू नदी के दोनों किनारों पर अतिक्रमण की वर्तमान स्थिति पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा गया है। यह भी कहा कि यह पता लगायें कि हरमू नदी में कहां-कहां नालों का गंदा पानी प्रभावित हो रहा है। उन्होंने नदी के किनारों को चौड़ा करने के लिए योजना बनाने का आदेश दिया।

प्रधान सचिव ने सभी रिपोर्ट समय सीमा के भीतर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। सरकार एक बार फिर हरमू नदी को बचाने को लेकर गंभीर हो गई है। हरमू नदी के कारण स्वर्ण रेखा नदी का अस्तित्व भी खतरे में है। हरमू नदी का गंदा पानी स्वर्णरेखा में जा रहा है, जिससे इस नदी का पानी भी खतरनाक हो गया है। राजधानी के लिए दोनों नदियों का महत्व है। हरमू नदी के विकास पर करोड़ों रुपये फूंके जा चुके हैं। लेकिन स्थिति जस की तस बनी हुई है। कोई खास सुधार नहीं हो सका है।

स्वर्णरेखा नदी की वास्तविक चौड़ाई का पता लगाने का निर्देश

नगर विकास विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार ने रांची की प्रमुख नदी स्वर्णरेखा के सौंदर्यीकरण और विकास पर भी अधिकारियों को निर्देश दिया है। उन्होंने स्वर्णरेखा नदी की वास्तविक चौड़ाई का पता लगाने के लिए ड्रोन कैमरे का उपयोग करने को कहा है।

इसके साथ स्वर्णरेखा नदी के किनारों पर धार्मिक कार्यों एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए क्या क्या किया सकता है? इसकी रिपोर्ट भी जल्द उपलब्ध कराने को कहा है।

खनन मॉडल का स्टडी करने उच्च स्तरीय दल जल्द ही जायेगा ओड़िशा-छत्तीसगढ़

- वित्त मंत्री बनते ही मीडिया से मुखातिब हुए राधाकृष्ण किशोर, कहा राज्य के लिए जुटायेंगे रेवन्यू

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। पड़ोसी राज्य ओड़िशा और छत्तीसगढ़ के खनन मॉडल का अध्ययन करने के लिए झारखंड का उच्चस्तरीय दल इन दोनों राज्यों में जाएगा। राज्य के वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने मीडिया से बातचीत में कहा कि झारखंड में देश का 40 फीसदी खनिज होने के बावजूद 11 से 12 हजार करोड़ रुपए का ही राजस्व मिलता है। जबकि ओडिशा को खनन से 50 हजार करोड़ रुपए राजस्व की प्राप्ति होती है। 2016-17 में ओडिशा को खनन से 4,900 करोड़ रुपए राजस्व की प्राप्ति हुई थी, जो 2021-22 में बढ़कर 50 हजार करोड़ हो गयी।

मंईयां सम्मान योजना के लिए 17700 करोड़ की जरूरत : राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि सरकार मंईयां सम्मान योजना योजना सहित कई कल्याणकारी योजनाओं की लागत को कवर करने में जुट गई है। 1.28 लाख करोड़ रुपये के वार्षिक बजट के बावजूद, राज्य सरकार को अकेले मंईयां सम्मान योजना के लिए प्रति वर्ष कम से कम 17,700 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। एक महिला के लिए 2,500 रुपये की रकम भी काफी मायने रखती है। इसका मतलब है कि उसे अब सेटिरिज़िन या कैलपोल टैबलेट जैसी बुनियादी दवाओं का खर्च उठाने के लिए भीख नहीं मांगनी पड़ेगी। न ही उसे टिकली-बिंदी जैसी छोटी-छोटी चीजें खरीदने के लिए अपने पति पर निर्भर रहने की जरूरत है।

ग्रामीण विकास की नहीं बनीं योजनाएं : झारखंड के अलग राज्य बनने के बाद से लगातार सरकारों में ग्रामीण विकास की कोई योजना नहीं बनाई गई हैं। कृषि उत्पादन बढ़ाने या कृषि-संबद्ध उद्योगों को बढ़ावा देने की दृष्टि का अभाव था, जो झारखंड में 80 फीसदी आबादी को सशक्त बना सके। पिछली सरकारों ने अस्पताल भवन तो बनाए लेकिन उन्हें संचालित करने के लिए आवश्यक मानव संसाधन उपलब्ध कराने में विफल रहीं। ग्रामीण अस्पतालों में कोई डॉक्टर, नर्स या दवाएं उपलब्ध नहीं हैं।

1.36 लाख करोड़ बकाए पर भी रखी अपनी बात : वित्त मंत्री ने केंद्र के पास 1.36 लाख करोड़ बकाए पर भी अपनी बात रखी। 1.36 लाख करोड़ के लंबित बकाए पर तर्क दिया कि राजनीतिक नैतिकता यही है कि केंद्र सरकार से निष्पक्षता से कार्य करने और धन जारी करने की मांग की जाएगी। हमारी संघीय शासन प्रणाली के तहत, केंद्र से अपना बकाया मांगने के लिए अदालत जाना तो कलंक होगा। केंद्र को अपनी गलती स्वीकार करनी चाहिए। बातचीत की मेज पर आकर चर्चा करनी चाहिए कि वे झारखंड के लंबित फंड को कैसे जारी करने की योजना बना रहे हैं।

बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन का 20वां वार्षिक अधिवेशन संपन्न

- झारखंड राज्य के सभी हिस्सों से बैंक ऑफ इंडिया के लगभग 1500 अधिकारी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन, झारखंड राज्य इकाई का 20वां वार्षिक अधिवेशन रविवार को रिम्स ऑडिटोरियम बरियातु, रांची में आयोजित किया गया। बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन, झारखंड राज्य इकाई की अध्यक्षता कॉमरेड अमित कुमार ने किया। अधिवेशन में महासचिव कॉमरेड प्रकाश उरांव ने देश के कोने-कोने से आए बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन के शीर्ष नेताओं का स्वागत किया और सभी साथियों से एकजुटता की अपील की।

बैठक में फेडरेशन बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष कॉमरेड नागेश्वर ने वर्तमान में बैंकिंग माहौल में हो रहे तकनीकी बदलावों के बारे में बताया और उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के निजीकरण के बारे में सरकार की नीति का विरोध किया। महासचिव कॉमरेड नीलेश पवार ने पांच दिवसीय बैंकिंग और कार्य-जीवन संतुलन तथा बैंक ऑफ इंडिया द्वारा अपने अधिकारियों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में बताया और महासचिव (बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन, बिहार राज्य इकाई), कॉमरेड गणेश पांडे, महासचिव (बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन, ओडिशा राज्य इकाई), कॉमरेड कमलजीत महापात्रा, अध्यक्ष (बैंक ऑफ इंडिया ऑफिसर्स एसोसिएशन, झारखंड राज्य इकाई) ने अपने विचार व्यक्त किए। झारखंड राज्य के सभी हिस्सों से बैंक ऑफ इंडिया के लगभग 1500 अधिकारी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और इस कार्यक्रम को पूर्ण रूप से सफल बनाया।

अजमेर शरीफ दरगाह पर उंगली उठाने वाले लोग देश के दुश्मन : एदार ए शरीया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। एदार ए शरीया झारखंड के तत्वाधान में रांची जिला के मस्जिदों के इमाम और चुनिंदा उलेमा की बैठक प्रदेश कार्यालय इस्लामी मरकज में रविवार को हुई, जिसकी अध्यक्षा मौलाना सैयद अलकमा शिबली कादरी ने की जबकि एदार ए शरीया झारखंड के नाजिमे आला मौलाना कुतुबुद्दीन रिजवी ने संचालन किया। बैठक में दरगाह अजमेर शरीफ और देश के विभिन्न मस्जिदों व स्थानों पर सुनियोजित तरीके से खुदाई करने, सर्वे कराने के नाम पर देश में बड़े पैमाने पर अराजकता फैलाने के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव लाने, देश को खुदाई गैंग का पर्दाफाश करने और वर्तमान में मस्जिद कमिटियों और इमामों के बीच बेहतर तालमेल पैदा करने हेतु कारगर कदम उठाने पर बल देने से संबंधित चर्चा हुई। बैठक के उद्देश्य पर मौलाना कुतुबुद्दीन रिजवी एवं मौलाना ताजुद्दीन ने विस्तार से प्रकाश डाला। बैठक में शामिल उलेमा ने दरगाह ख्वाजा गरीब नवाज अजमेर शरीफ के अस्तित्व पर उंगली उठाने, सर्वे के नाम पर हमले की साजिश करने और देश के विभिन्न हिस्सों में मस्जिदों और मुस्लिम अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों पर कब्जा का षड्यंत्र कर देश भर में हो रहे पैमाने पर अराजकता पैदा करने के प्रयासों का कड़ा विरोध किया गया।

तंजीमे अईम्मए मसाजिद का किया गया गठन

तंजीमे अईम्मए मसाजिद का गठन किया गया। जिसके संरक्षक मौलाना सैयद शाह अलकमा शिबली कादरी, अध्यक्ष मौलाना डॉ ताजुद्दीन रजवी, सचिव मौलाना अमीरुल हसन, कोषाध्यक्ष मौलाना मिंहाजुद्दीन फारुकी, प्रवक्ता मौलाना इरफान मिसबाही व मौलाना कलीम अशरफ मिसबाही बनाए गए हैं। इनके अलावे 31 कार्यकारणी सदस्य होंगे।

राजधानी में 10 जगहों पर स्पीड वायलेशन डिटेक्टर कैमरे लगाये गये

- ट्रैफिक नियम तोड़ा तो अब खैर नहीं

संजीव मिश्रा

रांची। अगर आप तेज रफ़्तार गाड़ी चलाने के आदी हैं, तो सावधान हो जाइए। राजधानी में 10 जगहों पर स्पीड वायलेशन डिटेक्टर कैमरे लगाये गये हैं। किसी एक जगह पर ओवर स्पीड की वजह से किसी व्यक्ति का चालान कटता है, तो उस दिन दूसरी जगह उसका चालान नहीं कटेगा। इसके लिए सभी कैमरे को इंटीग्रेट किया जायेगा। नयी व्यवस्था के तहत ओवर स्पीडिंग के लिए 1,000 रुपये जुर्माना का प्रावधान है। अगर कोई व्यक्ति ओवर स्पीडिंग मामले में तीन बार पकड़ा जाता है, तो ड्राइविंग लाइसेंस सस्पेंड करने का प्रावधान है।

स्पीड लिमिट

1.	खरसीदाग ओपी थाना से रांची इंट्री रोड	40 किमी प्रति घंटा
2.	शहीद मैदान से धुर्वा गोलचक्कर	40 किमी प्रति घंटा
3.	रामपुर तिराहा रिंग रोड से रांची सिटी	40 किमी प्रति घंटा
4.	तिलता रिंग रोड चौक से रांची सिटी रोड	40 किमी प्रति घंटा
5.	पिस्का मोड़ से रवि स्टील चौक पंडरा	40 किमी प्रति घंटा
6.	हिनू एयरपोर्ट रोड	40 किमी प्रति घंटा
7.	सेटेलाइट कॉलोनी चौक से डिबडीह ब्रिज	40 किमी प्रति घंटा
8.	मेसरा रेलवे ओवब्रिज से डीपीएस ग्रेटर रांची	40 किमी प्रति घंटा
9.	कांके रिंग रोड से बिरसा यूनिवर्सिटी	40 किमी प्रति घंटा
10.	रांची कॉलेज प्लेग्राउंड से स्टेट गेस्ट हाउस	30 किमी प्रति घंटा

कंटेनर में बंगाल ले जाये जा रहे थे मवेशी, पांच गिरफ्तार

- पशु तस्करी के खिलाफ खूंटी पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 33 पशुओं को मुक्त कराकर लायी खूंटी थाना

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची/खूंटी। डीजीपी के निर्देश के आलोक में रविवार की अहले सुबह खूंटी पुलिस ने पशु तस्करी मामले में 33 पशुओं को मुक्त कराया और खूंटी थाने ले आयी। मौके पर पांच तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया। बताया जा रहा है कि बरामद पशुओं को कंटेनर में लादकर पश्चिम बंगाल ले जाया जा रहा था। पुलिस मामला दर्ज कर तस्करों से पूछताछ कर रही है। फिलहाल पुलिस ने तस्करों के बारे में खुलासा नहीं किया है, लेकिन दावा है कि सभी तस्कर खूंटी, रांची और आसपास के जिलों के रहने वाले हैं, जो पिछले कई वर्षों से पशु तस्करी में संलिप्त हैं।

जानकारी के अनुसार डीएसपी वरुण रजक को लगातार सूचना मिल रही थी कि खूंटी के रास्ते लगातार पशुओं की तस्करी की जा रही है। सूचना पर कार्रवाई के दौरान पुलिस को तस्करी का कोई सुराग नहीं मिल रहा था। इसी बीच देर रात उन्हें फिर सूचना मिली कि एक बड़े कंटेनर में पशुओं की तस्करी की जा रही है। सूचना के तहत खूंटी-तमाड़ की सड़कों पर जांच अभियान चलाया गया। इस दौरान एक 14 चक्का कंटेनर को रोका गया। जहां जांच के दौरान कंटेनर से 33 पशु बरामद किए गए। साथ ही मौके से पांच लोगों को हिरासत में लिया गया। मालूम हो कि पशु तस्करी मामले में खूंटी पुलिस की यह पहली कार्रवाई है, जब इतनी बड़ी संख्या में पशु बरामद किए गए। सूत्रों के अनुसार पशु तस्करी के इस धंधे में खूंटी जिले के मुरही, पिपराटोली, फूदी, रेवा, मन्हू, कर्रा के जलटंडा, तोरपा के तपकारा और रनिया इलाके के दर्जनों लोग शामिल हैं।

तस्करों से पुलिस कर रही है पूछताछ : डीएसपी वरुण रजक ने बताया कि गिरफ्तार तस्करों से पूछताछ की जा रही है। पूछताछ में कई तस्करों के नाम का खुलासा हुआ है। इस बयान के तहत मामले की जांच की जा रही है। जल्द ही अन्य तस्करों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा। डीएसपी ने बताया कि मामले की जांच पूरी होने के बाद तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और सभी जेल जाएंगे।

नेहरू युवा केंद्र व एल्युमनी एसोसिएशन मारवाड़ी कॉलेज ने किया पौधरोपण

NYKS नेहरु युवा केन्द्र संगठन Nehru Yuva Kendra Sangathan

रांची। नेहरू युवा केंद्र व एल्युमनी एसोसिएशन मारवाड़ी कॉलेज ने विवेकानंद युवक्वेक फाउंडेशन के सहयोग से कलाकृति स्कूल ऑफ आर्ट्स के साथ एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर लगभग 50 पौधे लगाए गए। इस कार्यक्रम में अतिथि के रूप रूप में समाजसेवी दीपक सिंह, एल्युमनी एसोसिएशन मारवाड़ी कॉलेज के अध्यक्ष गौरव मित्तल, कलाकृति के निदेशक धनंजय कुमार मौजूद थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रवण कुमार, पुरुषोत्तम, आशिफ, रोहित कुमार एवं अन्य सदस्यों का योगदान रहा।

रांची विवि के आर्यभट्ट ऑडिटोरियम में शंख ध्वनि, वेदपाठ कार्यक्रम आयोजित

- अर्चा साहित्य कला अकादमी ने प्रस्तुत किया रवींद्र संगीत प्रस्तुत किया गया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। अर्चा साहित्य कला अकादमी की ओर से रविवार को रांची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट ऑडिटोरियम में शंख ध्वनि, वेदपाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ की गयी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री संजय सेठ, रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा, प्रोफेसर डॉ अमिताभ मुखर्जी, पूर्व सीएमडी एचईसी अभिजीत घोष, पूर्व अध्यक्ष एफजे सीसीआई कुणाल आजमानी, बंगाली युवा मंच चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष सिद्धार्थ घोष व प्रवीर लाहिड़ी शामिल हुये। कार्यक्रम में दिल्ली ,कोलकाता, हैदराबाद, पटना, हजारीबाग,जमशेदपुर, धनबाद, चाईबासा, हजारीबाग से पहुंचे थे।

विभिन्न भाषाओं के साथ कार्य करता है संगठन : अर्चा साहित्य कला अकादमी के चेयरमैन डॉ पम्पा सेन विश्वास ने बताया कि अर्चा साहित्य कला अकादमी की चेयरपर्सन डॉ पुष्पा सेन ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि यह संगठन दस साल से चल रहा है। इसमें संगोष्ठी, सेमिनार, संगीत, नृत्य, नाटक चित्रांकन, काव्य पाठ, समाज सेवा कार्यक्रम निरंतर चलता रहता है। यह संगठन विभिन्न भाषाओं के साथ कार्य करता है। कार्यक्रम में विभिन्न जिलों से आये कलाकारों ने संगीत प्रस्तुत किया। इसमें 108 कलाकारों ने हिस्सा लिया। सभी ने एक साथ मिलकर एक मंच पर एक ही समय में 15 रवींद्र संगीत प्रस्तुत किये। इसमें महिला और पुरुष दोनों कलाकार शामिल थे कार्यक्रम में गीत-संगीत की एक पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसमें 15 गीत लिखे हुए है।

सात मेंटरों ने छह माह में 15 गीत सिखाये : कार्यक्रम में एक साथ एक लय में 108 रवींद्र गान गाया गया। इस गीतों को सात मेंटरों ने छह माह में सिखाया था। इनमें लिली मुखर्जी, अपराजिता भट्टाचार्य, कुमकुम बनर्जी, पम्पा सेन विश्वास,परोमिता चौधरी, अपरूपा चौधरी, रूमकी दास शामिल हैं। सभी कलाकारों को अंग वस्त्र, सर्टिफिकेट और मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रस्तुत संगीत के बोल थे- प्रथमो आदि तव....आकाश भर सूर्य तारा....बेर्थ प्राणेर आवरजोना.... और जागोतो जुड़े उधर सुरे....।

वैश्य मोर्चा के पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

वैश्यों की अनदेखी अब बर्दाश्त नहीं : महेश्वर साहू

- केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहू ने समाज और संगठन के प्रति निष्ठा रखने एवं संघर्ष में समर्पित भाव से साथ देने की शपथ दिलाई

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। मोरहाबादी मैदान स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के नीचे झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा के केंद्रीय पदाधिकारियों, जिलाध्यक्षों को रविवार को शपथ ग्रहण कराया गया। वैश्य मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहू ने केंद्रीय पदाधिकारियों एवं सदस्यों को समाज और संगठन के प्रति निष्ठा रखने एवं संघर्ष में समर्पित भाव से साथ देने की शपथ दिलाई। सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं जिलाध्यक्ष को निर्देश दिया गया कि 16 दिसंबर को अपने-अपने घरों, प्रतिष्ठानों में वैश्य मोर्चा का झंडा लगाकर झंडा लगाओ अभियान की शुरूआत करेंगे। यह भी तय किया गया कि सभी स्तर के पदाधिकारियों के लिए आगामी 22 दिसंबर को रांची में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहू ने कहा कि संविधान में वैश्य एवं पिछड़ों के समग्र विकास के लिए काफी प्रावधान किए गए हैं, लेकिन सरकार और प्रशासन द्वारा लगातार अनदेखी की जाती रही है। वैश्य मोर्चा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को अपने-अपने क्षेत्र में जुझारू आंदोलन शुरू करना होगा। अब उपेक्षा और जुल्म बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। इस अवसर पर शपथ ग्रहण करने वालों में कार्यकारी अध्यक्ष रेखा मंडल, हीरानाथ साहू, मोहन साव, वरीय उपाध्यक्ष अश्विनी कुमार साहू, रामसेवक प्रसाद, डॉ. माधवचंद्र मंडल, केंद्रीय उपाध्यक्ष योगेन्द्र प्रसाद, लक्ष्मण साहू, प्रमोद चौधरी, प्रधान महासचिव इंदुभूषण गुप्ता, उप-प्रधान महासचिव सह प्रवक्ता उपेन्द्र प्रसाद, अशोक गुप्ता, केंद्रीय महासचिव दिलीप प्रसाद, कपिल प्रसाद साहू, विष्णु मंडल, गजेंद्र केशरी, रामाशंकर राजन, शिव प्रसाद साहू, केंद्रीय सचिव ध्रुव साह, चतुर साहू, संगठन महासचिव कृष्णा प्रसाद साहू, अनिल वैश्य, केंद्रीय संगठन सचिव लखन अग्रवाल, जगदीश साहू, मीडिया प्रभारी राहुल कुमार साहू, केंद्रीय सदस्य नरेश साहू, संजय कुमार साहू, रांची जिलाध्यक्ष रोहित कुमार साहू, देवघर जिलाध्यक्ष राजकुमार बर्णवाल, महिला मोर्चा की अध्यक्ष रेणू देवी, कार्यकारी अध्यक्ष दीपारानी कुंज, युवा मोर्चा अध्यक्ष हलधर साहू, सचिव आदित्य पोद्दार, छात्र मोर्चा अध्यक्ष युवराज कुमार, मनोज चौरसिया, डॉ. युगेश प्रजापति, जितेन्द्र चौधरी आदि मुख्य रूप से शामिल थे।

बीआइटी मेसरा फैकल्टी क्रिकेट लीग में खेले गये तीन मैच

रांची। प्रो. सीताराम शर्मा मेमोरियल ट्रॉफी फैकल्टी क्रिकेट लीग का 13वां संस्करण बीआईटी मेसरा में चल रहा है। लीग में 8 दिसंबर, 2024 को तीन मैच खेले गए। आरसीपी और देवघर प्रीडेटर्स के बीच खेले गए मैच में आरसीपी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। आरसीपी ने 12 ओवर में 69 रन 6 विकेट खोकर बनाए। आलोक ने 25 रन बनाए। एनके सिंह ने 20 रन बनाए। देवघर की ओर से संजीव ने 2 विकेट लिए। जवाब में देवघर प्रीडेटर्स ने 10.13 ओवर में 73 रन 2 विकेट खोकर बनाए। रामकिशोर ने 21, उमेश ने 27 रन बनाए। देवघर 8 विकेट से विजयी रहा। मैन ऑफ द मैच रामकिशोर रहे। रॉयल एडमिन्स बनाम ईबीएस के मैच में टॉस जीतकर ईबीएस ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। ईबीएस ने 12 ओवर में 2 विकेट में 94 बनाएं। कार्तिक ने 39 नाबाद, दुर्गा ने 28 ने बनाएं। जवाब में आरएडी ने 12 ओवर 3 विकेट खोकर 88 रन बनाए। ईबीएस की ओर से सुब्रत ने 42, नंदलाल 30 रन बनाए और 3 विकेट लिए। ईबीएस 6 रन से जीता। मैन ऑफ द मैच सुब्रत रहे। एमएसडी और डीपी के बीच खेले मैच में टॉस जीतकर डीपी ने पहले फील्डिंग करने का फैसला किया। एमएसडी ने 3 विकेट खोकर 73 रन बनाएं। कादियान ने 24 और मुकेश ने 14 रन का योगदान दिया। देवघर की ओर से रामकिशोर ने 2 विकेट लिये। जवाब में देवघर ने 4 विकेट खोकर 76 रन बना लिये। सप्तऋषि ने 2 विकेट लिये। देवघर की ओर से आशुतोष ने 23 रन बनाये। देवघर 6 विकेट से जीता। मैन ऑफ द मैच आशुतोष रहे।

रातू : कोयला चोरी के आरोप में चार पर प्राथमिकी

▶▶ 4 बाइक में 10 टन कोयला जब्त

▶▶ पुलिस कर रही है जांच-पड़ताल

खबर मन्त्र संवाददाता

रातू। कोयला चोरी के मामले में शनिवार की सुबह तिलता ओवरब्रिज से पकड़े गये चार लोगों के खिलाफ सहायक अवर निरीक्षक उज्ज्वल कुमार सिंह के लिखित ब्यान पर रातू थाने में नामजद प्राथमिकी दर्ज की गयी है। आरोपियों में ठाकुरगांव सोबा के 35 वर्षीय मदन कुमार महतो, बुढ़मू उमेडंडा के 30 वर्षीय अमीन अंसारी व 24 वर्षीय कृष्ण कुमार साहू तथा मतवे का 31 वर्षीय जियाउल अंसारी शामिल हैं। इनके पास से मोटर साइकिल में लदे 10 टन चोरी का कोयला जब्त किया

गया है। थानेदार आरएन सिंह ने बताया कि सोमवार को इन्हें जेल भेज दिया जायेगा। उन्होंने जानकारी दी कि उज्ज्वल सिंह 7 दिसंबर की रात आर्म्स गार्ड के हवलदार चंद्रिका यादव, आरक्षी नवीन कुमार, उमेश महली व जीप चालक विकास कुमार के साथ गश्ती में काठीटांड़ चौक से झखराटांड़ की ओर जा रहे थे। सुबह 5 बजे स्वास्थ्य केन्द्र के पास पहुंचे, तो देखा कि झखराटाड़ की ओर से चार मोटरसाईकिल पर सवार युवक प्लास्टिक बोरी में कोयला लाद कमड़े की ओर जा रहे हैं। उन्हें रुकने का इशारा किया गया, लेकिन तेजी से आगे निकल गये। पीछाकर रोका और पूछताछ की। आरोपियों ने बताया कि अधजला कोयला लेकर वह उरीमारी से बेचने ला रहे हैं। उनसे कोयला और मोटर साइकिल के कागजात की मांग की गयी, किंतु नहीं दिखा पाये।पुलिस को कोयला और बाइक दोनों ही चोरी के होने की आशंका है। इसकी जांच की जा रही है।

कबड्डी देश की पहचान, इसे बढ़ावा देना जरूरी : संजय सेठ

खबर मन्त्र संवाददाता

सिकिदिरी। जनकल्याण समर्पण संस्थान खेल महोत्सव सिकिदिरी में रविवार को बालिका कबड्डी प्रतियोगिता में जेकेएसएस सिकिदिरी की टीम विजेता बनी। वहीं जसपुरिया जंबो की टीम उपविजेता रही। फुटबॉल टूनामेंट के क्वार्टर फाइनल में आतिश स्पोर्टिंग तुरुप की टीम ने पेनाल्टी शूटआउट में आरआर स्पोर्टिंग रांची को 3-1 से पराजीत किया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार आतिश स्पोर्टिंग तुरुप के गोलकीपर रितेश नायक को दिया गया। बालिका फुटबॉल में युवा सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन ने उलगुलान

एफसी रामगढ़ को 2-0 से पराजित किया। कंचन कुमारी को मैन ऑफ द मैच का पुरुस्कार दिया गया। दूसरे मैच में बेदिया ब्रदर्श ने सिंड्रेला एफसी ओरमांझी को 1-0 से पराजित किया। सिंड्रेला एफसी की साक्षी कुमारी को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री सह रांची सांसद संजय कबड्डी के विजेता खिलाड़ियों को पदक, ट्रॉफी एवं नगद पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन क्षेत्र के प्रतिभावान खिलाडियों को राष्ट्रीय स्तर में पहचान दिलाई है। कबड्डी भारत की पहचान है। इसे बढ़ावा देने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष राजकुमार राज व समाजसेवी रवि साहू उपस्थित थे। अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष सुजीत कुमार एवं संचालन कोषाध्यक्ष रमण कुमार व ब्रज किशोर प्रसाद ने किया।

स्पीड न्यूज

एक दिवसीय सुपर संडे फूटबॉल मैच का आयोजन

अनगड़ा । प्रखंड के गेतलसूद स्कूल मैदान में एक दिवसीय सुपर संडे फूटबॉल मैच का आयोजन न्यू एफसी गेतलसूद और केई के द्वारा किया गया। इस टूनार्मेंट में आठ टीम शामिल हुए। टूनीमेन्ट में गेतलसूद की टीम विजेता और लाघूप टोली की टीम उप विजेता रहा। मैन ऑफ दी सीरीज का पुरस्कार रवि नायक को दिया गया।स कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता जैलेंद्र कुमार और विशिष्ट अतिथि के रूप में जाकीर खान उपस्थित थे। इस मौके पर जैलेन्द्र कुमार ने ऐसे छोटे आयोजन पर समिति की सराहना की और कहा कि हुए युवाओं को खेल से शारीरिक फिटनेस के साथ साथ संस्कार भी सिखाता है। इस अवशर पर समिति के अध्यक्ष कार्तिक नायक सचिव धर्मवीर नायक किशन नायक अजय ठाकुर अनिकेत नायक आदि उपस्थित थे।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के खिलाफ डकरा में बैठक

खलारी। बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओ पर अत्यचार, हत्या, बहन बेटियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म को लेकर डकरा गायत्री मंदिर प्रांगण में भाजपा आरएसएस विश्वहिंदू परिषद सहित सर्व समाज का एक बैठक किया गया। बैठक में बांग्लादेश में मुस्लिमों के द्वारा हिन्दू अल्पसंख्यकों को टारगेट कर घर, ऑफिस, हिन्दू संस्थाओं पर तोड़फोड़, आवाज उठाने पर हत्या, बहन बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार के खिलाफ व सनातन के लोगो पर जघ्न अपराध के विरुद्ध तथा भारत देश के अतरिक्त अन्यदेशों के हिंदुओ की आवाज बनके साथ खड़े होने को लेकर 10 दिसंबर के दिन राँची मोरहाबादी मैदान राँची में आक्रोश मार्च में भारी से भारी संख्या में जाने का योजना बनी है साथ ही खलारी के सभी हिन्दुओ से आग्रह किया गया है अपनी अपनी व्यवस्था के साथ रांची पहुंचे अपनी आवाज बुलंद करने का निर्णय लिया गया।

चार वर्ष से फरार सजायफता गिरफ्तार

नामकुम। पुलिस ने थाना क्षेत्र के केतारीबगान के रहनेवाले अमीत कुमार शर्मा को गिरफतार कर जेल भेज दिया। थानेदार ब्रहमदेव प्रसाद ने बताया कि अमीत पर धोखाधडी करने का आरोप था, उसे न्ययालय ने चार वर्स पूर्व ही सजा सुनायी थी पर वह तभी से फरार चल रहा था। उन्हे गुप्त सूचना मिली थी कि अमीत अपने घर आया हुआ है। उसके बाद उन्होने उसके घर छापेमारी की और गिरफतार कर जेल भेज भेज दिया।

वाहन की चपेट में आने से ग्रामीण की मौत

पिस्कानगड़ी। विधानसभा थाना क्षेत्र के अंतगर्त नयासराय पुंदाग रोड में एक बोरिंग गाड़ी जिसका नंबर टीएन 88 डब्ल्यू 4887 की चपेट के आने से एक ग्रामीण की मौत हो गई। ग्रामीण की पहचान नयासराय कुटे निवासी अंतू बैठा उम्र 55 वर्ष के रूप में हुई। वह दोपहर में साइकिल से कहीं जा रहा था तभी बोरिंग गाड़ी ने उसे धक्का मार दिया जिससे उसकी वहीं मौत हो गई। घटना के बाद कुटे के ग्रामीणों ने गुस्से में आकर रोड जाम कर दिया।

बहेरा में अज्ञात अपराधियों ने पुल निर्माण में लगी मिक्सर मशीन में की तोड़फोड, धमकाया

साइट इंचार्ज को पर्चा दे बात करने के बाद काम चालू करने को कहा

खबर मन्त्र संवाददाता

पिपरवार। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के पिपरवार थाना अंतर्गत बहेरा कल्याणपुर मार्ग में विशेष प्रमंडल चतरा द्वारा बन रहे पुल निर्माण कार्य स्थल पर अज्ञात अपराधियों ने घावा बोलकर रोलर वाहन में की तोड़फोड़ एवं पुल निर्माण कार्य में लगे साइट इंचार्ज के साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया गया है । इस संबंध में उक्त गांव के ग्रामीणों ने बताया कि रविवार दोपहर 2.45 बजे तीन बाइक में

नौ की संख्या में आए अज्ञात अपराधी घटना को अंजाम देकर फरार हो गए । इधर उक्त पुल निर्माण कार्य की देखरेख मे लगे साइट इंचार्ज अभय सिंह ने बताया की तीन बाइक में सवार 9 की संख्या में आए अज्ञात अपराध कर्मी ने पुल निर्माण साइट पर आकर साइट इंचार्ज के साथ मारपीट एवं रोलर मशीन में तोड़फोड़ की घटना को अंजाम दिया और जाते जाते ऋषिकेश जी के नाम से पर्चा देकर कहा की जब तक बात नहीं हो जाती है तब तक पुल निर्माण का कार्य बंद करने को कहा गया इधर इस घटना की जानकारी मिलते ही पिपरवार थाना प्रभारी प्रशांत कुमार मिश्रा सदल बल घटनास्थल पर पहुंचकर आसपास के लोगों सहित साइट इंचार्ज से घटना की जानकारी ली इस संबंध में पिपरवार थाना में पुल निर्माण साइट मे तोड़फोड़ एवं मारपीट सहित काम बंद करने की धमकी से संबंधित प्राथमिकी साईट इंचार्ज द्वारा की दर्ज कराई गई है। इस घटना के बाद पिपरवार पुलिस प्रशासन द्वारा अपराधियों की गिरफ्तारी को ले छापामारी अभियान चलाया जा रहा है।

एक नजर में

बिवाहिता ने कीटनाशक खाकर देदी जान

मांडर। मिशन स्थित कोस्टेंट लिवन्स हॉस्पिटल मे रविवार को कीटनाशक दवा पिने से पंडरा बनहोरा निवासी 25 वर्षीय शालिनी टोप्पो की इलाज के दौरान मौत हो गई। शालिनी चान्हो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में नर्स का कार्य करती थी। शालिनी कांके थाना क्षेत्र के टंगरा टोली बाजार टांड़ निवासी सुनील टोप्पो की बेटी थी। शालिनी की शादी जनवरी 2022 में पंडरा बनहोरा निवासी रवि विकास तिर्की के साथ प्रेम विवाह हुई थी। शालिनी के परिजनों के

अनुसार उसके पति का अफेयर किसी अन्य लड़की के साथ चल रहा था, इसी बात को लेकर दोनों में बराबर विवाद होता रहता था। कुछ माह पूर्व इसी विवाद को सुलझाने को लेकर कांके स्थित उसके मायके में दोनों पक्षों की बैठक भी हुई थी। बेटी का घर बस जाए सोच कर घर वालों ने शालिनी को ससुराल भेज दिया था, जिसके बाद भी इस मसले का कोई हल नहीं निकल पाया था। अंत में तंग आकर उसने शनिवार की शाम चान्हो सीएचसी से ड्यूटी पूरा कर लौटने के क्रम में कीटनाशक पी ली और मांडर मरियम टोली स्थित अपने बहन के ससुराल गई और उसे अपने बैंक पासबुक, एटीएम और कुछ अन्य कागजात सौंपकर अपने जहर पीने की बात बताई। बातचीत के दौरान ही उसकी तबीयत जब ज्यादा बिगड़ने लगी तब उसकी बहन बहनोई उसे मांडर मिशन स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान रविवार को मौत हो गई।

कुंआ से मोटरसाइकिल के साथ शव बरामद

तमाड़। थाना क्षेत्र अंतर्गत कासम बुरुडीह के खेत के एक कुंआ से रविवार को तुम्मला गंगाधर राव (55) का शव पुलिस ने बरामद किया। मृतक आंध्रप्रदेश निवासी मधुकोन कंपनी का चौकीदार बताया जाता है। बताया जाता है की कंपनी में अन्य लोगो का खाना लाने के लिये प्रतिदिन की भांति शनिवार की देर शाम सलगाडीह चौक स्तिथ एक होटल गया था। मगर देर रात तक वह वापस नहीं लौटा। काफी खोजबीन के बाद भी उसका कही पता नहीं चला। एक अन्य चौकीदार पलटन मुंडा ने बताया सुबह ग्रामीणों ने उसका शव कासम बुरुडीह निवासी बुधु बैक के खेत के कुंआ में मोटरसाइकिल सहित उसके शव को देखा। इसकी जानकारी ग्रामीणों ने पुलिस को दी। पुलिस ने शव को कुंआ से बाहर निकाला और पोस्टमार्टम के लिये रिम्स भेजा। पुलिस ने बताया की हत्या की आशंका से मामले की जांच किया जा रहा है।

राहे में महिलाओं ने निकला कैंडल मार्च

राहे। प्रखंड के राहे में जेंडर आधारित हिंसा के खिलाफ जेएसएलपीएस के तत्वाधान में रविवार देर शाम जेंडर सीआरपी के नेतृत्व में महिलाओं ने कैंडल मार्च

निकाल कर महिलाओं पर हो रहे हिंसा के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया।सभी महिलाओं ने हाथ में कैंडल पकड़कर नारे लगाए"एक साथ एक आवाज,हिंसा के खिलाफ ₹ बेटियों को खेल कूद में छूट दो और उचित शिक्षा दो का नारे लगाए ।जिसमें मुख्य रूप से जेंडर सीआरपी प्रीति कुमारी,सुलोचना, निशु, राधिका देवी,सरोज देवी आदि मौजूद थी।

हाईवा से टक्कर के बाद ट्रक में लगी आग लोगों में अफरा तफरी मची

सिल्ली/मुरी। सिल्ली थाना अन्तर्गत मुरी गोला रोड लोदमू आम बगान के समीप आलू लदा ट्रक एवं हाईवा में जोरदार टकर हो गई जिससे ट्रक में आग लग गई और ट्रक जलने

लगा जिससे ग्रामीणों में अफरा तफरी मच गई वहीं ग्रामीणों ने इसकी सूचना सिल्ली थाना को दिया सूचना मिलती ही धटना स्थल पर पहुंचकर प्रशासन के द्वारा लोगों को गाड़ी के सामने से हटाया गया एवं हिंडालको दमकल को सूचना दिया गया मौके पर हिंडालको दमकल पहुंचकर आग पर काबू पाया। बताते चले कि लोदमू आम बगान के समीप कुछ दिन पहले एक ट्रक का एक्सल टुट गया था जिसके चलते रोड पर ही ट्रक खडा हो गया था कोलकाता से उड़ीसा जाने के क्रम में आलू लदा ट्रक के आगे हाईवे जिसमें लोहा आर्यन लोड था उसका ब्रेक फेल हो गया और सिधे जाकर हाईवा खड़ी हुई ट्रक को जाकर मारा उसके बाद पीछे से आ रही आलू लदा ट्रक अपना संतुलन खो बैठा एवं हाईवे में जोरदार टक्कर हुई टकराते ही ट्रक में आग लग गई देखते देखते ग्रामीणों का भीड़ इकट्ठा हो गई। प्रशासन के द्वारा तुरंत कार्रवाई करते हुए हिंडालको दमकल को बुलाया गया दमकल के द्वारा आग को बुझाया गया।

टोल प्लाजा के पास खड़ी ट्रक में लगी आग

▶▶ चालक ने कुदकर बचाई अपनी जान

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। थाना क्षेत्र के टोल प्लाजा के पास खड़ी एक ट्रक में आग लग गई। शनिवार रात 11 बजे हुई घटना के संबंध में बताया गया कि अचानक आग लगने के बाद ट्रक का अगला भाग धू-धूकर जलने लगा। जिससे आसपास अफरा-तफरी मच गई। टोल कर्मियों द्वारा इसकी सूचना ओरमांझी थाना पुलिस को दी। जिसके बाद पहुंची पुलिस द्वारा अग्निशमन विभाग से संपर्क किया। अग्निशमन विभाग की टीम द्वारा आग बुझाया गया, तबतक ट्रक का अगला भाग पूरी तरह जल चूका था। आग लगने का कारण सार्ट सर्किट बताया जा रहा है। आग लगने के बाद ट्रक में सोया चालक झुलसने लगा था, उसने जल्दी से ट्रक से बाहर कुद कर अपनी जा बचाई। चालक अजय

प्रसाद यादव के चेहरे व हाथ भी हल्का जल गया है। उसने बताया वह ट्रक संख्या सीजे04एलई-7523 में तेल लोडकर हजारीबाग गया था। खालीकर लौटने में देर हो गई। निंद आने लगी थी, इस लिए वह टोल पारकर रात में ट्रक खड़ी कर बैकिन में सो गया था। वह ट्रक में लगी चाबी निकालना भी भूल गया था। इसी से संभावना जताया जा रहा है कि सार्ट सर्किट होने से ट्रक में आग लग गई।

बिरसा जैविक उद्यान की शेरनी जया की मौत

▶▶ जैविक उद्यान में अब प्रियंका व शषंक बचे दो शेर

▶▶ किड्नी रोग से ग्रसित थी 22 दिन से चल रहा था उपचार

ओरमांझी। भगवान बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी की शेरनी जया की मौत रविवार को हो गई है। उसकी मौत के बाद अब जैविक उद्यान में दो शेर ही बचे हैं। बताया गया कि उसकी उम्र 15 वर्ष थी और वह वृद्ध हो गई थी, और किड्नी रोग से ग्रसित भी थी। पिछले 22 दिनों उसका उपचार पशु चिकित्सा महाविद्यालय रांची के विशेषज्ञों की सलाह पर जैविक उद्यान के चिकित्सक पदाधिकारी डॉ ओपी साहू द्वारा की जा रही था। बिरसा जैविक उद्यान ओरमांझी में अब 1644 वन पशु बचे हैं। जिनमें 711 पक्षी व बाकि साकाहारी व मांसाहारी पशु हैं। बताया गया कि शेरनी जया को गुजरात के शक्करबाग चिड़ियांघर जूनागढ़ से

रेस्कू कर लाया गया था। उसके मौत के बाद शव को तीन सदस्यीय पशु चिकित्सक के दल में शामिल पशु चिकित्सा महाविद्यालय रांची के एचओडी डॉ एमके गुप्ता, सहायक प्रध्यापक डॉ प्रज्ञा लकड़ व जैविक उद्यान के पशु चिकित्सा पदाधिकरी डॉ ओपी साहू के द्वारा पोस्टमार्टम करने के बाद जैविक उद्यान के पशु शवदाहगृह में जला दिया गया। वहीं उसके विभिन्न अंग के सैंपल व बिसरा सुरक्षित रख लिया गया है। जिसकी विस्तृत जांच के लिए पशु चिकित्सा महाविद्यालय रांची व विभिन्न संस्थानों में भेजा जाएगा। इसकी जानाकरी देते हुए जैविक उद्यान के निदेशक जबर सिंह ने बताया गुजरात के चिड़ियांघर से एक जोड़ा एशियाई शेर जल्द ही जैविक उद्यान ओरमांझी लाया जाएगा। इसके लिए गुजरात के वन विभाग से भी अनुरोध किया जा चूका है। कार्रवायी भी शुरू हो गई है। उम्मीद है सिघ्र ही दोनो एसियाई शेर जैविक उद्यान पहुंचेगें। इधर शेरनी जया की मौत पर उद्यान के पदाधिकरी व वन्य कर्मियों द्वारा दुख जताया गया है।

मौके पर जैविक उद्यान के निदेशक सह मुख्य वन संरक्षक जबर सिंह, सहायक वन संरक्षक अशोक कुमार, वनक्षेत्र पदाधिकरी रामबाबू कुमार, जीव विज्ञानी पार्थ सारथी, विवेकानंद कुमार, वनरक्षी राकेष अवस्थी, शशिभुषण कुमार, मुकेश कुमार, अमित कुमार, ब्रजेष कुमार सिंह, पशु चिकित्सक, पशुपालक व उद्यान कर्मी उपस्थित थें।

कपड़ा बैंक ने मासु गांव में जरूरतमंदों के बीच 300 कपड़ों व कंबल का किया वितरण

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। कपड़ा बैंक बेड़ो के अध्यक्ष कैलाश कुमार के नेतृत्व में रविवार को कपड़ा बैंक की टीम के द्वारा बेड़ो प्रखण्ड के मासु गांव में जरूरतमंदों के बीच 300 कपड़ों एवं कंबल का वितरण किया गया। कपड़ा बैंक के अध्यक्ष कैलाश कुमार ने कहा कि लगातार कपड़ा बैंक की टीम द्वारा क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जरुरतमंदों के बीच कपड़ों एवं कंबलों का वितरण किया जा रहा है। उन्होने कहा कि जो कपड़ा कुछ लोगों के लिए अनुपयोगी हो गया है। वही कपड़ा कुछ लोगों की जरूरत है। जीवन की मूलभूत

आवश्यकताओं में रोटी कपड़ा और मकान आते हैं। जिसमें मनुष्य के जीवन में कपड़ा का बहुत महत्व है। इसी को ध्यान में रखकर कपड़ा बैंक काम कर रही है। उन्होंने कहा कि जिस गांव में हमलोग कपड़ा वितरण करने जाते हैं,वहां कपड़ा कम पड़ जाता है। फिर भी हमलोगों का प्रयास रहता है कि सभी जरुरतमंदों को कपड़ा मिल जाये। जो भी व्यक्ति नए पुराने कपड़े और कंबल कपड़ा बैंक में देना चाहते हैं वो बेड़ो के विनय बगीचा स्थित डी ए वी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में जमा कर सकते हैं। वहीं मौके पर कैलाश कुमार, शक्ति साहू, मुकेश कुमार, सुनील कुमार, श्रवण कुमार, रवि केशरी व अनुज कुमार गुप्ता आदि मौजूद थे।

लेडी केसी रॉय स्कूल के गौरव ने किया गौरवान्वित

▶▶ पंजाब में कांस्य पदक जीत लहराया परचम

▶▶ झारखंड का किया प्रतिनिधित्व

▶▶ सरकार ने दिये 50 हजार पुरस्कार

रातू। लेडी केसी रॉय मेमोरियल स्कूल के गौरव कुमार ने पंजाब में आयोजित 24 वें सब जूनियर नेशनल वुशु चैंपियनशिप में राज्य स्तरीय टीम का प्रतिनिधित्व करते हुये कांस्य पदक जीत झारखंड का नाम रोशन किया है। इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश के हर राज्य की टीम ने भाग लिया। गौरव ने कई खिलाड़ियों को पछाड़ कर 48 किलोग्राम वर्ग में यह पदक हासिल

किया। उसे राज्य सरकार की ओर से 50 हजार का पुरस्कार दिया गया। उन्होंने सफलता का श्रेय विद्यालय, कोच और अपने माता-पिता दो दिया। गौरव ने बताया कि परिश्रम का कोई शॉर्टकॉर्ट नहीं होता। उन्होंने लेडी केसी रॉय मेमोरियल स्कूल के भारती रॉय स्पोर्ट्स फाउंडेशन को उभरते खिलाड़ियों के लिये गेमचेंजर बताया। स्कूल के अंश गोप भी झारखंड टीम के हिस्सा बने।

नया भूसूर में 8 दिसंबर को सरना झंडा गडी सह प्रार्थना सभा की छठीं वर्षगांठ आयोजित

आदिवासी समुदाय को एकजुट रहने के लिए प्रार्थना सभा जरूरी

▶▶ एक धर्मन्तरित परिवार को करायी गयी धर्म वापसी

खबर मन्त्र संवाददाता

नामकुम। रविवार को लालखटंगा पंचायत के नया भूसूर गांव में सरना प्रार्थना समिति के तत्वावधान में सरना स्थल में झंडा गढी की गयीं साथ ही प्रार्थना सभा की छठवीं वर्षगांठ मनायी गयी। मौके पर उपस्थित मुखिया पुष्पा तिर्की ने बताया कि झंडा गढ़ी सह प्रार्थना सभा के दिन विभिन्न गाँवों के आदिवासी समुदाय के बडी संख्या में महिला पुरुष डाड़ी झरना से कलश में जल और झंडा लेकर सरना स्थल पर पहुंचें हैं। जिसके

बाद आदिवासी पारंपरिक विधि विधान के साथ पाहन विशेष पूजा करवाते हैं और पुराने झंडा के स्थान पर नया झंडागड़ी की जाती है । इस दौरान कार्यक्रम में उपस्थित लोग प्रार्थना सभा का आयोजन कर गांव और क्षेत्र मे सुख शांति के लिये मां सरना से प्रार्थना करते हैं। श्रीमती तिर्की ने कहा कि यह आयोजन हम आदिवासी समुदाय की आस्था से जुड़ा हुआ है और पिछले छः वर्षों से नया भूसूर गाँव के सरना स्थल में हम विभिन्न गाँव के महतो, पाइनभोरा, मुंडा, कोटवार, सरना धर्म अगुवा इत्यादि हजारों लोग मिलकर इस कार्यक्रम को करते आ रहे हैं।

सरना धर्मावलंबी ने घर वापसी की

सरना प्रार्थना समिति के अध्यक्ष मीरा खालखो, कार्यकारी अध्यक्ष सुशीला उरांव एंव समाजसेवी रितेश उराँव ने बताया कि रविवार को आयोजित कार्यक्रम के दौरान गांव के एक परिवार ने घर वापसी की। उन्होने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व धर्मान्तरित भाडू टोप्पो ने ईसाई धर्म अपना लिया था, उन्होंने सरना प्रार्थना सभा कार्यक्रम में घर वापसी की। भाडू टोप्पो, उनकी पत्नी रदय टोप्पो, पुत्र तारा टोप्पो और पुत्री अनिसा टोप्पो को झिरगा पहान के द्वारा धर्म वापसी कराया गया।

कार्यक्रम में ये लोग रहे मौजूद

प्रार्थना समिति की अध्यक्ष मीरा खालखो, कार्यकारी अध्यक्ष सुशीला उरांव, समाजसेवी रितेश उराँव, राजेश टोप्पो, रवि टोप्पो, सोनू खलखो, नवीन उरांव, शांति कुजुर, शिला कच्छप, अमृत मुंडा, सहित बडी संख्या में महिला पुरूसो सहित भजन मंडली के लोग भी उपस्थित थे।

संडे वेतन नही मिलने पर यूनियन पदाधिकारियों ने मगध परियोजना के प्रबंधन का किया घेराव

गेट मीटिंग के माध्यम से प्रबंधक को चेताया, नही चेता तो परियोजना बंद

खबर मन्त्र संवाददाता

पिपरवार। मगध परियोजना प्रबंधन ने मजदूरों का संडे ड्यूटी दिसंबर माह का वेतन भुगतान नही किया। मगध प्रबंधन के द्वारा मजदूरों पर विश्वास घात करने पर सीटू यूनियन व श्रमिक संगठनों ने मजदूरों के हित पर आंदोलन फूका। परियोजना में आंदोलन तिब्र होते सारे यूनियन और मजदूरों को इक्कठा हुए। इसके बाद संगठित होकर संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में परियोजना कार्यालय पर गेट मीटिंग किया। गेट मीटिंग में प्रदीप सिंह व नेताओं ने कहा कि मगध परियोजना के प्रबंधन की मनमानी नहीं चलने देंगें। मगध

प्रबंधन को शर्म करनी चाहिए कि परियोजना 25 प्रतिशत उत्पादन का योगदान देता है। उसके बाद भी प्रबंधक मजदूरों का संडे ड्यूटी बंद कर रहा है। मजदूरों के साथ सरा-सर अन्नाय है। जब तक मजदूरों को संडे विधिगत नहीं मिलेगा तब तक हमारा आंदोलन लगातार जारी राहेगा। प्रति दिन सारे मजदूर अपने कार्य स्थल पर नारे बाजी करते रहेंगे, उसके वावजूद भी प्रबंधन नहीं चेती तो सभी श्रम संगठन मजदूरों के साथ एक होकर पुरा मगध परियोजना को बंद करा देंगे। मगध परियोजना में उत्पादन और प्रेषण नहीं होने दी जायेगी। गेट मीटिंग में गणेश जी, पंकज सिंह, जितेंद्र कुमार, राहुल कुमार सिंह, राजू गोप ने संबोधित किया। गेट मीटिंग में सैकड़ो मजदूर शामिल हुए।

एक दर्जन एटीएम कार्ड के साथ दो साइबर अपराधी पुलिस के हत्थे चढ़े

बाइक से पश्चिम बंगाल जा रहे थे रुपये निकासी करने

खबर मन्त्र संवाददाता

शिकारीपाड़ा। दुमका जिले के शिकारीपाड़ा थाना पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। बाइक से पश्चिम बंगाल की ओर जा रहे हैं दो साइबर अपराधी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। गिरफ्तार अपराधियों में सरफराज आलम और सिराज अंसारी है। ये दोनों देवघर जिला के सारठ थाना क्षेत्र के बरमसिया गांव के रहने वाले हैं।

गिरफ्तार अपराधी

पुलिस ने हॉरनेट बाइक के साथ शिकारीपाड़ा कॉलेज के सामने इन्हें पकड़ा और जब उनकी तलाशी ली गई तो एक दर्जन एटीएम कार्ड बरामद हुआ। खास बात यह है कि बरामद सभी एटीएम कार्ड कई लोगों के नाम से है। दरअसल ये दूसरों के बैंक खातों के एटीएम कार्ड अपने पास रखते और जब साइबर क्राइम से रुपये उड़ाते तो उन खातों में ट्रांसफर कर एटीएम के माध्यम से निकाल लेते। मामले में एसआई आनन्द हेम्ब्रम के बयान पर कांड संख्या 115/ 24 दर्ज किया गया। जिसमें साइबर अपराध से संबंधित धाराएं लगाई गई।

अब पुलिस इस बात की तहकीकात कर रही है कि इन दोनों के द्वारा किस तरह से साइबर अपराध को अंजाम दिया जा रहा था। साथ ही इन दोनों का मामलों में संलिप्तता है।

विधिक सेवाएं-सह- महिला सशक्तिकरण शिविर का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

तालझारी। तालझारी प्रखंड परिसर में रविवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में विधिक सेवाएं- सह मेगा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत सर्वप्रथम सत्र न्यायाधीश कमला कुमारी, बीडीओ पवन कुमार,एस आई अनिल कुमार एवं अमरेंद्र कुमार सिंह वकिल के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया।

सत्र न्यायाधीश कमला कुमारी के द्वारा संबोधित करते हुए विधिक सेवा प्राधिकार के विषय में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विधिक सेवाएं-सह मेगा सशक्तिकरण शिविर का आयोजन का मुख्य उद्देश्य होता है कि आम जनता को विधि रूप से सशक्त बनाया जाए । आपको आपके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए। आपको यह बताया जाए कि देश का कानून क्या है, आपकी इसमें किस तरह से भागीदारी हो सकती है और अगर आपको किसी विषय पर कानूनी सहायता की जरूरत है, तो इसके लिए हमारा जिला विधिक सेवा प्राधिकार दिन-रात कार्य कर रही है। आप अपने अधिकारों को समझे इसके प्रति जागरूक हो और किसी तरह की समस्या आने पर निःसंकोच जिला विधिक सेवा प्राधिकार में आए। वहीं बीडीओ पवन कुमार ने कहा कि इस शिविर का उद्देश्य है कि सरकार की जो भी महत्वाकांक्षी योजनाएं चलाई जा रही है और जिसकी जानकारी लोगों तक नहीं है। वैसे लोगों तक शिविर के माध्यम से यह जानकारी पहुंचाना ताकि समाज का अंतिम व्यक्ति उस योजना के प्रति अवगत हो सके और उसका लाभ उठा सके। शिविर में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल भी लगाया गया था। जहां संबंधित विभाग की ओर से संचालित योजना एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी जा रही थी। जिसका निरीक्षण सत्र न्यायाधीश, बीडीओ सहित अन्य पदाधिकारी ने निरीक्षण किया।

परिसंपत्तियों का हुआ वितरण : कार्यक्रम में परिसंपत्ति का वितरण किया गया जिनमें विभिन्न विभागों द्वारा योजनाओं का लाभ लाभार्थियों को दिया गया।जेएसएलपीएस के और से 42 सखी मंगल को 63 लाख का चेक, अबुआ आवास का प्रशस्ति पत्र, विद्यार्थियों के बीच साइकिलवितरण, धोती साड़ीवितरण एवं कंबल सहित अन्य विभागों के द्वारा लव को को लाभ दिया गया। मौके पर बीडीओ पवन कुमार, एसआई अनिल कुमार यादव, अमरेंद्र कुमार सिंह वकिल, अरूण कुमार ताती पीएलबी, अमरेंद्र कुमार ठाकुर, विश्वनाथ कुमार दास, सरीता मुर्मु सहित अन्य उपस्थित थे।

खेल से होगा युवाओं का चरित्र निर्माण : कुमार अमित

बोकारो। बोकारो के सेक्टर 3 हाई स्कूल मैदान में यूनिक क्लब द्वारा आयोजित फुटबॉल टूनामेंट में बोकारो चंदनकियारी धनबाद चंद्रपुरा और पुरूलिया के कुल दस टीमों ने हिस्सा लिया जिसमें फाइनल मैच चंदनकियारी बाधाडीह के अल्फा क्लब और पुरूलिया के उकमा क्लब के टीम के बीच खेला गया ।पुरूलिया की टीम ने बाधाडीह चंदनकियारी के टीम को 1-0 से पराजित कर इस टूनामेंट का खिताब जीता। मौके पर मुख्य अतिथि भाजपा नेता कुमार अमित ने विजेता और उपविजेता टीम के खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर सम्बोधित करते हुए कहा कि खेल से युवाओं में व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ चरित्र निर्माण भी होता है। अगर हर गाँव-मोहल्लों के खेल का बेहतर माहौल बने तो समाज में अपराधिक गतिविधियों में स्वतः कमी आ जाती है।

पूर्व प्रधानाध्यापक कि विदाई समारोह का आयोजन हुआ

खबर मन्त्र संवाददाता

साहिबगंज। मध्य विद्यालय के पूर्व प्रधानाध्यापक मनोज राय का विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन रविवार दिनांक 8 दिसंबर 2024 को मध्य विद्यालय तालाब साहिबगंज प्रांगण में आयोजित किया गया, कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य विद्यालय तालाब की प्रभारी सहायक शिक्षिका श्रीमती रूबी देवी ने की. मुख्य अतिथि के तौर पर राजमहल मॉडल कॉलेज के भू विज्ञान विभाग अध्यक्ष सह प्रिंसिपल डॉ रणजीत कुमार सिंह विशिष्ट अतिथि के तौर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष जंग बहादुर ओझा भिखारी साह प्रमंडलीय अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, मुख्य रूप से उपस्थित थे कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय गान एवं दीप प्रज्वलित करके किया गया। मंच का संचालन सहायक अध्यापक संघ के प्रदेश महासचिव विकास कुमार चौधरी ने किया। पूर्व प्रधानाध्यापक मनोज राय का अभिनंदन पत्र पढ़कर रानी झा सम्मान किया। कार्यक्रम को शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष प्रदीप कुमार ओझा मनोज यादव, माध्यमिक शिक्षक संघ के मुरलीधर रजक ने किया। विद्यालय परिवार की ओर से सहायक अध्यापक जितेंद्र कुमार जिला अध्यक्ष अशोक कुमार शाह, मंजू कुमारी, सुचित्रा कुमारी ने सेवानिवृत्ति प्रधान अध्यापक को सॉल्व बढ़कर एवं उपहार देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि डॉ रणजीत कुमार सिंह ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षक जो छात्र-छात्रा स्कूल या कॉलेज शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और शिक्षक सेवार्थ समाज और राष्ट्र के लिए तैयार करते हैं, एक शिक्षक आजीवन विद्यार्थी बने रहते हैं और शिक्षक कभी भी सेवा निवृत नहीं होते हैं वे समाज और राष्ट्र को शिक्षित करने में एवं राष्ट्रीय निर्माण में शिक्षक की भूमिका हमेशा से रही है और आगे भी रहेगी।

खेल से होगा युवाओं का चरित्र निर्माण : कुमार अमित

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। बोकारो के सेक्टर 3 हाई स्कूल मैदान में यूनिक क्लब द्वारा आयोजित फुटबॉल टूनामेंट में बोकारो चंदनकियारी धनबाद चंद्रपुरा और पुरूलिया के कुल दस टीमों ने हिस्सा लिया जिसमें फाइनल मैच चंदनकियारी बाधाडीह के अल्फा क्लब और पुरूलिया के उकमा क्लब के टीम के बीच खेला गया। पुरूलिया की टीम ने बाधाडीह चंदनकियारी के टीम को 1-0 से पराजित कर इस टूनामेंट का खिताब जीता। मौके पर मुख्य अतिथि भाजपा नेता कुमार अमित ने विजेता और उपविजेता टीम के खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर सम्बोधित करते हुए कहा कि खेल से युवाओं में व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ चरित्र निर्माण भी होता है।

अगर हर गाँव-मोहल्लों के खेल का बेहतर माहौल बने तो समाज में अपराधिक गतिविधियों में स्वतः कमी आ जाती है। टूनामेंट में रेफरी की भूमिका बीरू कुमार ने निभाई। इस अवसर पर टूनामेंट के मुख्य आयोजक नारू कालिन्दी विशिष्ट अतिथि अतुल सिंह जीतेन्द्र कालिन्दी बलराम कुमार विकास कालिन्दी चन्द्रप्रकाश खिरोड़ कालिन्दी दिनेश कालिन्दी के अलावे बड़ी संख्या में खिलाड़ी और दर्शक उपस्थित थे।

कसमार प्रखंड के खैराचातर, पिरगुल व मंजूरा में 2000 वर्गफुट दीवार में बनायी चित्रकारी

बोकारो/कसमार। झारखंड के मशहूर माटी चित्रकार महावीर शामी पिछले लगभग 45 दिनों से कसमार प्रखंड के खैराचातर में झारखंडी संस्कृति और राष्ट्रभक्ति की भावना से जुड़े चित्रों के माध्यम से राज्य और देश के संस्कृति को स्थापित करने में जुटे हुए हैं। महावीर शामी का लक्ष्य झारखंड के लगभग सभी 32640 गांवों में झारखंडी संस्कृति को अपने चित्रकारी के माध्यम से दशार्ने और स्थापित करने का लक्ष्य है। इसके लिए इन्होंने अपनी अच्छीखासी नौकरी छोड़ दी है और इस मुहिम में जुटे हुए हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि घर-परिवार छोड़कर महावीर शामी यह काम निशुल्क कर रहे हैं। पिछले करीब तीन साल से इस कार्य में लगातार जुटे हुए हैं और अब तक राज्य के 9 जिलों धनबाद, बोकारो गिरिडीह हजारीबाग रांची खूंटी रामगढ़ व सरायकेला-खरसावां के लगभग 120 गांवों में लगभग 35000 वर्ग फीट दीवार को झारखंडी संस्कृति से जुड़े चित्रों के माध्यम से रंग चुके हैं। खैराचातर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि चश्मा प्रखंड के खैर चटर पिटबुल और माजरा गांव में लगभग 2000 वर्ग फीट दीवाल को झारखंड के संस्कृति से रंग चुके हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 3000 गांवों से लोग चित्रकारी के लिए आमंत्रित कर चुके हैं।

पुलिस के ऊपर भरोशा है जल्द से जल्द अपराधी गिरफ्तार करने में सफल होंगी : कृष्णा

सात दिन बीत जाने के बाद भी हत्यारे पुलिस के हाथों कोषों दूर

खबर मन्त्र संवाददाता

साहिबगंज। दो दिसंबर दिन सोमवार की सुबह लगभग ग्यारह बजे थाना क्षेत्र के लालबन के पास तीनपहाड़ राजमहल पथ पर शालिग्राम मंडल को नाकापोश अपराधियों ने गोली मार कर हत्या कर देने का अंजाम दिया था। इसको लेकर बीते मंगलवार की दिन बाभनगामा सुभाष चौक पर परिजनों ने शव को रख सड़क जाम कर प्रशासन से हत्यारे की मांग किया था जिस पर प्रशासन ने 24 घंटे का अल्टीमिडम दिया था और प्रशासन द्वारा परिजनों को कहा गया था कि जल्द ही हत्यारे को गिरफ्तार कर लिया जाएगा परंतु सात दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस के हाथ हाथ अब भी खाली है। इधर पुलिस के द्वारा हत्यारे को गिरफ्तार नहीं किए जाने को लेकर बीते शनिवार की शाम तीनपहाड़ पुलिस को एक लिखित आवेदन दिया था जिसमें रविवार की दिन थाना में मृतक के परिजनों द्वारा आंदोलन करने की बात कहा गया था।

वही पूर्व निर्धारित समय के अनुसार रविवार की सुबह लगभग दस बजे मृतक के परिजन व ग्रामीण थाना के समक्ष नीचे जमीन पर बैठकर प्रशासन के खिलाफ जैसे प्रशाशन होश में आओ, न्याय दिलाओ न्याय दिलाओ, की नारा लगाते देखा गया। परिजनों का कहना है कि पुलिस हत्या के दिन 24घंटे में हत्यारे की गिरफ्तारी की बात कहा था पर सात दिन हो गए पुलिस अब तक हत्यारे को गिरफ्तार करने में असफल है। परिजन ने यह भी कहा कि या तो प्रशाशन को हत्यारे को गिरफ्तार न करने की दवाब दिया जा रहा है या फिर हत्यारे को गिरफ्तार करना नहीं चाहती है।

वही परिजनों ने प्रशासन पर ये भी आरोप लगाते देखा गया कि घटना की दिन पुलिस प्रशासन द्वारा क्षेत्र में कही भी जांच या नाकाबंदी नहीं लगाया गया था। अगर प्रशासन द्वारा क्षेत्र को शील कर ली जाती तो आज हत्यारे सलाखों के पीछे रहता। वहीं आंदोलन की सूचना पर राजमहल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने मोर्चा संभालते हुए आंदोलन कर रहे लोगों से कहा कि धैर्य रखे जल्द ही हत्यारे को गिरफ्तार कर ली जाएगी।

वही आंदोलन कर रहे परिजनों व लोगों से प्रशाशन ने आगामी 10 अक्टूबर तक मांगा समय कहा कि हत्यारे को गिरफ्तार कर लियाबजाएगा ।इसको लेकर मृतक के परिजनों ने कहा कि अगर हत्यारे की गिरफ्तारी 10 अक्टूबर तक नहीं होती है तब 11 अक्टूबर को पुनः आंदोलन किया जाएगा और रोड जाम किया जाएगा। इस संदर्भ में राजमहल डीएसपी विमलेश कुमार त्रिपाठी ने कहा कि जिला पुलिस प्रशाशन काफी तत्पर है कांड का उद्भेदन जल्द ही कर ली जाएगी। वही जिला परिषद रणधीर सिंह ने कहा कि राजमहल के वर्तमान अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बाहर गए हुए थे ओ आज आ गए है उन्होंने आश्वासन दिया है कि हमे थोड़ा समय दिया जाए, जल्द ही अपराधी को पकड़ लिया जायेगा ' धरना में बैठी भारतीय जनता पार्टी के महिला मोर्चा के सदस्या कृष्णा महतो ने कहि कि पुलिस के ऊपर हमलोगो का बिस्वास है ओ जल्द ही अपराधी को पकड़ने के कामयाब होंगी।

इस दौरान राजमहल पुलिस निरीक्षक श्याम लाल हांसदा, राजमहल थाना प्रभारी गुलाम सरवर,तालझारी थाना प्रभारी अमर मिंज, तीनपहाड़ थाना प्रभारी मो शारूख मौजूद थे।

स्पीड न्यूज

दिशोम मांझी थान में सोहराय पोरोब मनाया जायेगा 5 जनवरी को दुमका। दिशोम मांझी थान में दिशोम पाराणिक बिनीलाल टुडू के अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में सोहराय पोरोब – 2025 मनाने को लेकर दिन तय किया गया। बैठक में 5 जनवरी को अतांग दाराम दिशोम सोहराय पोरोब मनाने का निर्णय लिया गया। साथ ही सोहराय पोरोब को सफल बनाने के लिए सभी बिंदुओं पर बारी–बारी से चर्चा की गई। मौके पर दिशोम जोग मांझी मोहन टुडू, कुडाम नायकी ईमेल मरांडी, सुशील मरांडी, रामप्रशाद हांसदा, लव किशोर टुडू, प्रेम हांसदा, पिंकी बास्की, सुनील मरांडी, सोनेलाल मुर्मू, शिवकांत मुर्मू, संदीप मुर्मू, सनी बेसरा, रामकृष्णा टुडू, साहेबराम किस्कू, बसंत टुडू आदि मौजूद रहे।

जीरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के एक घर में हुई लाखों रुपए की चोरी

साहिबगंज। मामला जीरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के शांति नगर घोंघी का है जहां अज्ञात चोरों द्वारा मधु देवी पति अनिल सिंह के घर को चोरों ने अपना निशाना बनाया। रात के अंधेरे का फायदा उठाकर चोरों ने घर में घुसकर लाखों रुपए के जेवरात व नगद 50000 चोरी कर ली। जिसकी लिखित शिकायत मधु देवी ने पुलिस को दी है जिसमें बताई है कि मैं अपने निजी कार्य से मुंगेर जिले के कल्याणपुर ससुराल गई हुई थी। मेरे घर में कोई नहीं था घर खाली था जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने चोरी कर ली है। इसकी जानकारी मुझे पड़ोस के रहने वालों ने फोन पर दी है। इसके बाद मैं वहां से सुबह आकर देखी तो पाया कि मेरे घर का ताला टूटा हुआ है मेरे बक्से का ताला टूटा हुआ है सारा सामान बिखरा पड़ा है और मेरा गहना जेवर व नगद 50000 चोरी कर लिया गया है मधु देवी ने पुलिस प्रशासन से गुहार लगाई है कि मैं बेहद गरीब आदमी हूं। टोटो खरीदने के लिए पैसा रखी थी मुझे मेरा पैसा व गहना वापस दिलाया जाए।

पल्स पोलियो अभियान का उद्घाटन

तालझारी। बीडीओ पवन कुमार ने रविवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तालझारी परिसर में फीता काटकर कर बच्चों को पोलियो की खुराक पीलाकर कर पल्स पोलियो अभियान का उद्घाटन किया।मौके पर बीडीओ ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आज बूथ डे के अवसर पर कम से कम 70 प्रतिशत बच्चों को दवा पिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।इसके लिए आवश्यक है कि अपने नजदीकी बूथ पर जाकर जीरो से पांच वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलायी जाए। शेष दो दिन घर–घर जाकर बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है। मौके पर सभी स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

मीडिया प्रतिनिधियों का सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

साहिबगंज। जिला जनसंपर्क कार्यालय परिसर में आज विधानसभा आम चुनाव 2024 के परिपेक्ष्य मीडिया प्रतिनिधियों को सम्मानित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला प्रशासन साहेबगंज के तत्वावधान से विधानसभा आम चुनाव 2024 के परिपेक्ष्य जिला के सभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मिडिया के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया।

ट्रक की चपेट में आने से पति-पत्नी दोनों घायल

साहिबगंज। पीरपैंती अपने ससुराल से वापस बरहेट शिमडा अपने घर जा रहा था। जाने के क्रम में बोरियो थाना क्षेत्र के तेलो पंचायत के समेत ट्रक की चपेट में आने से दुर्घटनाग्रस्त हो गई जिसमें दोनों पति–पत्नी घायल हो गया वही उनके दोनों बच्चे सुरक्षित है। वही दुर्घटना होने से राजेश ठाकुर का दाहिना हाथ शरीर से अलग हो गया। वही पत्नी ज्योति देवी का हाथ टूट गया है। सूचना मिलते हैं बोरियो थाना के अरकप्रभा शंकर दुबे बालबाल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और घायल दोनों को अन्नान फानन में पुलिस की मदद से पुलिस गाड़ी में साहिबगंज जिले के सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका प्राथमिक उपचार कर हायर सेंटर रेफर कर दिया गया।

एक नजर में

डॉ बिनोद शर्मा एकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड से हुए सम्मानित

दुमका। एसपी कॉलेज के मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष सह मानसिक स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र के निदेशक डॉ विनोद कुमार शर्मा पटना में आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में सम्मानित हुए। सेमिनार एजुकेशनल डेवलपमेंट काउंसिल (ईडीसी), पटना एवं फातिमा डिग्री कॉलेज, गनपुरा, पटना के संयुक्त तत्वाधान में 7 दिसंबर से आयोजित थी। जिसमें डॉ शर्मा एकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित हुए। कॉलेज प्राचार्य डॉ खिरोधर प्रसाद यादव ने इस उपलब्धि के लिए डॉ शर्मा को बधाई एवं शुभकामनाएं दिया। शिक्षकों में डॉ शंभु कुमार सिंह, डॉ कुमार पीयूष, डॉ रवि शंकर कुमार, डॉ सौरभ कुमार आदि शिक्षकों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दिया।

तीन दिनों तक लावारिश पड़ी रही नि:शुल्क वितरण वाली कॉपियां

सरैयाहाट। कभी सरकारी स्कूलों में मिड डे मील, तो कभी पाठ्य पुस्तकों की बिक्री और अब स्कूलों में निःशुल्क वितरण के लिए कॉपियां को बेचने को लेकर सरैयाहाट बीआरसी सुर्खियों में है। पहले तो सिर्फ शिक्षक ही सवालों के घेरे में आ रहें थे लेकिन अब बीईओ वीणा रानी पर भी सवाल उठने लगे हैं। ऐसा इसलिए हुआ हैं क्योंकि प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी वीणा रानी के कार्यालय के ठीक सामने जब तीन दिनों तक निःशुल्क वितरण वाली कॉपियां लावारिश पड़ी थी तो बीईओ ने उसे जब्त करना भी मुनासिब नहीं समझा। ऐसा नहीं है कि इसकी जानकारी बीईओ को नहीं थी, जानकारी होने के बावजूद जब वे कॉपियां को सड़क किनारे से उठाना मुनासिब नहीं समझा तो देर शाम बीडीओ महेश्वरी प्रसाद यादव को इसकी जानकारी दी गई।

निर्मित ग्रेविटी सिंचाई डैम का निरीक्षण

साहिबगंज। जिला योजना पदाधिकारी अनूप कुमार ने साहिबगंज जिले के पंचायत भोगनाडीह स्थित माको डलवा गांव में लघु सिंचाई विभाग द्वारा निर्मित ग्रेविटी सिंचाई डैम का निरीक्षण किया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा प्रदान करना है, जिससे उनकी फसलों की उत्पादकता में वृद्धि हो सके। निरीक्षण के दौरान श्री कुमार ने कहा कि यह डैम क्षेत्र के किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी साबित होगा। इसके माध्यम से सिंचाई के लिए पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी, जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी।

बीएसएल में ठेका श्रमिकों के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस सिस्टम का शुभारम्भ

बोकारो। बोकारो इस्पात संयंत्र में विभिन्न ठेकेदारों के अंतर्गत कार्यरत ठेका श्रमिकों के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस सिस्टम लागू किया गया है। इस प्रणाली का उद्घाटन आज बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी द्वारा कोक ओवन एवं कोल केमिकल्स विभाग से किया गया। मौके पर विभाग में काम कर रहे लगभग 50 ठेका श्रमिकों ने बायोमेट्रिक उपकरण द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज की। कार्यक्रम में ईडी सीआर महापात्रा राजन प्रसाद सुश्री राजश्री बनर्जी सीजीएम एवं मानव संसाधन विभाग के अधिकारीगण उपस्थित थे। सीजीएम हरी मोहन झा ने पिछले कुछ समय में बीएसएल. द्वारा ठेका श्रमिकों के कल्याण की दिशा में उठाये गए कदमों के बारे में जानकारी दी।

उपायुक्त विजया जाधव, अंचलाधिकारियों की सुस्ती व लापरवाही पर हुई नाराज

बोकारो। जिले के विभिन्न अंचलों में भूमि के दाखिल खारिज से संबंधित मामलों के निष्पादन में अंचलाधिकारियों की सुस्ती एवं लापरवाही पर उपायुक्त विजया जाधव ने नाराजगी व्यक्त की है। इसे लेकर जिले के सभी 09 अंचलों के अंचलाधिकारियों उनके राजस्व उप निरीक्षक एवं अंचल निरीक्षकों से स्पष्टीकरण मांगा गया है। उपायुक्त द्वारा जारी पत्र में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि झारभूमि पोर्टल पर दाखिल खारिज के प्राप्त आवेदनों के निष्पादन की स्थिति की समीक्षा के क्रम में यह पाया गया है कि राजस्व उप निरीक्षक अंचल निरीक्षक एवं अंचल अधिकारी के द्वारा दाखिल खारिज के मामलों के निष्पादन में लापरवाही बरती जा रही है। पोर्टल पर कई आवेदन लंबित हैं जबकि कई आवेदनों को बिना किसी ठोस वजह के अस्वीकृत किया जा रहा है।

अधिवक्ता संध के चुनाव को लेकर चुनावी प्रक्रिया तेज

बेरमो। झारखंड राज्य विधिज्ञ परिषद रांची के आदेश के आलोक में अधिवक्ता संघ तेनुघाट का सत्र 2024/26 का चुनाव को लेकर शनिवार 7 दिसंबर को अध्यक्ष पद के लिए विजय किशोर गौतम, उपाध्यक्ष पद के लिए मोहितोष चक्रवर्ती, महासचिव पद के लिए वकील महतो, सहायक सचिव प्रशासन पद के लिए शंकर ठाकुर, कोषाध्यक्ष पद के लिए नरेन्द्र कुमार सिंह, सहायक कोषाध्यक्ष पद के लिए कुंदन कुमार ने नमांकन पत्र खरीदा। वहीं उपाध्यक्ष पद के लिए मोहितोष चक्रवर्ती, महासचिव पद के लिए वकील महतो, सहायक सचिव प्रशासन पद के लिए शंकर ठाकुर, कोषाध्यक्ष पद के लिए गणेश तिवारी ने अपने अपने नामांकन पत्र दाखिल किया।

सेल, झारखंड ग्रुप ऑफ माइंस के लिए 12वीं त्रिपक्षीय सुरक्षा बैठक सम्पन्न

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट-सेल के अंतर्गत झारखंड ग्रुप ऑफ माइंस के लिए महानिदेशालय खान सुरक्षा श्रमिक संघ के प्रतिनिधियों और सेल प्रबंधन के बीच 12वीं त्रिपक्षीय सुरक्षा बैठक एमटीआई रांची में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता साउथ ईस्टर्न जोन रांची के उपमहानिदेशक डॉ एसएस प्रसाद ने की। इस अवसर पर बोकारो स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी बीके तिवारी सहित विभिन्न क्षेत्रों के खनन विभाग के पदाधिकारीगण एवं सेल-बीएसएल टीम की ओर से ईडी सुश्री राजश्री बनर्जी आरपी सेल्वम मौजूद रहे।

बीएसएनएल के निदेशक की मौजूदगी में दूरसंचार सेवाओं पर हुई चर्चा

बोकारो। बोकारो समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में विभिन्न सरकारी व निजी टेलीकॉम कंपनियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिले में टेलीकॉम सेवाओं की गुणवत्ता पर विस्तृत चर्चा हुई। मौके पर संचार मंत्रालय भारत सरकार के निदेशक सुनील कुमार उपायुक्त विजया जाधव समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। जिले में टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर सैडो एरिया/नो कम्यूनिकेशन एरिया काल ड्रॉप आदि बिंदुओं पर चर्चा हुई। वहीं आकांक्षी जिला अंतर्गत 249 पंचायतों में से 109 पंचायतों में इंटरनेट सेवा कार्यरत है शेष पंचायतों में इंटरनेट सेवा काम नहीं कर रही है।

जानलेवा हमला के मामले में महिला समेत दो गिरफ्तार

बोकारो। पुलिस अधीक्षक ने एक वार्ता के दौरान बताया कि सेक्टर 12 थाना कांड संख्या 136/2024 दिनांक 01/12/2024 के तहत दर्ज प्राथमिकी के आलोक में नगर पुलिस उपाधीक्षक आलोक रंजन के नेतृत्व में पुलिस ने सेक्टर 2 निवासी वादी ललन सिंह के ऊपर गोली चलाकर जानलेवा हमला करने के आरोप में तकनीकी साक्ष्य एवं अन्य साक्ष्यों के आधार पर अभियुक्त रोशन कुमार उर्फ देव कुमार निवासी दुन्दीबाद झोपड़ी तथा पुष्पा देवी उर्फ सुपर देवी निवासी सेक्टर 12 को गिरफ्तार किया है। उनके पास से घटना में प्रयुक्त हथियार मोटरसाइकिल- जेएच09एजे 8642 एवं मोबाइल बरामद हुआ है।

खर्च में वृद्धि

अब देश में कुछ महत्वपूर्ण राज्यों में विधान सभा चुनावों एवं लोक सभा चुनाव के सम्पन्न होने के बाद केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अपने पूंजीगत खर्चों एवं सामान्य खर्चों में वृद्धि की जाएगी। साथ ही, भारत में त्यौहारी मौसम एवं शादियों के मौसम में भारतीय नागरिकों के खर्चों में अपार वृद्धि होने की सम्भावना है। त्यौहारी एवं शादियों का मौसम भी नवम्बर एवं दिसम्बर 2024 माह में प्रारम्भ हो चुका है। एक अनुमान के अनुसार नवम्बर माह में मनाए गए दीपावली एवं अन्य त्यौहारों पर भारतीय नागरिकों ने लगभग 5 लाख करोड़ रुपए से अधिक की राशि का व्यय किया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के जनवरी 2025 माह (13 जनवरी) में प्रयागराज में कुंभ मेला भी प्रारम्भ होने जा रहा है जो फरवरी 2025 माह (26 फरवरी) तक चलेगा। यह कुम्भ मेला प्रत्येक 12 वर्षों में एक बार प्रयागराज में लगता है। एक अनुमान के अनुसार इस कुम्भ मेले में प्रतिदिन एक करोड़ नागरिक पहुंच सकते हैं। इससे देश में धार्मिक पर्यटन में भी अपार वृद्धि होगी। उक्त सभी कारणों के चलते, भारत में उपभोक्ता खर्च में भारी भरकम वृद्धि दर्ज होगी जो अंततः सकल घरेलू उत्पाद में पर्याप्त वृद्धि को दर्ज करने के सहायक होगी। साथ ही, अक्टोबर 2024 माह में भारत से विविध उत्पादों एवं सेवा क्षेत्र के निर्यात में भी बहुत अच्छी वृद्धि दर दर्ज हुई है। इससे अंततः भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 7 प्रतिशत से ऊपर बने रहने की प्रबल सम्भावना बनती नजर आ रही है। साथ ही, भारतीय रिजर्व बैंक ने नकदी रिजर्व अनुपात में 50 आधार बिंदुओं की कमी करते हुए इसे 4.5 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। इससे 1.16 लाख करोड़ रुपए की राशि भारतीय रिजर्व बैंक से बैकों को प्राप्त होगी।

कार्टून वर्ल्ड

मेष : व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। घर में शुभ समाचारों का संचार होगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। शुभांक-6-7-9

वृष : यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। बुजुर्गों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति साथ रहेंगी। शुभांक-2-7-9

मिथुन : कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। होश में रहकर कार्य करें। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। आत्मीय श्रेष्ठता बनेगी। शुभांक-3-7-8

कर्क : राजकीय कार्यो से लाभ। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। श्रम साध्य कार्यो में सफल होंगे। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-4-8-9

सिंह : व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। शुभांक-3-6-9

कन्या : मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। शुभांक-4-5-9

तुला : यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार हैं। परिवारजनों का सहयोग बना रहेगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-7-9

वृश्चिक : मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यो से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-2-7-8

धनु : आय के योग बनेंगे। संतान की उन्नति के योग हैं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। आत्मचिंतन करें। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करे। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। शुभांक-3-6-9

मकर : अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। नये व्यावसायिक अनुबन्ध होंगे। 'आगे-आगे गौरख जागे' वाली कहावत चरितार्थ होगी। मेहमानों का आगमन होगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। शुभांक-4-6-8

कुंभ : जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। शुभांक-1-3-7

मीन : लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। विशिष्ट जनों से मुलाकात होगी। शुभांक-1-5-9

देश में मिलावट का कारोबार चरम पर

- बृजमोहन ओझा

> विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी या रासायनिक पदार्थों से युक्त असुरक्षित भोजन 200 से अधिक बीमारियों का कारण बनता है जिसमें डायरिया से लेकर कैंसर तक शामिल हैं। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में असुरक्षित भोजन के कारण चिकित्सा व्यय में हर साल 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने ईट राइट इंडिया अभियान के माध्यम से सभी भारतीयों के लिए सुरक्षित, स्वस्थ और पोषक भोजन सुनिश्चित करने के लिए देश की खाद्य प्रणाली को बदलने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास शुरू किया है। खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पड़कर स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें।

भारत में बढ़ती आबादी के कारण और मांग एवं आपूर्ति में अंतर के चलते प्रायः खाद्य वस्तुओं की किल्लत और दामों में बढ़ोत्तरी होती ही रहती है और इसी किल्लत का फायदा जमाखोरों की टोलियां उठाने से नहीं चूकती हैं, तो वहीं घटिया एवं मिलावटी चीजें बेचने वालों की पौ-बारह हो जाती है। भारत में इन दोनों तिरुमला तिरुपति देवस्थानम द्वारा श्रद्धालुओं को दिए जाने वाले लड्डुओं को मिलावटी देसी घी से बनाने से भक्तों की धार्मिक आस्था आहत होने का मुद्दा चर्चा में है। देवस्थानम को देसी घी की आपूर्तिकर्ता कंपनी एआर डेयरी फूड प्राइवेट लिमिटेड से खाद्य नियामक ने पूछा है कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक विनियमन 2011 के प्रावधानों के उल्लंघन के लिए उसका केंद्रीय लाइसेंस निलंबित क्यों न कर दिया जाए?

आज भारत में मिलावट का कारोबार उस स्तर को पार कर चुका है जहां खाद्य उत्पादों में सस्ते और घटिया पदार्थ मिलाकर बेईमान व्यापारी व विक्रेता सामान की मात्रा को बढ़ा देते हैं और भारतीयों की जान की कीमत पर भारी मुनाफा कमाते हैं। ऐसा अनुमान है कि 60 करोड़ लोग अर्थात विश्व में लगभग 10 में से 1 व्यक्ति हर वर्ष दूषित भोजन खाने के कारण बीमार पड़ते हैं तथा 420000 लोग मरते हैं।

भारत में दूध और डेयरी उत्पाद, वसा और तेल, फल और सब्जियां, अनाज, कॉफी, चाय, शहद और मसाले सहित लगभग हर खाद्य सामग्री में मिलावट का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ गया है और स्वच्छता मानकों की बुरी तरह से अनदेखी हो रही है। इतना ही नहीं, भारत के कई क्षेत्रों से ऐसे भी वीडियो की सोशल मीडिया में भरमार है जिसमें समोसे, चाट, ब्रेड, कुल्फी, प्लास्टिक के चावल और गुलाब जामुन से भरी कड़ाही में पेशाब करते युवक और गोलगप्पे वाले जलजीरा पानी से ही हाथ मुंह धोने, गंदे हाथ व पैरों से आलू और आटा गूंथने जैसे कृत्यों द्वारा गंदगी से परिपूर्ण खाद्य सामग्री आम लोगों को परोसी जा रही है। ऐसे कृत्य न केवल निंदनीय हैं अपितु दोषी लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग भी करते हैं।

सवाल उठता है कि आखिर ऐसी गतिविधियों में संलिप्त लोगों को तत्काल जेल की सलाखों के पीछे क्यों नहीं डाला जाता है? विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी या रासायनिक पदार्थों से युक्त असुरक्षित भोजन 200 से अधिक बीमारियों का कारण बनता है जिसमें डायरिया से लेकर कैंसर तक शामिल हैं। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में असुरक्षित भोजन के कारण चिकित्सा व्यय में हर साल 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक डा. क्‌ डोंग्यू के अनुसार, ह्यहमें अपने भोजन की पहचान, गुणवत्ता और सुरक्षा पर एक आम समझ की जरूरत है। लेकिन भारत में दूध में पानी मिलाने, नकली दूध, घी में केमिकल, दाल में सिंथेटिक रंग और वैक्स कोटिंग, सब्जियों में हॉर्मोन के इंजेक्शन तथा सिंथेटिक रंग, हर्बल उत्पादों में एलोपैथिक दवाइयां तथा केमिकल्स, सौंदर्य प्रसाधनों में और देसी घी बनाने में पशुओं की चर्बी होने की जानकारी किसी से छुपी हुई नहीं है। खाद्य अपमिश्रण से आखों की रोशनी जाना, हृदय संबंधित रोग, लीवर खराब होना, कुष्ठ रोग, आहार तंत्र के रोग, पक्षाघात व कैंसर जैसे असाध्य रोग हो सकते हैं।

मिलावटी और बासी खाद्य पदार्थों से निपटने के लिए केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से 37 लाख रुपे की मोबाइल फूड सेफ्टी वैन भी मिली है।

खाद्य अपमिश्रण के परीक्षण के लिए मैसूर, पुणे, गाजियाबाद एवं कोलकाता में भारत सरकार द्वारा चार केन्द्रीय प्रयोगशालाएं व्यवस्थित रूप से स्थापित की गई हैं। खाद्य अपमिश्रण एवं रेहड़ी फड़ी वालों द्वारा लोगों को गंदा और घटिया खाने-पीने की वस्तुएं बेचने से आगाह करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा ईट राइट इंडिया मूवमेंट की पहल की गई है।

ईट राइट मूवमेंट अभियान तीन प्रमुख विषयों पर आधारित है- सुरक्षित खाएं, व्यक्तिगत और आसपास की स्वच्छता सुनिश्चित करें, स्वस्थ खाएं, आहार विविधता और संतुलित आहार को बढ़ावा दें एवं स्थानीय और मौसमी सब्जियों/भोजन को बढ़ावा दें, भोजन के नुकसान को रोकें।

खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पड़कर स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें। भारत के कई क्षेत्रों से ऐसे भी वीडियो की सोशल मीडिया में भरमार है जिसमें समोसे, चाट, ब्रेड, कुल्फी, प्लास्टिक के चावल और गुलाब जामुन से भरी कड़ाही में पेशाब करते युवक और गोलगप्पे वाले जलजीरा पानी से ही हाथ मुंह धोने, गंदे हाथ व पैरों से आलू और आटा गूंथने जैसे कृत्यों द्वारा गंदगी से परिपूर्ण खाद्य सामग्री आम लोगों को परोसी जा रही है। ऐसे कृत्य न केवल निंदनीय हैं केवल अतिरिक्त सतर्कता और जागरूकता का पालन करने से ही हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपमिश्रित एवं गंदी खाद्य सामग्री बेचने वालों के कुत्सित इरादों को परास्त कर सकते हैं।

लेटर टू एडिटर

न्याय की तार्किकता

सत्तारूढ़ बीजेपी सरकारों द्वारा गंभीर अपराधों, अनधिकृत कब्जों के खिलाफ पीला पंजा इस्तेमाल कर मकानों को गिराने की नीति के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिशा-निर्देश जारी करने पर चर्चा करने वाला था। अपराध साबित होने से पहले किसी का मकान गिराना उसके पूरे परिवार से अन्याय है, अगर बाद में व्यक्ति बेकसूर साबित हो जाए तो इसकी क्षतिपूर्ति कौन करेगा। कई बार देखा गया है कि बुलडोजर की कार्रवाई समाज के एक वर्ग विशेष के लोगों के खिलाफ ही की जाती है। बुलडोजरी न्याय पर प्रतिबंध, जनहित में न्याय संगत तथा काबिलेतारीफ है।

-अनिल कौशिक, रांची

गरिमापूर्ण जीवन

सुप्रीम कोर्ट का आदेश जेलों में जाति के आधार पर काम के बंटवारे में सुधार लाने के लिए ऐतिहासिक और स्वागतयोग्य है। यह अंग्रेजी शासन की बर्बरता को समाप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

-ईश्वर गर्ग, हजारीबाग

ट्वीट

आप सभी पोषण सखी बहनों का हृदय से आभार!

आपके चेहरों पर खिली यह मुस्कान ही हमारी असली ताकत है। यही मुस्कान हमें हिम्मत देती है, प्रेरणा देती है, और यह विश्वास दिलाती है कि हम सही दिशा में हैं।

आपके बेहतर भविष्य के लिए, आपके अधिकारों की रक्षा के लिए, और आपके सपनों को साकार करने के लिए हम पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ काम करते रहेंगे।

आप और हम मिलकर झारखण्ड को एक सुखी, संपन्न और आत्मनिर्भर राज्य बनाएंगे।

जोहार!

- कल्पना मुर्मू सोरेन, विधायक

पंचायती राज के माध्यम से राजीव और सोनिया के सपने को पूरा करना ही उदेश्य

राजनीति

राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुनीत शर्मा ने एफ. एन. नीलेश को संगठन के प्रदेश महासचिव नियुक्त किया है। यह जानकारी संगठन की ओर से दी गई। महासचिव नियुक्त किए जाने के उपलक्ष्य श्री नीलेश ने अध्यक्ष सुनीत शर्मा को आभार व्यक्त किया और कहा कि संगठन ने उन्हें गुरूतर दायित्व दिया है और संगठन ने जो उनके ऊपर विश्वास व्यक्त किया उस पर खरा उतरने की कोशिश करूंगा और संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संगठन के अन्य अधिकारियों से मिलकर प्रयास करूंगा।

एफ एन निलेश ने खबर मन्त्र को एक विशेष इंटरव्यू में पंचायती राज के महत्व और इस दिशा में संगठन के प्रयासके बारे में विस्तार से बातचीत की। उन्होंने बताया कि देश की आजादी के बाद पूरे भारत में पंचायती राज प्रणाली लागू थी। देश के पाँचवीं अनुसूची वाले आदिवासी इलाकों में थी वही सामान्य कानून ही लागू थी जिससे उनकी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था लुप्तप्राय होने की स्थिति में पहुँच गयी थी। उनकी यही विशिष्ट पहचान को बचाने हेतू संविधान में 79वाँ संशोधन किया गया। यह संविधान का 73वाँ संशोधन अधिनियम 1992 पंचायतों को स्वशासी संस्था के रूप में काम करने में सक्षम बनाने के लिए कुछ शक्तियाँ और अधिकार देता है। इसी के आलोक में आदिवासी बहुल इलाकों में पंचायती राज के विस्तार पर अध्ययन करने के लिए एक संसदीय समिति बनायी गयी जिसे भूरिया समिति कहा जाता है जिसने 17 जनवरी, 1995 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

भूरिया समिति की सिफारिश के बाद संसद ने पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों में विस्तार) अधिनियम 1996 को अनुसूचित क्षेत्रों के लिए पारित किया। झारखण्ड राज्य का 259 प्रखंडों में से 134 प्रखंड पांचवीं अनुसूची क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। झारखण्ड राज्य में झारखण्ड पंचायत राज विधेयक 2001, 30 मार्च 2001 को विधान सभा में पारित हो गया और अब यह कानून बन गया है। इस कानून के तहत अब राज्य में पंचायत चुनाव होंगे। अनुसूचित क्षेत्रों और गैर अनुसूचित क्षेत्रों में अलग-अलग कानून होंगे और अलग-अलग तरीके से पंचायती राज चलेगा।

19वीं सदी में ब्रिटिश भारत बंगाल प्रेसीडेंसी के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित छोटानागपुर पठार पर औपनिवेशिक प्रशासन ने स्थानीय स्वदेशी (आदिवासी) आबादी पर पारंपरिक सरदारों के माध्यम से सत्ता का प्रयोग करने में कामयाबी हासिल की, जिन्हें नागरिक न्याय का प्रशासन करने, सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने और प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करने के लिए सह-चुना गया था। इन अधिकारों और दायित्वों को हुकुमनामा [अधिकारों के अभिलेख] के माध्यम से निर्धारित किया गया था और सरदार ब्रिटिश प्रशासन द्वारा सीधे भुगतान किए जाने वाले वेतन के बदले अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे। इसलिए अंग्रेजों ने पहले से मौजूद स्थानीय सत्ता संरचनाओं के माध्यम से भूमि को नियंत्रित किया और अपने वेतन पर पारंपरिक सरदारों को रखते हुए, उन्होंने उन नेताओं को नियुक्त करने और हटाने का अधिकार दावा करना शुरू कर दिया जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते थे या बस ब्रिटिश प्रशासन के प्रति वफादार नहीं थे। ऐसा करके, वे न केवल दिन-प्रतिदिन के प्रशासन की लागतों को बचाने में कामयाब रहे, बल्कि आबादी की नजर में स्थानीय परंपराओं के चैंपियन भी बन गए क्योंकि उन्होंने पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को 'संरक्षित' किया और क्षेत्र पर अपनी उपस्थिति को व्यापक बनाया।

एफ एन नीलेश के अध्यक्ष नियुक्त होने पर पंचायती राज के महानगर अध्यक्ष अंजनी रंजन ,त्रिभुवन कुमार, विशाल , अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के अध्यक्ष रितेश कुमार, विक्की कुमार, अमित सत्यार्थी ,पूनम सिन्हा , उज्ज्वल अग्रवाल , भूश्रेष्ठ महतो एवं काफी संख्य में अधिवक्ताओं ने बधाई दी। एफ एन निलेश ने प्रदेश अध्यक्ष सुनील शर्मा को इसके लिये धन्यवाद देते हुए कहा कि संगठन की मजबूती ही उनका पहला और अंतिम उदेश्य होगा।

कॉस्ट ऑडिट क्यों आवश्यक है ?

आर्थिक

अजयदीप बाधवा

आज भारत समेत पूरे विश्व में कई प्रकार की ऑडिट को अनावश्यक समझा जा रहा है। भारत में भी कॉस्ट अकाउंटेंट या चार्टर्ड अकाउंटेंट जैसे विशेषज्ञों से होने वाले जीएसटी ऑडिट को रोक दिया गया है। ऐसे में एक प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि कॉस्ट ऑडिट क्या है और इसकी क्या आवश्यकता है?

कॉस्ट ऑडिट की आवश्यकता समझने के पहले हम सब इसको करने का कारण जान लें। जैसा कि हम सब जानते हैं कि किसी भी वस्तु के मूल्य में दो आवश्यक घटक शामिल होते है; एक, उस वस्तु को बनाने की लागत और दूसरी, उस वस्तु को बनाने एवं बेचने वालों का लाभ। वैसे मूल्य में कर (जीएसटी) भी शामिल होता है, पर यह लागत में शामिल कर लिया जाता है और फिर ये निमार्ता या विक्रेता के नियंत्रण में भी नहीं होता, बल्कि इसकी दर सरकार के नियंत्रण में होती है। अगर हम यह चाहते हैं कि वस्तु का मूल्य न बढ़े तो हमें इसकी लागत पर नियंत्रण रखना होगा। अगर लागत बढ़ेगी तो हमें मूल्य भी बढ़ाने होंगे अन्यथा हमारा लाभ कम हो जाएगा और कोई भी व्यवसाई बिना लाभ के व्यवसाय नहीं करेगा और किसी भी वस्तु का निर्माण नहीं करेगा। हमें यह भी ज्ञात है कि लागत के अधिकांश भाग को नियंत्रण में किया जा सकता है; या तो उसे कम कर के या यह सुनिश्चित करके कि वह न बढ़े।

इस संबंध में हम चीन का उदाहरण ले सकते हैं। आज से लगभग 40 वर्ष पूर्व भारत और चीन की अर्थव्यवस्था लगभग समान थी पर आज वह हम से चार गुनी बढ़ी है। पिछले तीन दशकों में चीन ने स्वयं को विश्व की निमार्ता फैक्ट्री के रूप में स्थापित कर लिया। आज हमारी उपभोग की अधिकांश वस्तुएं चीन में निर्मित होती हैं क्योंकि उनकी निर्माण लागत कम है, फलतः उनके मूल्य भी कम हैं। चीन ने अपने कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ाकर और निर्माण की सामग्री की बबार्दी घटा कर कुल लागत को नियंत्रण किया और पूरे विश्व को अपनी सस्ती निर्मित वस्तुओं का निर्यात कर अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया।

भारत भी ऐसा करने की चेष्टा कर रहा है और यही पर कॉस्ट ऑडिट की अत्यंत आवश्यकता है। कॉस्ट ऑडिट के अंतर्गत वस्तु के निर्माण या उत्पादन में होने वाली हर लागत को सिलसिले वार ढंग से लिखा जाता है और फिर उसका विस्तार से अध्ययन किया जाता है। एक कंपनी के दो पीरियड के लागत को या एक कंपनी की लागत को दूसरी कंपनी की लागत के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। साथ ही कई कॉस्ट अकाउंटिंग तकनीकों, जैसे बजट व बजटरी नियंत्रण, कॉस्ट बेनिफिट एनालिसिस, मार्जिनल कास्टिंग, स्टैंडर्ड कास्टिंग, ब्रेक इवेन प्वाइंट आदि , का प्रयोग कर अनुत्पादक लागत की पहचान की जाती है और उसे कम करने का प्रयास किया जाता है। अनुभव बताता है कि ऐसा करने से निर्माण लागत को नियंत्रण में किया जा सकता है। लागत को कम करने का कॉस्ट ऑडिट ही एक मात्र अचूक उपाय है।

कॉस्ट ऑडिट के दौरान कॉस्ट अकाउंटेंट यह सुनिश्चित करता है कि कंपनी अपनी लागत को नियंत्रित करने के लगातार और सिलसिलेवार कोशिश कर रही है। अगर इस प्रक्रिया में उसे कोई कमी नजर आती है तो वो उसे अपनी रिपोर्ट में हाइलाइट करता है। भारत में वर्तमान में मात्र 33 उद्योगों में कॉस्ट ऑडिट आवश्यक है। पर भारत सरकार को अगर अपने मेक इन इंडिया कार्यक्रम सफल बनाना है तो उसे कॉस्ट ऑडिट करवाना हर कंपनी में लागू करना चाहिएं। इस से कंपनी की उत्पादन लागत व इसके उत्पाद का मूल्य कम होगा। इस से उत्पाद ज्यादा लोगों की क्रय शक्ति के अंदर होगा व इस से इसका विक्रय बढ़ेगा और लोगों का जीवन स्तर भी बढ़ेगा। विक्रय बढ़ने से उत्पादन लागत में भी और कमी आएगी। दूसरी ओर विक्रय बढ़ने से कंपनी का लाभ बढ़ेगा और कंपनियां अधिक लोगों को रोजगार और सरकार को अधिक राजस्व भी दे पायेगी। आज जब हम विकसित भारत 2047 की ओर कदम उठा रहे हैं, वैसे समय सभी उद्योगों में इसे आवश्यक करना राष्ट्र हित में बेहद आवश्यक है। **(कॉस्ट अकाउंटेंट, कर सलाहकार, रांची)**

कुजू के आस-पास अवैध बालू का कारोबार धड़ल्ले से जारी

एसडीओ ने एक ट्रैक्टर किया जब्त

खबर मन्त्र संवाददाता

कुजू। कुजू व आस-पास के क्षेत्रों में एक बार फिर से अवैध बालू का धंधा जोरों से जारी है। अवैध बालू की ढुलाई में क्षेत्र के कई जनप्रतिनिधि भी शामिल है। हालांकि बीच-बीच में एसडीओ, आरटीओ के द्वारा अवैध बालू से लदे ट्रैक्टरों को पकड़ा भी गया। पकड़े गये ट्रैक्टरों के बाद मालिक के उपर मामला दर्ज भी हुआ, लेकिन फिर भी उनके द्वारा अवैध रूप से बालू की ढुलाई कर खूब चांदी काट रहे है।

रात में होती ढुलाई : अवैध कारोबारियों द्वारा बालू का ढुलाई रात के अंधेरे में किया जाता है। रात के अंधेरे में ट्रैक्टरों में बोकारो जिला के ललपनिया नदी व रामगढ़ जिला के दामोदर नदी व गिद्दी के कुरकुट्टा, मोढ़ा के पास नदी से बालू लोडकर रात करीब 12 से 1 बजे के बीच अपने स्टॉक यार्ड पर गिराते है। इसके बाद सुबह होते ही उसको बेच दिया जाता है। अवैध बालू की ढुलाई को लेकर उनके उपर मामला दर्ज भी हो चुका है। लेकिन फिर वह बेखौफ होकर कार्य करते जा रहे है। अवैध बालू को ट्रैक्टर के माध्यम से रात के अंधेरे में अलग-अलग क्षेत्र के नदियों से बालू लाकर अपने स्टॉक पर जमा करते है। साथ ही अहले सुबह 3 बजे के आस-पास ट्रैक्टरों के माध्यम से बेच दिया जाता है।

इस बीच ग्रामीणों का शिकायत है कि कुंदरियाबांध स्थित झरना टाड़ के पास बालू यार्ड में रात्रि में लगातार बालू गिराने के कारण वह चैन से सो नहीं पा रहे है। रात्रि 12 बजे से लेकर सुबह 6 बजे ट्रैक्ट्ररों के लगातार आवागन से काफी शोर होते रहता है। ऐसे में हमारा सोना भी दुर्भर हो गया है। जन प्रतिनिधि द्वारा बालू गिराये जाने पर हम कुछ बोल भी नहीं सकते है। इसके अलावे नयामोड़ से गिद्दी जाने वाले मेहता चौक के पीछे जंगल में भी अवैध रूप से बालू यार्ड बनाकर बालू को बेचा जा रहा है।

एसडीओ अनुराग कुमार तिवारी ने पुलिस के साथ मिलकर शनिवार को छापामारी की। पैंकी नदी से बाल लोड कर रहे एक ट्रैक्टर को पकड़ा। पुलिस ने ट्रैक्टर मालिक व चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया।

परिश्रम ही सफलता की कुंजी :आशीष वर्मा

सेल्फ स्पेस लाइब्रेरी के प्रति बढ़ रहा है छात्रों का विश्वास

खबर मन्त्र संवाददाता

भुरकुंडा (रामगढ़)। पटेलनगर भुरकुंडा स्थित एसबीआई बैंक के समीप थर्ड प्लोर पर खुले सेल्फ स्पेस लाइब्रेरी के प्रति छात्र-छात्राओं का विश्वास बढ़ता जा रहा है। यहां पर अध्ययरत विद्यार्थी यह महससू कर रहे हैं कि लक्ष्य का निर्धारण कर तैयारी की जाये तो सफलता जरूरी मिलेगी। सेल्फ स्पेस लाइब्रेरी के प्रोपराइटर राहुल वर्मा, सतीश वर्मा व आशीष वर्मा ने बताया कि इस लाइब्रेरी में विद्यार्थियों के लिए मैग्जीन, न्यूज पेपर, विभिन्न प्रकार के किताब, इंटरनेट आदि की सुविधाओं के साथ-साथ बच्चों के पढ़ाई से संबंधित हर जरूरतों का ख्याल रखा जायेगा। छात्र-छात्राओं को पठन-पाठन में कोई दिक्कत नहीं होने दी जायेगी। उन्होंने कहा कि भुरकुंडा कोयलांचल में इस तरह की व्यवस्था पहले नहीं थीं, लेकिन अब यहां लाइब्रेरी खुलने से शिक्षा के क्षेत्र में यह बहुत लाभदायक सिद्ध होगा।

आशीष वर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों की सुविधाओं का इस लाइब्रेरी में पुरा ख्याल रखा जा रहा है। विद्यार्थियों की संतुष्टि ही हमारे संस्था का उद्देश्य भी है। उन्होंने कहा कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी होती है। परिश्रम के बल पर हर मुकाम को पाया जा सकता है।

सीएनजी बाइक लॉन्च

रामगढ़ । विश्व की पहली सीएनजी बाइक बजाज कंपनी ने लॉन्च की है। रामगढ़ शहर के वॉल्कन बाजार शोरूम में रविवार को एसपी अजय कुमार ने पल्सर एन-25 के नए मॉडल को लॉन्च किया। इस दौरान उन्होंने कंपनी और शोरूम के कर्मियों को बधाई दी। एसपी ने कहा कि ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण की वजह से हमारा समाज बीमार हो रहा है। सीएनजी बाइक इन सब प्रदूषण को तो दूर करेगी ही। एसपी ने बताया कि पूरी दुनिया अब कृत्रिम चीजों से हटकर प्राकृतिक चीजों पर निर्भर हो रही है। पहले थ्री व्हीलर और फोर व्हीलर में सीएनजी का इस्तेमाल होता था। लेकिन अब टू व्हीलर भी सीएनजी के साथ सुरक्षित साबित होगा। उन्होंने बताया कि कंपनी का यह बेहतरीन फीचर लोगों को अच्छा लगेगा। उन्होंने कहा कि सीएनजी टैंक किसी भी परिस्थिति में विस्फोट नहीं करेगा।

पुल निर्माण में अनियमिता बर्दाश्त नहीं : उप मुखिया

कुजू। कुजू पूर्वी पंचायत के कसेराधौड़ा से तीन नंबर तक 98 लाख 55 हजार रुपये की लागत से बन सड़क व पुलिया निर्माण का कुजू पूर्वी पंचायत के उप मुखिया कुमारी नीलम ने निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने देखा कि ठेकेदार रोहित चौधरी द्वारा पुल निर्माण में माइंस के मरे हुए पत्थर का इस्तेमाल किया जा रहा है, जो आगे चलकर पुल के लिए सही नहीं होगा। उन्होंने ठेकेदार को पुल निर्माण में गुणवत्ता पूर्ण कार्य करने के साथ ही छरी डाले का निर्देश दिया। साथ ही हिदायत दी कि अगर कार्य में अनियमिता बरता गया तो इसकी शिकायत उपायुक्त से की जायेगी। मौके पर कुमारी नीलम ने कहा कि पंचायत में बेहतर कार्य हो मैं इसका पूरा ध्यान रखुंगी। पंचातय के विकास ही मेरी प्राथमिकता है।

कुजू में विधायक तिवारी महतो ने बच्चों को पोलियों की खुराक

कुजू। मांडू प्रखंड में 08 से 10 दिसंबर तक चलने वाले तीन दिवसीय प्लस पोलियो की शुरूआत रविवार को हो गया। इस दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मांडू के अंतर्गत 280 बूथ, 14 मोबाइल टीम, 10 ट्रांजिट बूथ में 0 से 5 वर्ष तक बच्चों को पोलिया पिलाया गया। सीएचसी मांडू में मांडू विधायक तिवारी महतो बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाकर अभियान का शुभारंभ किया। मौके पर उन्होंने कहा कि पोलियो की खुराक अवश्य पिलाना चाहिए।

पल्स पोलियो अभियान का डीडीसी ने किया शुभारंभ

रामगढ़ जिले में 8 से 10 दिसंबर तक बच्चों को दी जायेगी खुलाक

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। 8 दिसंबर से 10 दिसंबर तक पल्स पोलियो अभियान का रविवार को उप विकास आयुक्त रोबिन टोप्पो द्वारा सदर अस्पताल रामगढ़ में शुभारंभ किया गया। मौके पर उप विकास आयुक्त, सिविल सर्जन डॉक्टर महालक्ष्मी प्रसाद सहित अन्य अधिकारियों के द्वारा नवजात शिशु को पोलियो की खुराक पिलाई गई। इस दौरान उन्होंने पल्स पोलियो अभियान को सफलतापूर्वक संपन्न करने एवं निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप शत प्रतिशत 0 से 5 वर्ष के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश सिविल सर्जन डॉ महालक्ष्मी प्रसाद सहित उपस्थित अन्य अधिकारियों, चिकित्सकों में स्वास्थ्य कर्मियों को दिए। इस दौरान सिविल सर्जन, राज्य नोडल पदाधिकारी, एसीएमओ, डीएलओ, डीआरसीएचओ, डीएस सदर, एसएमओ डब्ल्यूएचओ, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारियों, स्वास्थ्य अधिकारियों चिकित्सकों व स्वास्थ्य कर्मियों सहित अन्य उपस्थित थे।

पल्स पोलियो अभियान के तहत 8 दिसंबर से 10 दिसंबर तक 0 से 5 वर्ष तक के 171692 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य निर्धारित है जिसमें 8 दिसंबर को 1067 बूथों पर व 9 एवं 10 दिसंबर को घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का कार्य किया जाएगा उक्त कार्य हेतु 49 ट्रांजिट टीम एवं 34 मोबाइल टीम बनाए गए हैं साथ ही 153 पर्यवेक्षकों को कार्य में लगाया गया है।

स्पीड न्यूज

गांधी विद्यालय में मिलन समारोह 26 को

भुरकुंडा (रामगढ़)। महात्मा गांधी उच्च विद्यालय भुरकुंडा के छात्र-छात्राओं का एक बार फिर 26 दिसंबर को जुटान होगा। देश के कोने-कोने से विद्यालय के 1990 बैच के छात्राएं मिलन समारोह में शामिल होने के लिए पतरातु पहुंचेंगे। इस बार महात्मा गांधी उच्च विद्यालय 1990 बैच के छात्राओं का पारिवारिक मिलन समारोह पतरातू एलेक्सा रिसॉर्ट के पास नलकारी नदी तट पर आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम की तैयारी जोरशोर से की जा रही है। 26 को होने वाले मिलन समारोह में सभी छात्र-छात्राएं अपने परिवार के साथ शामिल होकर अपनी पुरानी यादों को ताजा करेंगे। पिछले 2 साल से 90 गांधियन की ओर से यह आयोजन किया जा रहा है। इस साल यह लगातार तीसरी बार 26 दिसंबर को आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में झारखंड के अलावा बिहार, बंगाल, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा सहित अन्य जगहों से स्कूल के छात्र-छात्राएं शामिल होंगे। पहली बार 2022 में 32 साल बाद स्कूल के विद्यार्थियों का मिलन समारोह स्कूल परिसर में आयोजित किया गया था। वहीं 2023 में यह कार्यक्रम पतरातू में नलकारी नदी तट पर ईटरनिटी रिसॉर्ट के नजदीक किया गया था। इस बार यह कार्यक्रम पतरातू में नलकारी नदी तट पर ही एलेक्सा रिसॉर्ट के नजदीक किया जा रहा है, ताकि वहां से पतरातु घाटी का भी सभी लोग आनंद उठा सके। बंगाल से स्कूल की छात्रा कविता लोधा कहती है कि वार्षिक समारोह के बहाने एक बार पूर्ववर्ती छात्रों से मिलना सुखद अनुभव रहता है। पटना की पूनम सिंह कहती है कि हम लोगों के लिए एक-दूसरे से मिल लेना ही काफी खुशनुमा पल होता है। जमशेदपुर की विभा वर्मा कहती है कि कार्यक्रम का इंतजार वह साल भर करती है। अन्य छात्र-छात्राएं भी कार्यक्रम को लेकर काफी उत्साहित है।

सेवा मंच ने गरीबों को कराया भोजन

भुरकुंडा (रामगढ़)। राष्ट्रीय सेवा मंच सामाजिक संस्था ने प्रत्येक सप्ताह की भांति इस रविवार को भी साप्ताहिक हाट भुरकुंडा में दुर-दराज ग्रामीण क्षेत्रो से दातुन-पत्तल बेचने आने वाले गरीब-जरूरतमंदों को भोजन कराया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि भुरकुंडा ओपी के एएसआई कुणाल कुमार और मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह ने लगभग 150 गरीब महिला-पुरूष व बच्चों के बीच पुरी और सब्जी का वितरण किया। मौके पर मुख्य अतिथि भुरकुंडा ओपी के एएसआई कुणाल कुमार ने मंच के इस नेक पहल की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि गरीबों की सेवा सबसे बड़ा पूण्य का कार्य है। ऐसे नेक और सामाजिक कार्यों में सबों को सहयोग करना चाहिए। मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह ने कहा की गरीबों की सेवा ही मंच का उद्देश्य है जो निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने कहा बताया कि जन सहयोग के माध्यम से पिछले 9 वर्षो से मंच द्वारा गरीबो को भोजन कराया जाता रहा है, जो आगे भी जारी रहेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंच के अध्यक्ष डब्लू सिंह, उमाशंकर जायसवाल, रिंकू वर्णवाल, उदयभान दुबे, शिवकुमार यादव, कारू यादव, लखन राम, लालू उरांव, सुकरा करमाली, राजू मल्होत्रा, संजय यादव, मो. शाहिद, बाबू मिश्रा आलोक सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

सयाल डी परियोजना में धरना 18 को

भुरकुंडा (रामगढ़)। अखिल झारखंड कोयला श्रमिक संघ क्षेत्रीय कमेटी की बैठक रविवार को सयाल स्थित यूनियन कार्यालय में हुई। इसकी अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष इंद्रदेव राम और संचालन शाखा सचिव संजय मिश्रा ने किया। बैठक में मुख्य रूप से यूनियन के केंद्रीय महासचिव सतीश सिन्हा उपस्थित थे। मौके पर सतीश सिन्हा ने कहा कि सयाल में लोकल सेल चालू तो हुआ लेकिन यहां के प्रबंधन के निजी स्वार्थ के चलते लोकल सेल बंद हो गया। सयाल में दो-दो आउटसोर्सिंग कंपनी पीएसएमई एवं आरए माइनिंग काम कर रही है। लेकिन दोनों कंपनियों में मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी नहीं दिया जा रहा। यहां के स्थानीय एवं प्रभावित लोगों को रोजगार नहीं दिया जा रहा। साथ ही कंपनी बाहर से लोगों को बुलाकर काम करवा रही है। सयाल के कॉलोनियों में पेयजल की व्यवस्था नियमित ढंग से नहीं हो रही है। साथ ही इस संबंध में परियोजना पदाधिकारी को सात सूत्री मांग-पत्र भी सौंपा जायेगा। बैठक में केंद्रीय सदस्य संतोष ठाकुर, सयाल ब्रांच के सचिव विनोद कुमार, अध्यक्ष शंकर सिंह, रणधीर साव, विकाश कांत सिन्हा, अनिल राम, शिवनंदन दास, रोबिन मुखर्जी, गोकुल प्रसाद, महेश पासवान, अरविन्द सहाय, शैलेंद्र सिंह आदि मौजूद थे।

जवाहर नगर में गरीबों को मिला अनाज

भुरकुंडा । जवाहर नगर भुरकुंडा निवासी पंडित राम कुमार पाठक की पत्नी मंजू देवी की पहली पुण्यतिथि पर पटेलनगर सयाल मोड़ स्थित प्राचीन शीतला मंदिर प्रांगण गरीबों के बीच अनाज और वस्त्र का वितरण किया गया। पंडित राम कुमार पाठक ने अपनी पत्नी स्व. मंजू देवी के तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर किया। राम कुमार पाठक ने जरूरतमंद महिला-पुरूषों के बीच अनाज, साड़ी व गर्म वस्त्र का वितरण कर किया।

एक नजर में

दामोदर नदी बचाओ संघर्ष समिति की बैठक

रामगढ़। दामोदर नदी बचाओ संघर्ष समिति की बैठक दामोदर नदी छठ घाट में रविवार को संपन्न हुई । बैठक की अध्यक्षता समिति के दामोदर नदी बचाओ संयोजक राजेश ठाकुर ने किया । बैठक में राजेश ठाकुर ने कहा की दामोदर नदी का जल दिन प्रतिदिन दामोदर दूषित होते जा रहा है । दामोदर नदी की भूमि का भी अतिक्रमण किया जा रहा है। दामोदर नदी में शहर के सभी नालियों का गंदा पानी जमा हो रहा है । इससे पानी जहरीला हो चुका है । इसको देखते हुए आज रामगढ़ शहर के युवाओं ने दामोदर बचाओ रामगढ़ बचाओ का नारा देते हुए रामगढ़ शहर में एक मूहिम चलाया जाएगा। बताया कि रामगढ़ शहर में दिन प्रतिदिन शहर को गंदगी एवं प्रदूषित किया जा रहा है । रामगढ़ शहर वासियों को प्रदूषण वाला हवा मिल रहा है । शहर में तरह-तरह की बीमारियों से लोग ग्रस्त हैं । संयोजक राजेश ठाकुर ने एक कोर कमेटी बनाया गया। जिसमें तुलेश्वर पासवान, शशि शेखर सिंह ,अरविंद कुमार, प्रमोद चौधरी, पवन महतो ,सुमित अग्रवाल ,नीतीश राम, आनंद कुशवाहा ,तरुण शाह ,रुपेश सोनी,सौरव कुमार, बंटी पासवान ,अंकित कुमार ,गौरव सोनी ,अमर सोनी ,संजय अग्रवाल ,राजेश मुंडा, उमेश कुमार ,रूपेश कुमार को कोर कमेटी बनाया गया है। बताया की आगामी बैठक में दामोदर नदी बचाव एवं प्रदूषण के खिलाफ रामगढ़ शहर में हस्ताक्षर अभियान चलाया जाएगा

सत्येंद्र नारायण सिंह बने सांसद प्रतिनिधि

टाटीझरिया। हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने अपने तीन प्रतिनिधियों की घोषणा कर दिया है। इनमें सत्येंद्र नारायण सिंह को लोकसभा स्तर के प्रतिनिधि,अनिल मिश्रा को हजारीबाग जिले का प्रतिनिधि तो राजीव जायसवाल को रामगढ़ जिले का प्रतिनिधि मनोनीत किया है। इससे संबंधित पत्र उन्होंने डीसी को भेजा है। प्रतिनिधियों की घोषणा पर टाटीझरिया भाजपा मंडल कमिटी ने मनोनीत प्रतिनिधियों को बधाई संदेश भेजा है । मनोनयन पर सांसद श्री जायसवाल को भी बधाई दिया है। मंडल अध्यक्ष कैलाशपति सिंह,वरिष्ठ भाजपा नेता एमके पाठक,संतोष मंडल,राजू यादव,रजनीकांत चौधरी,राजेश यादव,अनिल प्रसाद,बजरंगी साव,कृष्णा साव,अधीर तिवारी, होपन सिंह,पिंगला देवी,सुनील साव,कौलेश्वर मिश्रा,उपेंद्र पांडेय,परमेश्वर यादव,संजीत यादव,अमरेश सिंह,अजय कुशवाहा,निखिल सिंह,सुशांत सिंह,पूनम कुमारी,सहदेव यादव,सुरेश यादव समेत अन्य ने संसद और उनके प्रतिनिधियों को बधाई दिया है।

हाइवा से कोयले के तस्करी से उड़ता है धूल

टाटीझरिया। टाटीझरिया थाना क्षेत्र के झरपो,भराजो,खैरा, पंचायत के कई गांवों में शाम रात ,प्रात:काल में कोयला की ट्रैक्टर, हाइवा से ढुलाई कर बिक्री की जा रही है। जिससे वातावरण काफी दूषित होते देखा जा रहा है और जहां तहां गड्ढा हो गया। अब तक कई क्षेत्रवासियों को थाना ,प्रखंड बाजार आवागमन रास्ते में चलने के दौरान काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बतादे की संपूर्ण भारत में जहां केंद्र सरकार द्वारा एक ओर स्वक्षता अभियान चलाया जा रहा है तो दूसरे और बिचौलियों के सहारे धड़ल्ले से कोयला को गाड़ी से आवागमन कर रास्ते को जर्जर किया जा रहा है। वही अखबार में नाम नहीं लिखे जाने के शर्त पर क्षेत्रवासियों ने कहा कि हमलोगों से ईंट भट्ठे मालिकों द्वारा यह कहा जा रहा है कि हमलोग कोयला महंगे में खरीदते है जो बहुत ही मशक्कत के बाद मिल पाता है तब कही ईंट तैयार करते है और बिक्री करते है। क्षेत्रवासियों ने बताया कि जब टाटीझरिया पुलिस प्रशासन है मौन तो कार्यवाही करेगा कौन ।

बिजली के तार से आग, धान जलकर खाक

बरही। बरही प्रखंड के ग्राम ओरपरता में एक बड़ा हादसा हुआ जब जर्जर 11000 वोल्ट का बिजली का तार अचानक हीरालाल राणा के खलिहान में गिर गया। इस दुर्घटना में खलिहान में रखे लगभग 200 धान के बोझ आग की चपेट में आ गए और जलकर राख हो गए। अनुमानित रूप से इस घटना में लगभग 60,000 रुपये का नुकसान हुआ है। हीरालाल राणा, जो एक गरीब किसान हैं, उन्होंने इस फसल को चार महीने की कड़ी मेहनत और भारी लागत से तैयार किया था। उनकी पूरी उपज बिजली विभाग की लापरवाही के कारण राख हो गई। इस घटना से पीड़ित परिवार गहरे आर्थिक संकट में आ गया है।स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने इस घटना को किसानों के लिए बड़ा झटका बताते हुए प्रशासन से शीघ्र सहायता की मांग की है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए बिजली विभाग को अपनी जिम्मेदारियां गंभीरता से निभानी चाहिए। ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों ने प्रशासन से इस मामले में तत्काल मदद और भविष्य में ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाने की अपील की है।

विधायक ने किया ट्रांसफार्मर का उद्घाटन

बरही। बरही प्रखंड के श्रीनगर में विधायक मनोज कुमार यादव के प्रयासों से 200 केवीए का नया ट्रांसफार्मर लगाया गया। उद्घाटन समारोह में विधायक मनोज यादव ने पंचायत प्रतिनिधियों और स्थानीय ग्रामीणों के साथ इस नए विकास परियोजना का उद्घाटन किया। इस समारोह में जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, मुखिया संघ अध्यक्ष सह मंडल अध्यक्ष विजय यादव, मुखिया मोतीलाल चौधरी, मुकेश कुमार, सुधाकर यादव, संजय यादव, अर्जुन यादव, सुनील यादव, दिनेश यादव, विजय गुप्ता, दिनेश यादव, सुरेंद्र चौधरी, महादेव यादव, कृष्ण मोहन यादव, शिव शंकर प्रसाद, संतोष यादव समेत अन्य लोग उपस्थित थे।विधायक मनोज यादव ने उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि यह नया ट्रांसफार्मर श्रीनगर में बिजली आपूर्ति को और अधिक मजबूत करेगा और क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने आगे कहा कि उनके प्रयास से ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है ताकि वहां के लोग भी समान अवसरों का लाभ उठा सकें। विधायक ने यह भी वादा किया कि भविष्य में भी वे क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहेंगे।

प्लस 2 उच्च विद्यालय में काव्य पाठ आयोजित

बरही। बरही के परियोजना प्लस 2 उच्च विद्यालय गौरियाकरमा में शनिवार को एक काव्य पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के सभी हाउस के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में तिलका मांझी हाउस, नीलांबर-पीतांबर हाउस, बिरसा मुंडा हाउस और सिद्धू-कानू हाउस के समन्वयकों ने संयोजक की भूमिका निभाई। इस काव्य पाठ का संचालन विद्यालय के शिक्षक बम बम कुमार राम द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी शिक्षक प्रदीप कुमार मौर्य और डॉ. शिव कुमार मेहता ने की। विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए मंच पर कविताएं प्रस्तुत कीं। इस कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकगण, जिनमें बसंत सिंह, संदीप कुमार मिश्रा, मुकेश कुमार, वकील कुमार यादव और दीपक कुमार रविदास शामिल थे, ने भी अपनी कविताओं से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के अंत में काव्य पाठ समिति द्वारा सभी प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार प्रदान किए गए। इस आयोजन ने विद्यालय में साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और छात्रों के रचनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने का संदेश दिया।

कलियुग में नाम संकीर्तन ही आधार : चैतन्य महाप्रभु

बासुकीनाथ पाण्डेय

कृते यद्धयातो विष्णुम त्रैतायाम यजतोमरवै
द्वापर परिचर्याम कल्लौ तदहरिकीर्तनाम

सतयुग में ध्यान के द्वारा, त्रेता में यज्ञ द्वारा, द्वापर में अर्चना के द्वारा जो पुरुषार्थ लाभ होता है वह अब कलियुग में श्री हरिकीर्तन द्वारा प्राप्त हो सकता है।

कलियुग धर्म है नाम संकीर्तन
एतदर्थे अवतीर्ण श्री शचीनंदन

नदनंदन श्रीकृष्ण ही श्रीराधारानी के भाव और माधुर्य रस को लेकर जो पूर्ण में किसी को नहीं दिया गया, वही उन्नत-उज्जवल रस सभी साधारण लोगों को देने के लिए कलियुग की प्रथम संध्या में श्रीगौर सुन्दर, श्री धाम मायापुर, नवद्वीप, जिला नदिया, पश्चिम बंगाल में सन 1486 की फाल्गुनी पूर्णिमा तिथि में संध्या काल में अवतीर्ण हुए थे। पिता श्री जगन्नाथ मिश्र तथा श्री माता शची देवी को अवलंम्वन कर श्री चैतन्य देव ने श्री कृष्ण प्रेम की अप्राकृत परम कल्याणमय कार्य किया इसलिए प्रतिवर्ष फाल्गुणी पूर्णिमा तिथि में उनके जन्म दिवस (अविर्भाव) के उपलक्ष्य में भारत ही नही अपितु पूरे विश्व में उनके द्वारा प्रचारित श्री हरीनाम -संर्कीतन के साथ उनका दिव्य जन्मोत्सव मनाया जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु जी का जन्म श्री गंगा जी के तट पर उस समय हुआ जब चन्द्रग्रहण के समय असंख्यक लोग भागीरथी में स्नान कर रहे थे तथा सभी जगह हरि बोल, हरि बोल, शब्द गुजाएमान हो रहा था।

व्रजेन्द्रनंदन श्री कृष्ण जोकि भक्ति भाव को लेकर अपने ही माधुर्य का आस्वादन करने व युगधर्म श्री हरीनाम संकीर्तन का प्रचार करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु जी के रूप में अवतरित हुए। श्री चैतन्य महाप्रभु जी को अनेकों नामों जैसे श्री गौर हरि, श्री गौरांग, श्री गौर नारायण, श्री चैतन्य देव, श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु व बचपन के नाम श्री निभाई इत्यादी से भी पुकारा जाता है।

कलियुग के युगधर्म श्री हरिनाम संकीर्तन को प्रदान करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने अपने पार्षदों श्री नित्यानंद प्रभु, श्री अद्वैत, श्री गदाधर, श्री वास आदि भक्तवृंद के माध्यम से जीवों के कल्याण हेतु गांव-गांव, नगर-नगर, शहर-शहर आदि जाकर श्री हरिनाम संकीर्तन का प्रचार व प्रसार की शिक्षा दी।

नमो मद्यवदान्याय कृष्णप्रेमप्रदायते
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः

श्री रूप गोस्वामी महान वैष्णव सत जी ने श्री गौर सुन्दर के प्रणाम मंत्र में कहा है- हे, दाताशिरोमणी, कृष्ण प्रेम प्रदाता, श्री कृष्णचैतन्य नाम धारी अर्थात श्रीकृष्ण अभिन्न, सर्व अवतारी, दयालु, गौर कान्ति कृष्णा आपको नमस्कार है।

श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने मानव प्राणियों के उद्धार के लिए शिक्षाएं दी हैं। जो पूरे विश्व को देन है। श्री चैतन्य महाप्रभु जी ने शिक्षाएं विश्व के कल्याण हेतु प्रदान की जो इस प्रकार है-

प्रथम शिक्षा : श्री हरिनाम का महात्म बताते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु कहते है कि श्री कृष्ण नाम संकीर्तन चित रुपी दर्पण को साफ करने वाला, संसारिक दावानल को समाप्त वाला, कल्याणकारी, जीवनरूप, आनन आन्नद देने वाला, पूर्ण का आस्वादन करने वाला, आंतरिक पाप वृति व जन्म मृत्यु के चक्कर से हमेशा के लिए छुटकारा दिलवाने वाले त्रिकृष्ण नाम संकीर्तन की जय हो।

द्वितीय शिक्षा : जीवों की भिन्न रूचियों को रखने के लिए हे भगवान आपने अपने मुकुन्द, माधव, गोविन्द, दामोदर, शयामसुन्दर, घनशयाम, यशोदानंद इत्यादि नाम रखे ओर प्रत्येक नाम में अपनी पूरी शक्ति भी स्थापित कर दी। नाम लेने के लिए देश-काल, शुद्धाशुद्धी का नियम बंधन तोड़ दिया लेकिन मेरा आपके नामों में अनुराग नहीं हुआ। आप कृपा करें कि आपके नामो में मेंरी रूचि हो सके।

तीसरी शिक्षा : संसार के जीवों को अपने घंमड, अहंम को समाप्त करके घास के तिनके जैसा निम्न समझना चाहिए अर्थात घमंड छोडकर, पद प्रतिष्ठा छोड़कर विनम्र स्वभाव होना चाहिए। पेड़ से भी अधिक सहनशील होकर, खुद सम्मान की चाहना न रखते हुए सदा श्री हरीनाम संकीर्तन करना चाहिए।

चौथी शिक्षा : हे जगदीश आप ऐसा आर्शीवाद दें कि मेरे में अत्यधिक धन, बहुत जन, पंडित, सुंदरी आदि की चाहना न हो और आपके श्री चरणकमलों मेरी जन्म-जन्म तक अहैतुकी भक्ति रहें।

चैतन्य महाप्रभु का परिचय

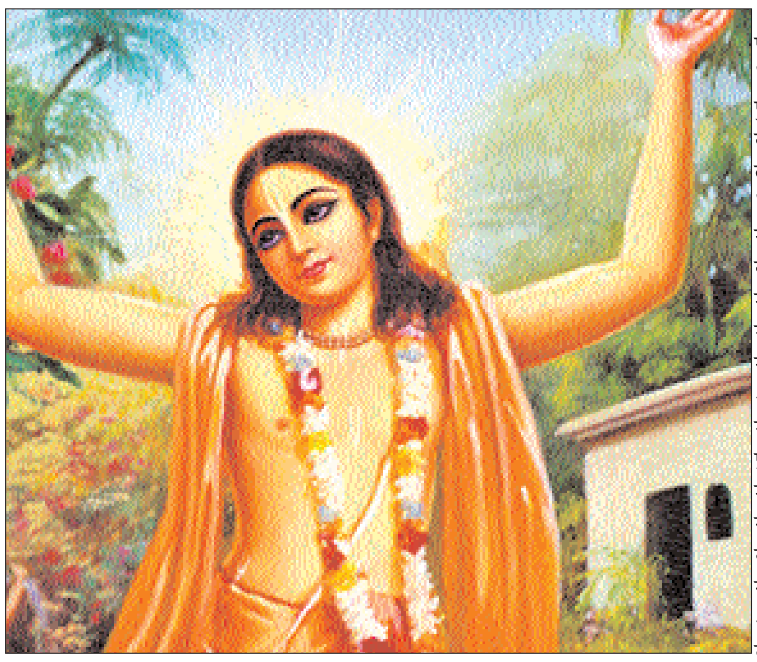

चैतन्य महाप्रभु का जन्म सन 18 फरवरी सन् 1486 की फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को पश्चिम बंगाल के नवद्वीप (नादिया) नामक उस गांव में हुआ, जिसे अब 'मायापुर' कहा जाता है। बाल्यावस्था में इनका नाम विश्वंभर था, परंतु सभी इन्हें 'निमाई' कहकर पुकारते थे। गौरवर्ण का होने के कारण लोग इन्हें 'गौरांग', 'गौर हरि', 'गौर सुंदर' आदि भी कहते थे। चैतन्य महाप्रभु के द्वारा गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय की आधारशिला रखी गई। उनके द्वारा प्रारंभ किए गए महामन्त्र 'नाम संकीर्तन' का अत्यंत व्यापक व सकारात्मक प्रभाव आज पश्चिमी जगत तक में है। कवि कर्णपुर कृत 'चैतन्य चंद्रोदय' के अनुसार इन्होंने केशव भारती नामक संन्यासी से दीक्षा ली थी। कुछ लोग माधवेन्द्र पुरी को इनका दीक्षा गुरु मानते हैं। इनके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र व माँ का नाम शचि देवी था।

चैतन्य महाप्रभु का जन्म काल

निमाई (चैतन्य महाप्रभु) बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा संपन्न थे। साथ ही, अत्यंत सरल, सुंदर व भावुक भी थे। इनके द्वारा की गई लीलाओं को देखकर हर कोई हतप्रभ हो जाता था। 15-16 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह लक्ष्मी देवी के साथ हुआ। सन 1505 में सर्पदंश से पत्नी की मृत्यु हो गई। वंश चलाने की विवशता के कारण इनका दूसरा विवाह नवद्वीप के राजपंडित सनातन की पुत्री विष्णुप्रिया के साथ हुआ।

चैतन्य महाप्रभु की कृष्ण भक्ति

चैतन्य को इनके अनुयायी कृष्ण का अवतार भी मानते रहे हैं। सन 1509 में जब ये अपने पिता का श्राद्ध करने बिहार के गया नगर में गए, तब वहां इनकी मुलाकात ईश्वरपुरी नामक संत से हुई। उन्होंने निमाई से 'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तभी से इनका सारा जीवन बदल गया और ये हर समय भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा व विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए। सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज इनके शिष्य बने। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की। निमाई ने अपने इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झाँझ, मंजीरे आदि वाद्य यंत्र बजाकर व उच्च स्वर में नाच-गाकर 'हरि नाम संकीर्तन' करना प्रारंभ किया।

धार्मिकता दुख को सुख में बदलता है

आज जीवन का जहाज उत्ताल तरंगों और तूफानों से भरे संसार सागर में भटक गया है। इसका नैतिक-बोध व दिशासूचक यंत्र खराब हो गया है। जीवन को गतिशील बनाने के लिए जीवन ऊर्जा चाहिए, परंतु उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है उसका सही दिशा में संयोजन। इसके अभाव में मनुष्य अनेक प्रकार की विभीषिकाओं के बीच खड़ा है। कभी वह बीमारी से भयभीत रहता है, कभी उसे बुढापा सताता है, कभी वह मौत से घबराता है। न जाने कितने चेहरे हैं भय और दुख के। मनुष्य उन सबसे सुरक्षा चाहता है। दुनिया की सबसे बड़ी प्रार्थना दुख मुक्ति की है, लेकिन मेरी दृष्टि में जीवन में दुख न आए, यह प्रार्थना कायरतापूर्ण है। दुख और कठिनाइयों के बीच में मनोबल बना रहे, यही सच्ची प्रार्थना है, जो व्यक्ति को अहंकार से बचाने वाली और पुरुषार्थी बनाने वाली है।

इच्छा करना एक बात है और इच्छापूर्ति के उपाय खोजना दूसरी बात। जब तक उपाय हाथ नहीं लगते, इच्छा पूरी नहीं होती। यदि दुखमुक्ति के उपाय नहीं किए जाएं तो दुख मुक्त रहने का सपना भी केवल सपना बनकर रह जाता है। 'रक्षंति पुण्यानि पुरा कृतानि' अर्थात पहले के किए हुए पुण्य प्रबल हों तो मनुष्य को दुख से मुक्ति मिल सकती है। जंगल हो या युद्ध का मैदान, शक्तिशाली

शत्रु से सामना करना पड़े या जल और अग्नि का प्रकोप, मनुष्य के पुण्य प्रबल हों तो उसे कोई मार नहीं सकता।

महाभारत में लिखा है, 'धर्मो रक्षति रक्षित अर्थात मनुष्य धर्म की रक्षा करे तो धर्म भी उसकी रक्षा करता है। हमारी व्याख्या के अनुसार मनुष्य की धार्मिक वृत्ति उसकी सुरक्षा करती है। यह व्याख्या सार्थक भी है। आखिर धर्म अपने आप में है क्या? वास्तव में धर्म का न कोई नाम होता है और न कोई रूप। व्यक्ति के आचरण, व्यवहार या वृत्ति के आधार पर ही उसे धार्मिक अथवा अधार्मिक होने का प्रमाणपत्र दिया जा सकता है। श्रीमद भागवत के प्रथम स्कंध में कुंती का आत्मनिवेदन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उसने मनोबल बढाने की प्रार्थना के स्थान पर विपदाओं को आमंत्रित किया। प्रभो! मेरे पग-पग पर निरंतर विपत्तियां रहें, क्योंकि मैं जब विपदाओं से घिरी रहती हूं, तभी आपके दर्शन होते हैं। आपके दर्शन मेरे लिए मुक्ति के दर्शन हैं - मेरे जन्म-मरण की परंपरा को उच्छिन्न करने वाले हैं।

धार्मिक व्यक्ति के जीवन में कष्ट नहीं आता। यह बात नहीं है कि उसे बुढापा, बीमारी या आपदा का सामना नहीं करना पड़ता। बुढापा आता है, पर उसे सताता नहीं। बीमारी आती है, पर उसे व्यथित नहीं कर पाती। इस कथन का सारांश यह है कि धार्मिक व्यक्ति दुख को सुख में बदलना जानता है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि धार्मिक वही होता है, जो दुख को सुख में बदलने की कला जानता है।

2025 में स्वाद का सफर और आपके परिवार की सेहत का रखें ख्याल

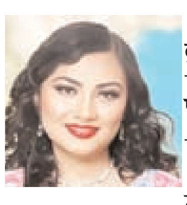

कुसुम पी

पकवान

किचन से ही शुरू होता है स्वाद का सफर और आपके परिवार की सेहत भी. यानी आपको रोजाना टेस्टी खाना बनाकर परिवार वालों का दिल जीतने के साथ ही उनकी सेहत का ध्यान भी रखना पड़ता है. आपकी कुकिंग को आसान, दिलचस्प और क्रिएटिव बनाने के लिए मैं आपको बताउँगा।

पाक कला सामग्री को स्वादिष्ट भोजन में बदलने की कला है, स्वाद, तकनीक और रचनात्मकता के संयोजन से स्वाद को संतुष्ट करने और शरीर को पोषण देने की कला है। यह एक संवेदी अनुभव है जो लोगों को एक साथ लाता है और अंतहीन पाक अन्वेषण की अनुमति देता है।

कुकिंग को बनाएं आसान

कम समय में स्वादिष्ट खाना बनाने के लिए कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखें ::--इडली का घोल तैयार करते समय उसमें थोड़े उबले चावल भी पीस दें, इससे इडली नरम बनती हैं ।

अगर सूप या ग्रेवी में मिक्स करने के लिए खाना आपके पास क्रीम नहीं है, तो १ टीस्पून रूरी कॉर्नफ्लोर को १ कप दूध में घोलकर रखें मिलाएं।

उबले अंडे को थोड़ी देर ठंडे पानी में रखे, इससे छिलका आसानी से उतर जाएगा।

सांबर या रसम पाउडर को फ्रीजर में रखें, इससे उनकी सुगंध लंबे समय तक बनी रहती है।

बैंगन को काटकर पानी में रखें, वरना बो काले पड़ जाते हैं।

अचार निकालने के लिए कभी भी स्टेनलेस स्टील के चम्मच का इस्तेमाल न करें, क्योंकि ये अचार में मौजूद एसिड सेप्रतिक्रिया करता है।

कोई भी स्मेली फूड ऐसी चीज जिसमें से बहुत महक आए, जैसे- मछली आदि) बनाने के बाद उस एरिया में नींबू रगड़ें, इससे महक दूर हो जाती है. यदि बर्तन या

चाकू से महक आ रही है, तो उसे भी नींबू से साफ करें..

प्याज को पीसने से पहले तेल में थोड़ा फ्राई कर लें, इससे मसाला जल्दी पकेगा और खाना भी स्वादिष्ट बनेगा।

गाजर, हरी मटर, कॉर्न या बीट को पकाते समय थोड़ा शक्कर डालें, इससे इनका नेचुरल फ्लेवर बना रहता है।

बाजार में मिलने वाले तंदूरी कलर का इस्तेमाल करने की बजाय कश्मीरी मिर्च के बीज निकालकर मसाले में पीस लें, इससे खाने का रंग अच्छा आता है।

रोटी के बर्तन में अदरक के कुछ टुकड़े डालें, इससे रोटी नरम और ताजी बनी रहती है।

बड़ा बनाने के लिए बेसन का घोल ठीक से तैयार हुआ है या नहीं, यह जांचने के लिए घोल की कुछ बूंदें एक कप पानी में डालें, अगर वो तैरने लगें तो समझ लीजिए कि घोल का गाढ़ापन सही है।

2025 को बनाये शुभ

निधि सिंह

नववर्ष का आगाज होने के साथ सबसे पहले लोग कैलेंडर बदलते हैं। गुजर चुकी तारीख, साल और समय के उपरांत जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है कैलेंडर। वास्तु और फेंगशुई के अनुसार दीवार पर गुजर चुके समय के बाद नया कैंलेडर लगाना ही सही माना गया है। आने वाला वक्त सुनहरी भविष्य का आगाज करें इसके लिए महीने के प्रथम दिन ही कैलेंडर बदल लेना चाहिए।

घर में इस जगह न लगाएं कैलेंडर

- कभी दरवाजे के ऊपर न तो घड़ी लटकाएं और न ही कैलेंडर इससे घर के पारिवारिक सदस्यों की उम्र कम होती है। विशेषतौर पर मुख्य द्वार के ऊपर तो कभी ऐसा न करें।
- कुछ लोग नया कैलेंडर तो लगाते हैं मगर पुराने कैलेंडर के ऊपर क्योंकि पुराने कैलेंडर से उन्हें भावनात्मक लगाव हो जाता है। जिस वजह से वह उसे उतारते नहीं हैं। फेंगशुई और वास्तु की मानें तो पुराने कैलेंडर को दीवार पर लगाना अशुभता का संचार करता है। जिंदगी में आने वाले उन्नति के अवसरों पर विराम लग जाता है।
- पूर्वी तथा उत्तरी दिशा में भूल कर भी कोई भारी वस्तु न रखें। इन दोनों दिशाओं में कोई कैलेंडर या फोटो तक न टांगें अन्यथा कर्ज, हानि व घाटे का सामान करना पड़ता है।
- घरवालों की आयु कम करता है, दरवाजे पर आगे या पीछे की ओर लटकाया गया कैलेंडर।
- जानवर और उदास चेहरे वाला कैलेंडर न लगाएं। इससे घर में नकारात्मकता आती है।

यहां लगाएं कैलेंडर

वास्तु के अनुसार कैलेंडर को उत्तर, पूर्व और पश्चिम दिशा में लगाना चाहिए।

घर में इन पौधों से धन धान्य में वृद्धि

घर में पेड़-पौधे लगाने से घर की खूबसूरती और बढ़ जाती है। अगर आपको पेड़-पौधे लगाने का शौक हैं तो वास्तु की जानकारी भी जरूर रखें क्योंकि वास्तु के नियम अनुसार घर में पेड़-पौधे ना लगाएं जाए तो घर में रहने वालो को आर्थिक, मानसिक और शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं। इसलिए पेड़-पौधों को कौन-सी दिशा में लगाना चाहिए, ये जानना जरूरी है।

1. तुलसी

तुलसी एक औषधि पौधा है। इस पौधे को पूर्व दिशा में लगाना चाहिए। इन दिशा में लगाने से तुलसी का पौधा घर में बरकत लाता है।

2. ऊंचे पौधे

ऊंचे पौधों को घर में दक्षिण या पश्चिम दिशा में लगाना चाहिए। ऐसी दिशा में जहां इन्हें सूरज की भरपूर रोशनी मिलें। ऐसा करने से घर में रहने वालों को किसी भी काम में कोई बाधा नहीं आती।

3. छोटे पौधे

छोटे आकार के पौधों को घर में पूर्व या उत्तर दिशा में लगाना चाहिए।

4. कांटेदार पौधे

कांटेदार पौधों को घर के भीतर बिल्कुल भी ना लगाएं। अगर गुलाब का पौधा है तो इसे घर के भीतर लगाया जा सकता हैं।

5. दूधिया पेड़-पौधे

दूधिया पेड़-पौधों को घर के आंगन में न लगाएं। इनके घर में होने से घर में रहने वालों को स्वास्थ्य कष्ट हो सकता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि घर के ठीक सामने या बीच में कोई भी पौधा ना हो। इन जगह पेड़-पौधे होने से घर में नकारात्मक शक्ति का वास होता है।

सत्कर्मों से दुर्भाग्य बदल सकता है: श्रीराम शर्मा आचार्य

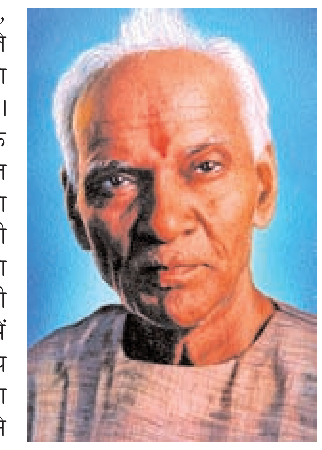

प्रारब्ध कर्मों का, भूतकाल में किये हुए भले बुरे कामों का, फल मिलना प्रायः निश्चित ही होता है। कई बार तो ऐसा होता है कि कृतकार्य का फल तुरन्त मिल जाता है, कई बार ऐसा होता है कि प्रारब्ध भोगों की प्रबलता होने के कारण विधि निर्धारित भली बुरी परिस्थिति वर्तमान काल में बनी रहती है और इस समय जो कार्य किये गये हैं उनका परिणाम कभी पीछे भुगतने के लिए जमा हो जाता है।

यदि प्रत्येक भले बुरे कर्म का फल तुरन्त हाथों हाथ मिल जाता होता तो इस संसार में कहीं भी पापी और पाप का निशान ढूँढ़े न मिलता। यानि जैसे विष खाते ही तुरन्त मृत्यु हो जाती है वैसे ही पाप करते ही उसकी भयंकर पीड़ा होती तो उसे कोई स्पर्श ही न करता और पुण्य का स्वादिष्ट फल मिठाई की तरह मधुर, बर्फ सा शीतल, चन्दन सा सुगंधित और सब प्रकार मनोहर आनन्द मय होता तो दौड़ दौड़ कर सभी लोग पुण्य करते, शुभ कर्म करने में कोई किसी से पीछे न रहता। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य की बुद्धिमत्ता की परीक्षा करने के लिए और उसकी स्वतंत्रता, दूरदर्शिता एवं विवेकशीलता को स्वतंत्र दिशा में विकसित होने देने के लिए ऐसी व्यवस्था की है। कर्मफल तुरन्त तो बहुत कम मिलते हैं वे आगे पीछे के लिए जमा होते रहते हैं। यह उधार खाता, उचित खाता, बैंकों के हिसाब की तरह आगे पीछे जमा खर्च में पड़ता रहता है। यह वह स्थान है जिस पर मनुष्य की बुद्धिमता परखी जाती है, इसी खतरे से सावधान करने के लिए धर्म का विधान है। वेद पुराण शास्त्र, इतिहास इसी जगह पर सावधान करने के लिए अपना अभिमत घोषित करते रहते हैं। फिर भी लोग चूकते हैं- भ्रम में पड़ते हैं, और इस संदेह में पड़ते हैं कि जाने कर्मफल मिलता भी है या नहीं! शास्त्रों की वाणी, धर्म की व्यवस्था जाने सच है भी या नहीं! इस संदेह में भ्रमित होकर ही वे पाप और नास्तिकता को अपना लेते हैं। तुरन्त फल न मिलना यही तो माया है, इस माया में ही मनुष्य भ्रमित होता है। आग छूने से जलन और बर्फ छूने से ठंडक की भांति यदि पाप पुण्य का स्पर्श अपना अपना तुरन्त परिणाम दिखाते तो वेदशास्त्र धर्म, भजन, पूजन, कथा, कीर्तन आदि किसी की जरूरत न पड़ती। जैसे हरी घास को देखते ही गधा सीधा उसे खाने को चला जाता है वैसे ही सब लोग पुण्य के लिए सीधे चल देते। और जैसे लाल झंडे को देखकर भैंस बिदकती है वैसे ही पाप का नाम सुनते ही लोग उससे बचकर दूर भागते। पर ऐसा है नहीं, यही ईश्वर की माया है। इस माया को समझें और उसके जाल में न उलझें, यही हमारी बुद्धिमानी का प्रमाण हो सकता है।

जैसे गोबर के उपले आज थापे जांय तो वे कई दिन में सूख कर जलाने लायक होते हैं। हम जो भले बुरे कर्म करते रहते हैं उनका भी धीरे धीरे परिपाक होता है और कालान्तर में वे कर्मफल के रूप में परिणित होते हैं। इसी प्रक्रिया को भाग्य, तकदीर, कर्मलेख, विधना के अंक, प्रारब्ध, होतव्यता, आदि नामो से पुकारते हैं। हम देखते हैं कि कई व्यक्ति अत्यन्त शुभ कर्मों में प्रवृत्त हैं पर उन्हें कष्ट मय जीवन बिताना पड़ रहा है और जो पाप में प्रवृत्त हैं वे चैन की छान रहे हैं। इसका कारण यही है कि उनके भूतकाल के कर्मों का उदय इस समय हो रहा है और आज की करनी का फल उन्हें आगे आने वाले समय में मिलेगा।

ईश्वर तक कैसे पहुंचे : बुल्लेशाह

एक प्रसिद्ध सूफी हुए हैं, बुल्ले शाह। गृहस्थ-आश्रम में होते हुए भी उनकी साधना बहुत ऊंची थी। एक आदमी उनसे निवेदन करने आया कि प्रभु-प्राप्ति का मार्ग बताएं। बुल्ले शाह बोले, अभी बताता हूं और वे धान रोपने में व्यस्त हो गए। इधर से उपाड़ते और उधर लगा देते। आदमी उकता गया। सोचा,

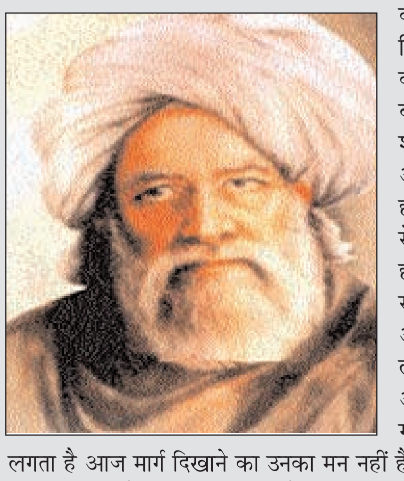

लगता है आज मार्ग दिखाने का उनका मन नहीं है। वह बोला, 'बड़ी आशा लेकर आया था। मुझे भी रास्ता मिल जाता तो कल्याण हो जाता।' बुल्ले शाह ने कहा, 'अरे! इतनी देर से तुझे ज्ञान ही तो दे रहा था।' यह सुनकर वह आदमी परेशान हो गया। कहा, आप तो धान की रोपाई में लगे थे। तब संत ने हंसते हुए कहा, 'अरे भगवान् को क्या पाना! यह जो मन संसार में लगा है, इसको धान के बूटे की तरह यहां से उपाड़ कर उधर प्रभु में लगा दो। बस हो गया अपना काम।'

साधना का इससे आसान रास्ता और क्या होगा? बस यह दृष्टि समझ में आ जानी चाहिए। हर वस्तु को देखने के दो नज़रिए होते हैं। सकारात्मक और नकारात्मक। दिन के बाद रात आती है और रात के बाद दिन। मगर फिर भी देखने का अंदाज स्थिति को बिल्कुल बदल देता है। जिसके पास सकारात्मक नजर है, वह सोचेगा कि कितनी सुंदर है प्रकृति की व्यवस्था, जहां इधर भी दिन और उधर भी दिन, बीच में थोड़े समय के लिए रात। दोनों ओर उजाला, बीच में थोड़ा सा अंधेरा। यह ऐसी दृष्टि है, जिससे जीवन में आशाएं जिंदा रहती हैं, संभावनाओं का क्षितिज खुला रहता है, जीने का रस और स्वाद बना रहता है। नकारात्मक दृष्टि में आशाएं दम तोड़ देती हैं। वह सोचती है, कैसा है यह प्रकृति का खेल। इधर भी रात और उधर भी रात, बीच में थोड़े समय के लिए दिन। दिन वे ही हैं, रात वे ही हैं किंतु नजर अपनी-अपनी है। एक नजर साधारण जीवन को एक असाधारण अर्थ प्रदान करती है और दूसरी असाधारण को भी साधारण बना देती है। सचाई यह है कि जीवन और जगत अपने में कुछ नहीं हैं। ये वैसे ही हैं, जैसी हमारी दृष्टि है।

भगवान महावीर ने कहा, मैं तुम्हें तीन रत्न दे रहा हूं। भौतिक रत्न छीने जा सकते हैं, लूटे जा सकते हैं, लेकिन मैं जो तुम्हें रत्न दे रहा हूं, अनमोल हैं। वे हैं, सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र। यानी तुम्हारी दृष्टि, तुम्हारा ज्ञान और तुम्हारा आचार सही हो।

इन तीनों में भी उन्होंने सम्यक दर्शन (दृष्टि) पर अधिक बल दिया, क्योंकि यह मकान की आधारशिला है। जितनी मजबूत होगी आधार-शिला, आपके मकान का भविष्य भी उतना ही सुदृढ़ होगा। ज्ञान और आचार वैसा ही होगा, जैसी हमारी दृष्टि होगी। हमारी दृष्टि में अगर पीलापन है तो हमें हर चीज पीली ही दिखाई देगी। आंखों से पीलापन हटते ही उसका वस्तु-ज्ञान भी सही हो जाएगा।

अगले तीन साल में भारत बनेगी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : धर्मेंद्र प्रधान

एक्सएलआरआइ के होमकमिंग 2024 का उद्घाटन सह प्लैटिनम जुबली समारोह का हुआ समापन

खबर मंत्र ब्यूरो

जमशेदपुर। एक्सएलआरआइ की स्थापना के 75 साल पूरे होने के अवसर पर पिछले एक साल से प्लैटिनम जुबली समारोह का आयोजन किया जा रहा था। शनिवार की शाम इसके समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री धर्मेंद्र प्रधान उपस्थित थे। उन्होंने टाटा स्टील के एमडी टीवी नरेंद्रन, एक्सएलआरआइ के डायरेक्टर फादर सबेस्टियन जॉर्ज, डीन एडमिन फादर डोनाल्ड डिसिल्वा, डीन एडमिन प्रो संजय पात्रो के साथ संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत की। इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि एक्सएलआरआइ देश की सबसे पुरानी बिजनेस स्कूल है। इस बिजनेस स्कूल ने ना सिर्फ मल्टीनेशनल कंपनियों को बल्कि देश को भी लीडरशिप दिया। प्रधान ने कहा कि एक्सएलआरआइ की स्थापना में टाटा स्टील की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि भारत तेजी से बढ़ रही इकोनॉमी है। कहा कि भारत अभी फिलहाल अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया में पांचवें पायदान पर है, लेकिन जिस प्रकार से देश की इकोनॉमी बूम पर है, उससे दो-तीन साल में यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी हो जाएगी। कहा कि पहली औद्योगिक क्रांति के इस दौर में भारत गुलामी में थी, इसलिए कुछ समझ में नहीं आया। दूसरी औद्योगिक क्रांति के दौर में हम मजदूर बने, तीसरे औद्योगिक क्रांति के दौर में भारत सुपरवाइजर बना जबकि अब चौथी औद्योगिक क्रांति के इस दौर में भारत को मालिक बनने का समय आ गया है। इस दौरान धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि भारत के लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लीडरशिप पर विश्वास जता रहे हैं। उनके एक आह्वान पर देश के एक करोड़ लोगों ने गैस सब्सीडी छोड़ दी। प्रधान ने देश के लोगों को गिवबैक करने की बात कही। इस अवसर पर एक्सएलआरआइ के विद्यार्थियों सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया।

इन पूर्ववर्ती विद्यार्थियों को मिला अवार्ड

- लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड - जैकब वर्गिस, चीफ इंटीग्रेटर, बायराजू फाउंडेशन
- एकेडमिक अवार्ड - प्रो के शिवारामाकृष्णन, प्रोफेसर अकाउंटिंग, राइस यूनिवर्सिटी
- अलायड फिल्ड अवार्ड - संस्थापक सह सीइओ, केयरगिवर साथी फाउंडेशन और गौतम सेन- वाइस प्रेसिडेंट-एक्सर्टनल रिलेशंस, फीवा फेडरेशन
- इंटरप्रेन्योर अवार्ड- को फाउंडर एंड डायरेक्टर, अविना होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड
- यंग अचीवर्स अवार्ड- राहुल सांघवी, एमडी एंड पार्टनर, बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप

प्रैक्टिसिंग मैनेजर अवार्ड -

- डॉ आशीष चांद, प्रेसिडेंट एंड सीइओ बेल्डन आइएनसी
- अथर शाहाब
- बिजो कुरियन, चेयरमैन, रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया
- ब्रजेश बाजपाई, कॉमर्शियल डायरेक्टर, वोडाकॉम ग्रुप

स्पीड न्यूज़

लखाईडीह के बच्चों ने किया टाटा जू का दौरा

जमशेदपुर। विधानसभा चुनाव के दौरान पूर्वी सिंहभूम जिले के सुदूरतम गांव लखाईडीह में पोलिंग बूथ बनाया गया था, जिससे गांव के लोग आसानी से मतदान कर पाए थे, इस दौरान वहां जिला के कई वरीय अधिकारी भी पहुंचे थे। वरीय पुलिस अधीक्षक कौशल किशोर की पहल पर लखाईडीह के लगभग 200 बच्चे रविवार को टाटा जूलोजिकल पार्क भ्रमण करने पहुंचे। इस दौरान सामुदायिक पुलिसिंग कार्यक्रम के अंतर्गत वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण एवं अन्य पदाधिकारी डुमरिया थाना अंतर्गत सुदूरवर्ती ग्राम लखाईडीह के नेताजी सुभाष चंद्र बोस आवासीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं से मिलकर उनका उत्साहवर्धन किया। कम्युनिटी पुलिसिंग के माध्यम से पुलिस का प्रयास है की सुदूर इलाकों में रहने वाले लोगो की सेवा की जाये, जिससे इलाके में सकारात्मकता आये। जू भ्रमण के दौरान बच्चे जानवरों को देखकर चहक उठे, वही वरीय अधिकारीयों से बैग और पठन सामग्रियो का उपहार पाकर उनके चेहरों पर खुशी खिल उठी।

सोनारी के कचरा डंप में लगी आग

जमशेदपुर। पश्चिमी जमशेपुर के विधायक सरयू राय ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया की सोनारी के कचरा डम्प में फिर से आग लग गई है, जिससे दो वर्ष पूर्व की स्थिति फिर से उत्पन्न हो गई हैं । जिला प्रशासन और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की लापरवाही और मिलीभगत से मानगो नगर निगम और जमशेदपुर अक्षेस का हर तरह का कचरा वहाँ डम्प हो रहा है. इसमें गीला और सूखा कचरा के साथ ही नुकसानदेह कचरा, रासायनिक कचरा, मेडिकल कचरा, ई- कचरा आदि शामिल है. दो वर्ष पूर्व हमने और सोनारी के नागरिकों ने आवाज उठायी थी। लेकिन सरकार , प्रशासन, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने नहीं सुना तो सोनारी निवासी सुप्रीम कोर्ट में वरीय अधिवक्ता संजय उपाध्याय एनजीटी गए। एनजीटी ने फटकार लगाया तो ज़िला प्रशासन और प्रदूषण बोर्ड ने एनजीटी के समक्ष शपथ पर आश्वासन दिया कि शीघ्र समस्या दूर करेंगे। प्रशासन यदि अब भी कारगर कदम नहीं उठाएगा तो यह मामला एनजीटी जाएगा। अवमानना का मुकदमा प्रशासन और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पर दायर होगा।

अस्तित्व के शिविर में 200 लोगों की नेत्र जांच

गम्हरिया। आदित्यपुर-2 के मार्ग संख्या 10 स्थित सामुदायिक भवन मे अस्तित्व संस्था द्वारा पूर्णिमा नेत्रलाय के सहयोग से नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे 200 से अधिक लोगों की नेत्र जांच की गई, जिसमें मोतियाबिंद 30 मरीजों का चयन किया गया। चयनित मोतियाबिंद पीड़ितों का नि:शुल्क ऑपरेशन 13 दिसंबर को पूर्णिमा नेत्रलाय में किया जाया जाएगा। शिविर में आने वाले लोगों की ब्लड सुगर, कोलेस्ट्रॉल, रक्तचाप समेत जांच की गई। मुख्य अतिथि वरिष्ठ कांग्रेस नेता अंबुज कुमार तथा संस्था की संस्थापक सचिव मीरा तिवारी के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया। शिविर के सफल आयोजन में पंचायती राज के जिला उपाध्यक्ष आनंद सिंह, रामाशंकर पांडे, सिद्धेश्वर उपाध्याय, मनोज चौरसिया, बैजयंती बारी, अनिता, अमृता, नूतन, मनीष, मौसमी, अशोक कुमार, अजय मिश्रा, सूरज आदि का सराहनीय योगदान रहा।

डॉ अजय कुमार ने कांग्रेसियों का हौसला अफजाई करते हुए कहा

कार्यकर्ता मेरे परिवार के सदस्य हैं, वो मेरे लिए कल भी महत्वपूर्ण थे और आज भी

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ अजय कुमार ने रविवार को प्रेस बयान जारी कर सभी कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं ने जिस कर्मठता व समर्पण भावना से चुनाव के दौरान कार्य किया है उसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हू। डॉ अजय ने कहा कि पिछले दिनों स्थानीय अखबारों में प्रकाशित विधानसभा में मेरी हार की समीक्षा रिपोर्ट से मैं इतेफाक नहीं रखता। इस संबंध में मेरा स्पष्ट मानना है कि चुनाव में हार जीत होती रहती है। अपनी हार के लिए मैं अपने कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ताओं को जिम्मेवार नहीं मानता हूं। बल्कि मेरे कार्यकर्ता मेरा अभिमान है, उनके सम्मान के साथ समझौता मुझे मंजूर नहीं। वो मेरे लिए कल भी महत्वपूर्ण थे और आज भी उतने ही प्रिय है। बल्कि सच कहूं तो मैं अपने इन्ही कार्यकर्ताओं के भरोसे चुनाव लड़ने की हिम्मत जुटा पाया। हमने बिना किसी लाग लपेट के डट कर चुनाव लड़ा और लगभग 65 हजार जमशेदपुर की जनता ने मुझे समर्थन किया। यह मेरे लिए एक बड़ी बात है। जनता का निर्णय मैंने सहर्ष स्वीकार किया है। क्योंकि लोकतंत्र में जनता ही मालिक होती है। जमशेदपुर मेरे दिल की धड़कनों में बसा है इसलिए जमशेदपुर से अलग होने की मैं सोच भी नहीं सकता। यह जरुर है कि मेरे विरोधियों द्वारा अक्सर लोगों के बीच में यह भ्रम फैलाने का काम किया जाता है जो सच नहीं है। मैं हमेशा अपने लोगं के बीच उपलब्ध रहता हूं और अपने सामर्थ्य के अनुरुप लोगों की मदद करता रहता हूं।

जल्द होगा आभार सभा का आयोजन

डॉ अजय ने कहा कि बहुत जल्द सभी कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का व्यक्तिगत रुप से आभार व्यक्त करने के लिए एक सभा का आयोजन करुंगा। अपने मित्र व दोस्त स्वरुप अपने कार्यकर्ताओं को उनके योगदान के लिए सम्मानित करुंगा साथ ही उनके साथ आगे की रणनीति पर विस्तार से चर्चा करुंगा।

एक नजर में

एक्सआईटीई गम्हरिया में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

गम्हरिया। एक्सआईटीई कॉलेज गम्हरिया में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का आयोजन छात्रों को समकालीन मुद्दों पर अनुसंधान चेतना विकसित करने के उद्देश्य से किया गया था। सेमिनार का शुभारंभ उप प्राचार्य डॉ फ्रांसिस मुक्ति क्लेरेंस एस जे द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात, छात्र-छात्राओं द्वारा प्रार्थना गीत के साथ इसकी शुरूआत की गई। सेमिनार के दूसरे दिन प्रतिष्ठित अकादमिक डॉ लिसा थॉमस और डॉ मनीषा टाइटस द्वारा पेपर्स ने डिजिटल पहचान, पर्यावरण क्षरण और रचनात्मक लेखन पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव जैसे विविध विषयों के बावत जानकारी दी गई। इस मौके पर संस्थान की अकादमिक उत्कृष्टता और अंत:विषय अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया गया। इसके आयोजन में प्राचार्य डॉ फ्रांसिस ई ए फ्रांसिस एसजे, सहायक प्रोफेसर अकिंचन जैक्सा, संकाय सदस्य डॉ स्वाति सिंह, सहायक प्रोफेसर अमित चतुर्वेदी, ब्रांडिंग और संचार प्रमुख आशीष सिंह आदि का सक्रिय भूमिका रही।

अंकिता भकत ने ताइपे तीरंदाजी में जीता कांस्य

जमशेदपुर। तीरंदाज अंकिता भकत ने चीन के ताइपे में आयोजित हो रहे विश्व तीरंदाजी इंडोर वर्ल्ड सीरीज में कांस्य पदक जीता उन्होंने रिकर्व महिला वर्ग मुकाबले में दक्षिण कोरिया की ली युजी को 6-2 के स्कोर से हराकर तीसरा स्थान हासिल किया। आयोजन में हमशेदपुर के टाटा तीरंदाजी अकादमी के कुल 14 एथलीटों ने भाग लिया था। टाटा तीरंदाजी अकादमी के अन्य एथलीटों ने भी प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन किया। 14 में से 8 एथलीटों ने क्वालीफिकेशन राउंड पास कर लिया, जहां प्रत्येक एथलीट को 18 मीटर से 60 तीर चलाने थे।

बी ए कॉलेज में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर सेमीनार

जमशेदपुर। बी ए कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, घुटिया जमशेदपुर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर सेमीनार का आयोजन किया गय। सेमिनार के मुख्य अतिथि एवं वक्ता जमशेदपुर मैनेजमेंट एसोसिएशन के शुभम तिवारी ने छात्रों को मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, ह्यूमन माइंड के ऊपर विस्तार से बताया। तिवारी ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कभी भी इंसान की जगह नहीं ले सकता, लेकिन इंसान के काम को आसान कर सकता है। कार्यक्रम का संचालन कॉलेज की छात्रा सना अंजुम ने किया, वही धन्यवाद ज्ञापन मैकेनिकल विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर मनोरमा सिंह ने किया। इस मौके पर जमशेदपुर मैनेजमेंट एसोसिएशन की अनुष्का, कॉलेज के प्राचार्य डॉ संजय कुमार रॉय समेत कई प्रोफेसर्स व विद्यार्थी उपस्थित थे।

विश्व जन सेवा ट्रस्ट का जागरूकता कार्यक्रम

जमशेदपुर। विश्व जन सेवा ट्रस्ट की ओर से सुंदरनगर के खुखड़ाडीह गांव में मासिक चक्र जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ मनीष झा ने बताया कि मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता अपनाना कितना जरूरी है, और स्वच्छ रह कर ही हम बीमारी से दूर रह सकते है। साथ ही कपड़े से बने पैड का उपयोग कर के हम प्रकृति की भी रक्षा कर सकते है। प्लास्टिक युक्त पैड हमारे मिट्टी को भी खराब करती है साथ ही पैड को कही खुले स्थान में फेक देने से जानवर भी पैड के संपर्क में आते है और बीमार पड़ते है। संस्था की ओर से सभी महिलाओं को नि:शुल्क प्रोजेक्ट बाला का बार- बार उपयोग करने वाला पैड दिया गया। सभी पैड पाकर बहुत खुश हुई। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूजा कर्मकार और गांव की अन्य महिलाओं का महत्वपूर्ण रहा।

सोनारी में श्याम वार्षिक महोत्सव हेतु भूमि पूजन

जमशेदपुर। सोनारी स्थित जूनियर कारमेल स्कूल के पीछे मैदान में आगामी 21 दिसंबर शनिवार को आयोजित होने वाले भव्य 22 वां श्री श्याम वार्षिक महोत्सव हेतु रविवार को भूमि पूजन किया गया। पंडित बिपिन पाण्डेय ने विधिवत रूप से पूजा संपन्न कराया। मौके पर अध्यक्ष अशोक दीवान ने बताया की बढ़ती ठंड को ध्यान मे रखते हुए इस बार भव्य पंडाल का निर्माण कराया जा रहा है। किसी भी श्याम प्रेमी को असुविधा नही होगी। श्याम बाबा का भव्य दरबार तैयार करने हेतु पश्चिम बंगाल से 7 लोगो की टीम आयेगी। आकर्षक विद्युत सज्जा होगी। साज मे कोलकाता के अंकित पोद्दार ग्रुप की पुरी टीम भक्तो को झूमने पर मजबूर कर देगी। इस वर्ष भजनो की अमृत वर्षा हेतु बिकानेर राजस्थान से प्रवेश शर्मा, कोलकाता से जयंत ब्यास, टाटानगर से महाबीर अग्रवाल को आमंत्रित किया गया है। दोपहर में विशाल शोभा यात्रा निकलेगी, जो सोनारी राम मंदिर से दोपहर 12.30 बजे प्रारम्भ होकर सोनारी के मुख्य मार्गो से गुजरती हुई आयोजन स्थल जूनियर कारमेल स्कूल के पीछे जायेगी। इसका आयोजन श्री श्याम सेवा संघ सोनारी के द्वारा किया जा रहा हैं। इसे सफल बनाने मे मुख्य रूप से समीर दीवान, पंकज अग्रवाल, रुपेश जैन, संदीप मित्तल, विकेश दीवान, श्याम अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, मनीष गर्ग, रुपेश अग्रवाल, गौतम अग्रवाल, राजेश टोड़ी, अरविन्द अग्रवाल, महाबीर अग्रवाल, अमित अग्रवाल, जीतेन्द्र साबु, अजय मित्तल आदि लगे हुए हैं।

गायत्री परिवार का 58वां रक्तदान शिविर संपन्न 155 यूनिट रक्त संग्रह

जमशेदपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार का युवा प्रकोष्ठ नवयुग दल ने अपना 58 वा रक्तदान शिविर भालूबासा स्थित सामुदायिक विकास केंद्र में आयोजित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सम्मानित अतिथियों विजय कुमार, सुषमा पात्रों, जे के सचान, रेखा शर्मा, मुन्ना पांडे, आर के सिन्हा के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ देव आह्वान व गायत्री महामंत्र के सस्वर उच्चारण से हुआ। रक्तदान शिविर के संयोजक राजन गुप्ता ने बताया की गायत्री परिवार के द्वारा किए जाने वाले सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में रक्तदान शिविर एक प्रमुख कार्य है।

सांसद-विधायक से मिले आंगनबाड़ी संघ के सदस्य, समस्याओं से कराया अवगत

खबर मन्त्र ब्यूरो

चक्रधरपुर। झारखंड राज्य समाज कल्याण आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ पश्चिमी सिंहभूम के सदस्यों ने सिंहभूम की सांसद जोबा माझी और मनोहरपुर के नव निर्वाचित विधायक जगत माझी से मुलाकात की। संघ के जिलाध्यक्ष मार्टिन मुर्मू के नेतृत्व में संघ के सदस्यों ने मुलाकात के दौरान विधायक जगत माझी का स्वागत किया और जीत की बधाई दी। इस दौरान संघ के सदस्यों ने सांसद जोबा माझी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा विभागीय मंत्री रहते जोबा माझी ने कर्मचारियों के हित में कई कार्य किये है। साथ ही संघ के सदस्यों ने सांसद व विधायक के समक्ष कुछ मांगों पर चर्चा की। सांसद ने आश्वासन दिया कि राज्य में हमारी सरकार है किसी तरह की समस्या आने पर समाधान की दिशा में सकारात्मक पहल की जाएगी। वहीं विधायक ने कहा आंगनबाड़ी कर्मचारियों हित में जो भी जरूरी कदम उठाना पड़ेगा पीछे नहीं हटेंगे। मौके पर जिलाध्यक्ष मार्टिन मुर्मू, अर्चना महतो, पुष्पा देवी, माया मेलगांडी, सिलवंती महतो, कुंती देवी, सविता मुंडरी, नरगिस केराई, नरगिस पुरती, सुरमिला बोदरा, मेरी गुलाब तोपनो, हीरा मुंडू आदि उपस्थित रही।

वैष्णव बैरागी समाज का ऋणी हूं : संजीव सरदार

आदिम झारखंड वैष्णव बैरागी समिति ने पोटका विधायक को पगड़ी पहनाकर किया सम्मानित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जादूगोड़ा। आदिम झारखंड वैष्णव बैरागी समिति ने पोटका विधायक संजीव सरदार दंपति को दूसरी बार जीत पर रविवार को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। मौके पर विधायक की पत्नी रनिता सरदार भी उपस्थित थी। समाज से सम्मान पाकर अभिभूत पोटका विधायक संजीव सरदार ने कहा कि इस चुनाव में सहयोग हेतु मैं वैष्णव समाज का कर्जदार हूं, आने वाले दिनों में बेहतर कैसे करना है व समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ कैसे पहुंचे, इसपर खास फोकस होगा। वैष्णव समाज की उत्थान के बाबत उन्होंने कहा कि राज्य के मुख्य मंत्री हेमंत सोरेन से एक प्रतिनिधिमंडल जल्द मुलाकात कर उनकी समस्या का निराकरण व निष्पादन का प्रयास करेंगे। कार्यक्रम में वैष्ण समाज के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे। आदिम झारखंड वैष्णव बैरागी समिति डोमजुडी के संरक्षक नवदीप दास, अध्यक्ष फनी दास, जिला अध्यक्ष डॉक्टर सुंदर लाल दास, गुरु पदो दास, केंद्रीय महासचिव विद्याधर दास, डोमजूडी गांव के ग्राम प्रधान सह उपमुखिया जय गोपाल, नंद गोपाल,बबलू दास, जितेंद्र नाथ दास, अजीत दास, हेमंतो दास श्यामा पदो दास, हरिहर दास ओवनी दास ,शक्ति पदो दास, अमित दास, समर दास समेत काफी संख्या में वैष्णो समाज से जुड़ी महिला पुरुषों ने भाग लिया।

1971 के युद्ध वीर हवलदार सोने लाल सम्मानित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। भारतीय सेना के इतिहास में 1971 के भारत पाक युद्ध के दौरान बिहार रेजिमेंट की सबसे युवा बटालियन 10 बिहार की थी, जो कि अपने सिर्फ 5 साल के अनुभव और वीर बिहारी के हौसलों के साथ युद्ध में उतरी थी, युद्ध के दौरान कर्नल साहनी के नेतृत्व में बटालियन ने एक अच्छे युद्ध कौशल का परिचय देते हुए युद्ध की दशा दिशा ही बदल डाली और 4 दिसंबर 1971 को युद्ध के सबसे पहले पोस्ट अखौरा जीतकर इतिहास कायम किया। बांग्लादेश में बांग्लादेशी हिन्दू और मुस्लिम भाई-बहनों पर हो रहे अराजकता, जो कि पाक सेना द्वारा किया जा रहा था। उस अमानवीय करवायी को रोकने हेतु बिहार बटालियन ने मार्ग प्रशस्त कर बांग्लादेशी जनता की सहायता हेतु भारतीय सेना का मार्ग प्रशस्त किया। लौह नगरी के वीर योंद्धा हवलदार सर्विस नंबर 4244930के सोने लाल को 4 दिसंबर अखौरा दिवस के उपलक्ष्य में 10 बिहार बटालियन के सेवनिवृत्त वीर बिहारी जमशेदपुर शहीद स्थल पर एकत्र होकर वीरों को श्रद्धांजलि दी। मौके पर लौह नगरी से 1971 के युद्ध में भाग लिए बटालियन के दो वीर बिहारी जवान भी मौजुद थे, उनके द्वारा उस समय किए गए वीरता की कहानी को सुन मन हर्ष के साथ रोमांच से भर गया। गोलमुरी वॉर मेमोरियल पर हवलदार सोने लाल को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में बिहार के सेवानिवृत्त सैनिक मोहन सिंह, मनोज कुमार, आशुतोष कुमार सिंह, राजेश कुमार, निरज कुमार, संदीप मौजूद थे।

उलीडीह में कंबल वितरण कार्यक्रम में विधायक सरयू राय का भव्य स्वागत

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। भाजपा उलीडीह मंडल के पूर्व अध्यक्ष अमरेंद्र पासवान के द्वारा उलीडीह टैंक रोड महुआ गाछ में कंबल वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गय। कार्यक्रम में जमशेदपुर पश्चिम के नवनिर्वाचित विधायक सरयू राय बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित हुए। इस दौरान श्री श्री शीतला माता मंदिर कमिटी के सदस्यों ने राकेश सिंह लोधी के नेतृत्व में सरयू राय का पुष्प वर्षा कर माला और अंगवस्त्र पहनाकर भव्य स्वागत किया। छत्तीसगढ़ी समाज की महिलाओं ने सरयू राय को श्रीमद भागवत गीता प्रदान कर उनका स्वागत किया, वही कार्यकर्ताओं ने विधायक जी को फूल माला से लाद दिया गया। मुख्य अतिथि ने जरुरतमंदो के बीच लड्डू और कंबल वितरण किया गय। मौके पर समाजसेवी मुकेश मित्तल, नीरू सिंह, जदयू के जिला अध्यक्ष सतीश सिंह, प्रमोद मालाकार, मधु सिन्हा, बिरेन प्रसाद, सुनील मंडल, प्रवीण, राज, बंटी, सुमित, धूम व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संतोषी ने जूनियर व हर्ष ने जीता सीनियर आर्टिस्ट का खिताब

केपीएस कदमा में सरकार योगा एकेडमी का ओपन सीट एंड ड्रा कम्पटीशन

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। सरकार योगा एकेडमी की ओर से कदमा स्थित केरला पब्लिक स्कूल प्रांगण में भव्य रूप से 'चतुर्थ ओपन झारखंड सीट एंड ड्रा कम्पटीशन' का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता की विशेषता यह रही कि इसमें केपीएस ग्रुप के कई स्कूलों के अलावा शहर के विभिन्न विद्यालयों के छोटे छोटे बच्चों के साथ साथ गृहिणियों ने भी भाग लिया। प्रतियोगिता में 4 वर्ष उम्र से लेकर सीनियर सिटीजन के लोगों ने भी भाग लिया। इसके लिए अलग अलग उम्र के 11 ग्रुप बनाये गए थे. प्रत्येक ग्रुप के 10 विजेताओं के साथ साथ प्रत्येक प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। सभी प्रतिभागी ड्राइंग सीट पर अपनी इच्छा अनुसार चित्र उकेरे। प्रतियोगिता में 334 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया, जबकि दो टाइटल पुरस्कार जूनियर आर्टिस्ट ऑफ द ईयर (झारखंड) एवं सीनियर आर्टिस्ट ऑफ द ईयर (झारखंड) देकर सम्मानित किया गया। सीट एंड ड्रा कम्पटीशन का उद्घाटन मुख्य अतिथि केपीएस के निदेशक शरत चंद्रन ने किया, जबकि अन्य अतिथियों में टाटा स्टील इक्विपमेंट मेंटेनेन्स हेड सतीश गणपति मौजूद थे। साथ ही आयोजन के कर्ता धर्ता योगगुरु अंशु सरकार का मनोबल बढ़ाने के लिए टाटा स्टील के उपाध्यक्ष प्रबाल घोष विशेष तौर पर शामिल हुए। सीट एंड ड्रा के पुरस्कार वितरण में केपीएस की डायरेक्टर एकेडेमिक्स लक्ष्मी शरत, समाजसेवी दीपक टांक व दर्शना टांक शामिल हुई। टाइटल पुरस्कारों में जूनियर आर्टिस्ट ऑफ द ईयर का खिताब संतोषी चंद्रा व सीनियर आर्टिस्ट ऑफ द ईयर का खिताब हर्ष कुमार राय को प्रदान किया गया। विभिन्न ग्रुप के विजेताओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार जितनेवालों में रोशन महतो, भव्या कुमारी, अक्षिता, अंकुश, श्रीयान मुखर्जी, अक्षिता दे, सौम्यी दास शर्मा, मो इनायत, बिदिशा महतो, अंकित प्रमाणिक, सौम्या खुशी, विश्वदीप डे, तृषा घोष, संतोषी चंद्रा, सौभिक माइती, अनम वकील, हर्ष कु राय, नंदिनी, सुष्मिता चक्रवर्ती, सौमिली विश्वास, शीतल सिका, पृथा मुखर्जी, श्रीलता सिन्हा, शोभा सिंह आदि के नाम शामिल है।

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिन: -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

दूसरा टेस्ट : आस्ट्रेलिया ने भारत को 10 विकेट से हराया, सीरीज 1-1 से बराबर

एजेंसी

एडिलेड। पैट कमिंस के पंजे और ट्रैविस हेड (140) रनों की शतकीय पारी की बदौलत आस्ट्रेलिया ने रविवार को दूसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन दूसरी पारी में भारत को 175 पर ढेर करने के बाद 3.2 ओवर में बिना कोई विकेट गवांए 19 रनों के लक्ष्य को हासिल कर 10 विकेट से जीत दर्ज की। इसी साथ आस्ट्रेलिया ने सीरीज में एक-एक से बराबरी कर ली हैं। ट्रैविस हेड को उनकी शानदार शतकीय पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया। रविवार को इससे पहले भारत ने कल के पांच विकेट पर 128 रनों से आगे खेलना शुरू किया। सुबह के सत्र में 128 के स्कोर ही मिचेल स्टार्क ने ऋषभ पंत (28) को आउट कर भारत को छठा झटका दिया। पैट कमिंस ने रवि अश्विन (सात) को विकेटकीपर कैरी के हाथों कैच आउट कराया। हर्षित राणा (शून्य) और मोहम्मद सिराज (सात) रन बनाकर आउट हुये। नीतीश कुमार रेड्डी ने पहली पारी की तरह दूसरी पारी में भी सर्वाधिक (42) रन बनाये। उन्हें पैट कमिंस ने आउट किया। आस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे कोई भी भारतीय बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सका। भारत की दूसरी पारी 36.5 ओवर में 175 रन पर सिमट गई। आस्ट्रेलिया की ओर से पैट कमिंस ने पांच विकेट लिये। स्कॉट बोलैंड को तीन विकेट मिले। मिचेल स्टार्क ने दो बल्लेबाजों को आउट किया। इसके बाद आस्ट्रेलिया को जीत के लिए मिले 19 रनों के लक्ष्य को 3.2 ओवर में बिना कोई विकेट खोए हासिल कर दूसरे टेस्ट मैच में जीत दर्ज की। नेथन मैकस्वीनी (10) और उस्मान ख़्वाजा (नौ) रन बनाकर नाबाद रहे। इससे पहले भारत ने पहली पारी में 180 रन बनाये थे। जिसके जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में ट्रैविस हेड (140) रनों की शतकीय पारी के दम पर 337 रनों का स्कोर खड़ा किया था।

दूसरे टेस्ट का संक्षिप्त स्कोर:
भारत 36.5 ओवर में 180 और 175 (नीतीश कुमार रेड्डी 42, ऋषभ पंत 28; पैट कमिंस 5-57, स्कॉट बोलैंड 3-51) आस्ट्रेलिया 337 और 19/0

हेड बने मैन ऑफ द मैच

भारत द्वारा दिए गए 19 रनों के लक्ष्य को आस्ट्रेलिया ने बेगैर कोई विकेट खोए आसानी से हासिल कर लिया। दूसरे टेस्ट मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया, मेहमान टीम पहली पारी में 180 रन पर आउट हो गई। आस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 337 रन बनाये और भारत पर 157 रन की बढ़त बना ली। ट्रैविस हेड को उनके धमाकेदार शतक के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। उन्होंने पहली पारी में 141 गेंदों पर 140 रन बनाए और आस्ट्रेलिया को पहली पारी में 157 रनों की बढ़त दिलाने अहम भूमिका निभाई।

आस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने क्या कहा

वहीं, आस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने तीसरे दिन सुबह के सत्र में 5 विकेट लेते हुए टीम को शानदार जीत दिलाई। उन्होंने कहा, यह हमारे लिए बेहतरीन हफ्ता रहा। पर्थ टेस्ट के बाद हम जानते थे कि हम बेहतर कर सकते हैं। इस मैच में हमने अपनी लय वापस पाई। यह जीत काफी संतोषजनक है। कमिंस ने मिचेल स्टार्क की तारीफ करते हुए कहा, स्टार्क ने पहले दिन 6 विकेट लेकर जीत की नींव रखी। वह बार-बार ऐसा प्रदर्शन करते हैं। उन्हें अपनी टीम में पाकर हम भाग्यशाली हैं। स्कॉट बोलैंड ने भी शानदार गेंदबाजी की। उम्मीद है, अगले मैच में जोश हेजलवुड भी वापसी करेंगे। उन्होंने कहा, हेड को यहां बल्लेबाजी करना पसंद है। जब वह बल्लेबाज करने आए तब गेम किसी भी ओर जा सकता था लेकिन उन्होंने खेल को बदल दिया। मुख्य बात यही थी हमने बढ़त हासिल कर ली थी और बड़ी बढ़त ही अंत में निर्णायक साबित हुई।

मैच के बाद रोहित ने क्या कहा

मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में रोहित के नेतृत्व और गेंदबाजी में बदलावों पर सवाल उठे. रोहित ने खुद स्वीकार किया कि भारत ने कई मौके गंवाए, जो हार का कारण बने। पर्थ टेस्ट के मुकाबले में एडिलेड टेस्ट में भारत की फील्डिंग और बल्लेबाजी अच्छी नहीं रही। रोहित शर्मा ने कहा, हमारे लिए यह हफ्ता निराशाजनक रहा। हमने उतना अच्छा नहीं खेला जितना जीत के लिए जरूरी था। ऑस्ट्रेलिया ने हमसे बेहतर प्रदर्शन किया। खेल के दौरान कई ऐसे मौके आए जिन्हें हम भुना नहीं सके और यही हार की वजह बनी।

विराट-धोनी और सचिन के बाद अब रोहित के नाम दर्ज हुआ शर्मनाक रिकॉर्ड

एजेंसी

एडिलेड। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली भारतीय टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डे-नाइट (पिंक बॉल टेस्ट) में 10 विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा। इस हार के साथ ही रोहित शर्मा के नाम एक शर्मनाक रिकॉर्ड दर्ज होगया है। वो भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान के तौर पर लगातार सबसे अधिक टेस्ट मैच हारने के मामले में कोहली और धोनी की बराबरी कर ली है। रोहित ने न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू मैदान पर तीन शर्मनाक हार और अब एडिलेड में आस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टेस्ट में हार का सामना करना पड़ा है। जिसके बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा एमएस धोनी, सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली जैसे शीर्ष क्रिकेटरों की सूची में शामिल हो गये हैं। जिन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान के रूप में लगातार सबसे अधिक टेस्ट मैच गंवाए हैं। रोहित की कप्तानी में भारत ने लगातार चार टेस्ट मैच गंवाए हैं। रोहित के अलावा विराट कोहली, एमएस धोनी, सचिन तेंदुलकर, दत्ता गायकवाड़ और एमके पटौदी ऐसे पांच अन्य कप्तान हैं जिन्होंने बतौर भारतीय कप्तान लगातार 4 या उससे अधिक टेस्ट मैच गंवाए हैं। विराट कोहली लगातार चार टेस्ट मैच हारने वाले आखिरी भारतीय कप्तान थे. कोहली के नेतृत्व में भारत ने 2020-21 सत्र में आस्ट्रेलिया के खिलाफ एक, न्यूजीलैंड के खिलाफ दो टेस्ट मैच और इंग्लैंड के खिलाफ एक मैच गंवाया था।

लगातार 4 या उससे ज्यादा टेस्ट मैच हारने वाले भारतीय कप्तान

6 मंसूर अली खान पटौदी (1967-68)
5 सचिन तेंदुलकर (1999-00)
4 दत्ता गायकवाड़ (1959)
4 एमएस धोनी (2011)
4 एमएस धोनी (2014)
4 विराट कोहली (2020-21)
4 रोहित शर्मा (2024)*

डब्ल्यूटीसी अंक तालिका में तीसरे स्थान पर खिसका भारत, आस्ट्रेलिया शीर्ष पर

नयी दिल्ली। आस्ट्रेलिया ने एडिलेड में खेले गये दूधिया रोशनी में दूसरे बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी टेस्ट में भारत को शानदार अंदाज में हराकर आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) तालिका में शीर्ष पर वापसी कर ली है। इस चक्र में अपनी नौवीं जीत के साथ, पैट कमिंस की अगुवाई वाली टीम ने अपने पीसीटी में सुधार करके 60.71 कर लिया और तालिका में दक्षिण अफ्रीका और भारत दोनों को पीछे छोड़ दिया। दूसरी ओर, भारत को 2023-25 चक्र में दसवें उलटफेर का सामना करना पड़ा और उसका पीसीटी गिरकर 57.29 पर आ गया, जिससे वह तीसरे स्थान पर खिसक गया। दक्षिण अफ्रीका इस समय श्रीलंका के खिलाफ घरेलू टेस्ट में मजबूत स्थिति में है और जीत के साथ तालिका में शीर्ष पर पहुंच सकता है।

अंडर-19 एशिया कप : फाइनल में बांग्लादेश से हारा भारत

एजेंसी

दुबई। गेंदबाजों के अच्छे प्रदर्शन के भावजूद भारत को अंडर-19 एशिया कप के खिताबी मुकाबले में रविवार को बांग्लादेश के हाथों 59 रन से करारी हार का सामना करना पड़ा। भारत ने शानदार गेंदबाजी करते हुए बांग्लादेश को 49.1 ओवर में मात्र 198 रन पर रोक दिया लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसका काम आधा हो चुका है, क्योंकि बल्लेबाजों ने टूनार्मेंट के पहले मैच में पाकिस्तान से मिली हार के बाद से अपनी भूमिका बखूबी निभाई है। हालांकि निर्णायक फाइनल में भारत ने दो मौकों पर लगातार विकेट गंवाए जिससे उसकी कमर टूट गई। बांग्लादेश के गेंदबाजों और क्षेत्ररक्षकों ने दबाव बनाने में अपनी भूमिका बखूबी निभाई। 199 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत 35.2 ओवर में 139 रन पर ढेर हो गया। उसका कोई भी विशेषज्ञ बल्लेबाज प्रभावशाली पारी नहीं खेल सका। इसमें आईपीएल के सबसे युवा खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी भी शामिल थे जिन्होंने मात्र 9 रन (7 गेंद, 2 चौके) बनाए। भारत को सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे (1) के रूप में शुरूआती झटके लगे और पांच ओवर के अंदर स्कोर दो विकेट पर 24 रन हो गया। फाइनल में पहुंचने के बाद बांग्लादेश ने बाकी भारतीय बल्लेबाजों को शांत रखते हुए बाउंड्री और सिंगल रन भी बनाए। सी आंद्रे सिद्धार्थ (35 गेंदों पर 20 रन) की पारी को 12वें ओवर में रिजान हुसैन ने समाप्त किया जो खेल का एक और महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि पलड़ा पूरी तरह बांग्लादेश के पक्ष में झुक गया था। लेकिन इकबाल हुसैन इमोन ने इस स्थिति का पूरा फायदा उठाया और तीन महत्वपूर्ण विकेट चटकाए जिससे भारत की उम्मीदों पर पानी फिर गया। उन्होंने केपी कार्तिकेय (21), निखिल कुमार (0) और हरवंश पंगालिया (6) को आउट किया। ०मोहम्मद अमन ने लंबे समय तक संघर्ष किया और 65 गेंदों पर 26 रन बनाए लेकिन उनका प्रयास और हार्दिक राज की 21 गेंदों पर 24 रन की पारी भी भारत के लिए जीत के लिए काफी नहीं थी। भारत के लिए मैच का अंत तेजी से हुआ क्योंकि अजीजुल हकीम ने अपने 2.2 ओवरों में 8 रन देकर 3 विकेट लिए। पहले हाफ में रिजान हुसैन के 47, मोहम्मद शिहाब जेम्स के 40 और फरीद हसन के 39 रन ने मैच में अंतर पैदा किया जिसमें बल्लेबाजों को बीच में सहजता से रन बनाने में परेशानी हुई। भारत ने पहले हाफ में बांग्लादेशी बल्लेबाजों पर दबदबा बनाए रखा और वे अपने अधिकांश ओवरों का इस्तेमाल करते हुए केवल 200 रन के करीब ही पहुंच पाए। भारत की ओर से युधाजीत गुहा (2/29) ने बेहतरीन प्रदर्शन किया जबकि चेतन शर्मा (2/48) और राज (2/41) ने भी दो-दो विकेट लिए। किरण चोरमाले ने 7-0-19-1 का औसत प्रदर्शन किया जबकि कार्तिकेय (1/37) और म्हात्रे (1/9) ने भी एक-एक विकेट लिया।

हरियाणा की महिलाओं ने तीसरे दिन जीते 7 स्वर्ण

बेंगलुरु। हरियाणा ने यहां कोरामंगला इनडोर स्टेडियम में चल रहे सीनियर नेशनल रेसलिंग चैंपियनशिप 2024 के अंतिम दिन रविवार को महिलाओं की श्रेणी में सात स्वर्ण पदक जीते। पहले पुरुषों के फ्रीस्टाइल डिवीजन पर हावी होने के बाद, हरियाणा ने महिला वर्ग में 10 स्वर्ण पदकों में से आठ जीतकर कुल 235 अंकों के साथ तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। हरियाणा के कई स्वर्ण पदक विजेताओं के बीच मुख्य आकर्षण का केंद्र राधिका (68 किग्रा) थीं, जिन्होंने इस साल अप्रैल में एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में रजत जीता था। शुरूआती दौर में बाई मिलने के बाद, उन्होंने मध्य प्रदेश के अंजलि करोस के खिलाफ श्रेष्ठता (वीएसयू) द्वारा एक जोरदार जीत के साथ अपने अभियान की शुरूआत की, इसके बाद क्वार्टरफाइनल में हिमाचल प्रदेश की सोनिका कुमार को शिकस्त दी।

भारतीय महिला टीम को आस्ट्रेलिया ने 122 रन से दी करारी शिकस्त

एजेंसी

ब्रिसबेन। भारतीय पुरुष टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडीलेड में खेले गए दूसरे टेस्ट में 10 विकेट से करारी हार के बाद जॉर्जिया वोल और एलिसे पैरी के शतकों की मदद से आस्ट्रेलिया ने रविवार को यहां दूसरे महिला एकदिवसीय मैच में भारत को 122 रन से हरा दिया। इसी के साथ ही आस्ट्रेलियाई महिला टीम तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली। अपना दूसरा एकदिवसीय खेल रही युवा बल्लेबाज वोल महज 87 गेंद में 101 रन की पारी के साथ करियर का पहला शतक जड़ने में सफल रही जबकि पैरी ने 75 गेंद में 105 रन बनाकर भारतीय गेंदबाजों पर दबदबा कायम किया। आस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी का फैसला कर आठ विकेट पर 371 रन बनाये जो भारत के खिलाफ उसका सबसे बड़ा स्कोर है। टीम ने इसके बाद भारत की पारी को 45.5 ओवर में 249 रन पर समेट कर आसान जीत दर्ज की। मैच के बाद भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने कहा, हमें बीच-बीच में कुछ साझेदारियां बनाने में सफल रहे। इस मैच में हमारी मानसिकता सकारात्मक थी, लेकिन हम पीछे रह गए। उन्होंने कहा, हमने कुछ मौके बनाए लेकिन उनका फायदा नहीं उठा सके। हमें शानदार बल्लेबाजी के लिए आस्ट्रेलिया को श्रेय देना चाहिये। हमें अपनी योजनाओं के बारे में सोचने की जरूरत है कि हम अगले मैच में कैसी गेंदबाजी करेंगे। हमें पूरे 50 ओवर बल्लेबाजी करने की जरूरत है। फोबे लिचफील्ड (60) और वोल की सलामी जोड़ी ने 130 रन की साझेदारी के साथ आस्ट्रेलिया को शानदार शुरूआत दिलायी।

बोपन्ना के खिलाफ खेलना आसान नहीं: सुमित नागल

एजेंसी

मुंबई। भारतीय टेनिस सनसनी सुमित नागल टेनिस प्रीमियर लीग (टीपीएल) सीजन 6 में स्टैंड-आउट खिलाड़ियों में से एक रहे हैं। नागल पुरुष एकल और युगल वर्ग में गुजरात पैंथर्स के लिए खेल रहे हैं। गुजरात पैंथर्स ने सेमी फाइनल चरण में जगह बना ली है और नागल अपनी टीम के शिविर में ऊर्जा से उत्साहित हैं। उन्होंने फ्रेंचाइजी की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान में कहा, यह एक सुंदर वातावरण है। हर कोई बहुत अच्छा है और हमेशा हमारे लिए मौजूद है। मैंने इन दो सीजन में गुजरात पैंथर्स के लिए खेलने का आनंद लिया है। मैच पर नागल ने कहा, किसी ऐसे व्यक्ति (बोपन्ना) के साथ खेलना आसान नहीं है जिसने स्लैम जीता हो। दिन के अंत में, यहां रहना और ऐसे अनुभवी खिलाड़ियों के खिलाफ खेलना मजेदार है। टेनिस प्रीमियर लीग हर सीजन में खेले जाने वाले टेनिस के पैमाने, प्रतिस्पर्धा और गुणवत्ता के मामले में बढ़ रहा है। टीपीएल में खेलने के अपने अनुभव को साझा करते हुए, नागल ने कहा, यह बहुत अच्छा रहा है। यदि आप इस वर्ष खिलाड़ियों की गुणवत्ता को देखें।

इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड को 323 रन से हराया

एजेंसी

वेलिंगटन। इंग्लैंड ने तीन मैचों की श्रृंखला के दूसरे टेस्ट मैच में रविवार को यहां न्यूजीलैंड को 323 रन से हराकर 2-0 की अजेय बढ़त बना ली। इंग्लैंड ने मैच के चौथे दिन की शुरूआत में आधे घंटे बल्लेबाजी की जिस दौरान दिग्गज जो रूट (106) ने अपने करियर का 36 वां टेस्ट शतक पूरा किया। पहली पारी में 155 रन बढ़त लेने वाली टीम ने छह विकेट पर 427 रन पर पारी घोषित कर न्यूजीलैंड को जीत के लिए 583 रन का लक्ष्य दिया। जीत के लिए रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड की टीम दूसरी पारी में विकेटकीपर टॉम ब्लंडेल (115) की शतकीय पारी के बावजूद 259 रन पर आउट हो गई। इंग्लैंड ने पहला टेस्ट मैच आठ विकेट से जीता था। दूसरे टेस्ट में जीत के साथ उसने न्यूजीलैंड में 2008 के बाद पहली बार टेस्ट श्रृंखला में जीत का स्वाद चखा। श्रृंखला का तीसरा टेस्ट शनिवार से खेला जायेगा। इंग्लैंड ने दिन की शुरूआत पांच विकेट पर 533 रन से आगे से की। रूट ने बीते दिन के 73 रन अपने स्कोर को शतक में बदला। उन्होंने 127 गेंद की पारी में 10 चौके लगाए। विल ओ' राउरकी की गेंद पर रूट के आउट होते ही कप्तान बेन स्टोक्स ने पारी घोषित कर दी। स्टोक्स 49 रन पर नाबाद रहे। लक्ष्य का बचाव करते हुए क्रिस वोक्स ने अपने शुरूआती चार ओवरों में डेवोन कोन्वे (शून्य) और केन विलियमसन (चार) को आउट कर इंग्लैंड को शानदार शुरूआत दिलाई। ब्रैंडन कार्स ने कप्तान टॉम लैथम (24) और रचिन रविंद्र (छह) को आउट किया जिससे टीम ने लंच के समय तक 59 रन पर चार विकेट गंवा दिए। ब्लंडेल ने इसके बाद आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 96 गेंद में अपना पांचवा टेस्ट शतक पूरा किया। दूसरे छोर से डेरिल मिचेल (32) और ग्लेन फिलिप्स (16) ने निराश किया। ब्लंडेल ने नाथन स्मिथ (42) के साथ सातवें विकेट के लिए 94 रन की साझेदारी कर इंग्लैंड के जीत के इंतजार को बढ़ाया। उन्होंने शोएब बशीर की गेंद पर आउट होने से पहले 102 गेंद की अपनी पारी में 13 चौके और पांच छक्के लगाए। इंग्लैंड के लिए कप्तान बेन स्टोक्स ने तीन जबकि वोक्स, कार्स और बशीर ने 2-2 विकेट लिए। पहली पारी में हैट्रिक लेने वाले गस एटकिंसन को एक सफलता मिली। इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 280 रन बनाने के बाद न्यूजीलैंड को 125 रन पर आउट कर दिया था।

इंग्लैंड की महिला टीम ने वनडे में द. अफ्रीका को छह विकेट से हराया

डरबन। (वार्ता) शार्लेट डीन (चार विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजें के शानदार प्रदर्शन के बाद टैमी बोमॉन्ट (34) माया माउचिर (33) की जूझारू पारियों के दम पर इंग्लैंड ने रविवार को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम को 156 गेंदें शेष रहते छह विकेट से शिकस्त दी। इसी के साथ इंग्लैंड ने तीन मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली है।\ दक्षिण अफ्रीका के 135 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड की टैमी बोमॉन्ट माया बाउचिर की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरूआत करते हुए पहले विकेट के लिये 69 रन जोड़े। 12वें ओवर में अनरी डर्कसन ने माया बाउचियर (33) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद डर्कसन ने टैमी बोमॉन्ट (34) को भी आउट कर पवेलियन भेज दिया। कप्तान हेदर नाइट (सात) रन बनाकर आउट हुई। नेट साइवर ब्रंट (20) को डी क्लार्क ने पगबाधा आउट किया। डेनिएल वायट (25) और एमी जोंस (आठ) रन बनाकर नाबाद रही।

नीषा-अश्विनी ने गुवाहाटी मास्टर्स का खिताब बरकरार रखा, फाइनल में चीनी जोड़ी को हराया

गुवाहाटी। तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की भारतीय महिला युगल जोड़ ने फाइनल में चीन की ली हुआ झोउ और वांग जी मेंग को हराकर गुवाहाटी मास्टर्स सुपर 100 बैडमिंटन टूनार्मेंट में अपना खिताब बरकरार रखा। पेरिस ओलंपिक में भी भाग लेने वाली शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी ने 43 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में ली और वांग को 21-18, 21-12 से हराकर शानदार प्रदर्शन किया।दुनिया की 16वें नंबर की जोड़ी तनीषा और अश्विनी ने धमाकेदार शुरूआत की और 8-2 की बढ़त बना ली। हालांकि चीन की जोड़ी ने गेम के मध्य अंतराल तक अंतर 10-11 तक कम कर दिया और दबाव बनाए रखा। 18-19 तक यह जोड़ी पिछड़ रही थी। इसके बाद भारतीय जोड़ी ने अंतिम दो अंक हासिल कर पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम की शुरूआत प्रतिस्पर्धात्मक रही। लेकिन भारतीयों ने सात अंक की बढ़त के साथ 15-6 की बढ़त बना ली। उन्होंने लय बनाए रखी और खिताब बरकरार रखा।

अनमोल खिताब से चूकीं

दूसरी ओर, उभरती हुई भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अनमोल खरब अपने पहले सुपर 100 खिताब के करीब पहुंचने के बाद महिला एकल फाइनल में चीन की काई यान यान से 21-14, 13-21, 19-21 से हारकर उपविजेता रहीं। 78 मिनट तक चला महिला एकल मुकाबला उतार चढ़ाव भरा रहा जिसमें अनमोल ने पहले गेम में अपना कौशल दिखाया और 4-4 की बराबरी से बढ़त बनाते हुए छह गेम प्वाइंट से पहला गेम जीत लिया। लेकिन दूसरे गेम में काई ने शानदार जज्बा दिखाया और 10-4 की बढ़त को 14-6 कर दिया और अंत में इसे जीतकर स्कोर 1-1 कर दिया। तीसरा गेम करीबी रहा जिसमें अनमोल ने 4-0 की बढ़त को 10-8 कर दिया।

विश्व शतरंज चैंपियनशिप 2024: गुकेश ने सफेद मोहरों के साथ डिंग को हराया, 6-5 की ली बढ़त

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय ग्रैंड मास्टर के डी गुकेश ने सिंगापुर में रविवार को चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ 2024 विश्व शतरंज चैंपियनशिप फाइनल में अपनी दूसरी जीत दर्ज की। 11 वें दौर के बाद गुकेश ने 1 अंक की बढ़त ले ली है, उनके 6 अंक हो गये हैं, जबकि लिरेन के 5 अंक हैं। जो भी खिलाड़ी पहले साढ़े सात अंक बनाएगा वो चैंपियनशिप जीतेगा। सफेद मोहरों के साथ जीत दर्ज कर चैंपियनशिप फाइनल में पहली बार गुकेश ने बढ़त बना लिया। भारतीय ग्रैंड मास्टर को सबसे कम उम्र के शतरंज विश्व चैंपियन बनने के लिए शेष तीन राउंड ड्रा करने की जरूरत है। चैंपियन डिंग ने अपने 28वें चाल में गलती की और गुकेश की जीत पक्की हो गई। उन्होंने अपनी रानी को सी8 में खींच लिया और प्रभावी रूप से खेल को अपने प्रतिद्वंद्वी के नाम कर दिया। 11 वें राउंड की शुरूआत दोनों ने एक रेटी ओपनिंग सिस्टम खेलने के साथ शुरू किया। गुकेश ने विश्व शतरंज चैंपियनशिप के गेम 11 में अपने 11 वें कदम पर एक घंटा बिताया। एक समय गुकेश नो सिर्फ आठ चालों के बाद एक घंटे और सात मिनट के समय का लाभ उठाया था। इसका कारण यह है कि डिंग लिरेन ने सिर्फ पांच चालों पर अपना पहला घंटे इस्तेमाल किया।

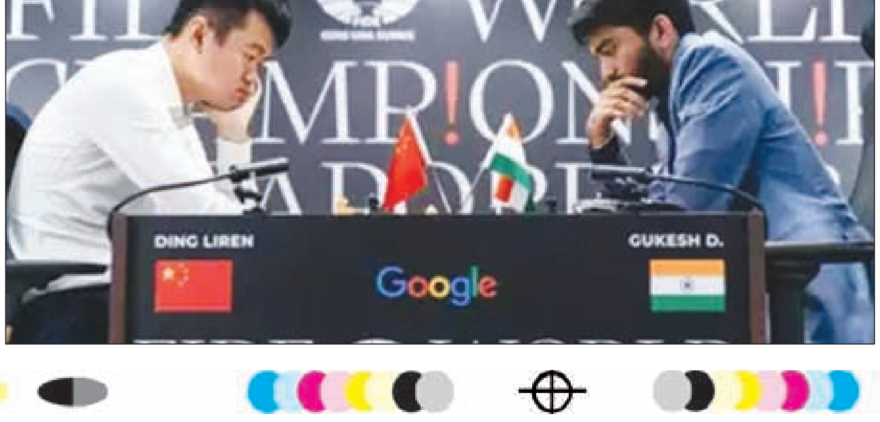

करोड़ों के मादक पदार्थ के साथ तस्कर गिरफ्तार

एजेंसी

पूर्वी चंपारण। जिला पुलिस की टीम ने गुप्त सूचना के बाद एसपी स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर तस्करी की योजना को नाकाम करते हुए 11.2 किलो ग्राम स्मैक 6.10 कि0ग्रा0 चरस एवं 2.140 कि०ग्रा० गाँजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। इसकी जानकारी देते एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि गुप्त सूचना पर डीएसपी सदर-02 के नेतृत्व में गठित टीम ने लखौरा थाना द्वारा थानाक्षेत्र के छोटकी पकही गाँव में छापेमारी कर मादक पदार्थ (चरस, गांजा एवं स्मैक) के एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए तस्कर की पहचान भोला राय, पिता लंगटू राय, ग्राम छोटकी पकही, थाना-लखौरा, जिला-पूर्वी चम्पारण के रूप में हुई है। इसकी निशानदेही पर इसके घर से ही 11.2 किलो ग्राम स्मैक 'ब्राउन सुगर व हेरोइन जैसा मादक पदार्थ जिसकी कीमत 02 करोड़ 6.10 किलो ग्राम चरस जिसकी कीमत 50 लाख व 2.140 किलो ग्राम गांजा जिसकी कीमत 03 लाख कुल कीमत-02 करोड़ 53 लाख को बरामद किया गया है। इस संदर्भ में लखौरा थाना में प्राथमिकी दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।छापामारी टीम में डीएसपी सदर 02 जितेश पाण्डेय के अलावे मुफसिल अंचल निरीक्षक अरशद रजा,लखौरा थानाध्यक्ष पंकज कुमार,एसआई अंकित कुमार, विजय कुमार,पीएसआई सना कौशर व लखौरा थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

रक्सौल में डीआरआई की टीम ने की छापेमारी

पूर्वी चंपारण। मुजफ्फरपुर से रक्सौल पहुंची डीआरआई की टीम ने रविवार को रक्सौल वार्ड नंबर 19 हंस टोला में छापेमारी करते हुए अर्जुन प्रसाद गुप्ता के पुत्र संजीव गुप्ता उर्फ मामा को अभिरक्षा में लिया है। मिली जानकारी के अनुसार संजीव गुप्ता दूसरे-दूसरे व्यक्तियों के कागजात से फरेब करते हुए उनके नाम पर गलत फर्म बनाते थे और उसी फर्म पर करोड़ों का लेन-देन किया जाता था, जबकि संबंधित व्यक्ति को इस बारे में किसी तरह की जानकारी नही होती थी। रविवार को जब डीआरआई की टीम ने छापेमारी की तो पूरे मामले का खुलासा हुआ, जिसके बाद कई ऐसे लोग जिनके नाम पर संजीव गुप्ता ने फर्जी कंपनी बना रखी थी, उनके पैरों तले जमीन खिसक गयी। फिलहाल छापेमारी में संजीव के घर से डीआरआई की टीम को कई कागजात मिले है, जिसके आधार पर आगे की जांच व पूछताछ की जा रही है। जानकारी के अनुसार भारत-बांग्लादेश बॉर्डर के पेट्रापोल सीमा से करीब 7 करोड़ 50 लाख रुपये के यह आयात पर डीआरआई की नजर पड़ी, जिसके बाद कलकता डीआरआई की टीम ने बिहार की टीम से संपर्क किया और इसकी जांच का जिम्मा सौंपा। इसके बाद मुजफ्फरपुर की टीम ने यहां रक्सौल पुलिस के सहयोग से कार्रवाई की है। फिलहाल संजीव गुप्ता डीआरआई की अभिरक्षा में है और जांच रिपोर्ट बनने के बाद जो आरोप साबित होगें, उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जायेगी। फर्म बनाने के साथ-साथ बैंक की मिलीभगत से गलत हस्ताक्षर कर संजीव गुप्ता के द्वारा खाता भी खोला जाता था, इसका भी प्रमाण डीआरआई को मिला है।

सीएम नीतीश ने निरीक्षण कर अफसरों को दिया निर्देश

सब-वे एवं मल्टीलेवल हब का निर्माण कार्य तेज करें

एजेंसी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को पटना जंक्शन के समीप निमार्णाधीन भूमिगत मार्ग (सब-वे) एवं मल्टीलेवल हब का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने भूमिगत मार्ग (सब-वे) में लगने वाले एस्केलेटर, लिफ्ट, प्रवेश एवं निकास मार्ग सहित यात्रियों को उपलब्ध करायी जाने वाली अन्य सुविधाओं तथा निर्माण कार्य की प्रगति के संबंध में अधिकारियों से विस्तृत जानकारी ली।

निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुये कहा कि इस भूमिगत मार्ग (सब-वे) का निर्माण कार्य पूरा हो जाने के बाद लोगों को पटना जंक्शन पहुंचने में काफी सहूलियत होगी। भूमिगत मार्ग (सब-वे) में हर प्रकार की सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही है, जिनके जरिये पटना जंक्शन के आसपास के इलाके में लोग आसानी से आवागमन कर सकेंगे, उन्हें भीड़भाड़ से छुटकारा मिलेगा।

इसके बाद मुख्यमंत्री ने मल्टीलेवल हब का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को मल्टीलेवल हब के निर्माण कार्य की अद्यतन प्रगति के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने भूमिगत मार्ग (सब-वे) एवं मल्टीलेवल हब का जीपीओ गोलम्बर फ्लाईओवर एवं हनुमान मंदिर फ्लाईओवर से भी निरीक्षण किया। पटना शहर स्थित स्मार्ट सिटी के अन्तर्गत जीपीओ गोलम्बर के नजदीक मल्टीलेवल हब को पटना जंक्शन से जोड़ने के लिए भूमिगत मार्ग (सब-वे) का निर्माण कराया जा रहा है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य पटना जंक्शन रेलवे स्टेशन परिक्षेत्र अन्तर्गत यातायात व्यवस्था को विकसित किया जाना है। पटना जीपीओ गोलम्बर के समीप नवनिर्मित मल्टीलेवल हब का निर्माण किया जा रहा है जो यातायात के विभिन्न स्त्रोतों को जोड़ने वाला एक प्रमुख केन्द्र होगा। इस मल्टीलेवल हब में सिटी बस, ऑटो, टैक्सी एवं निजी कार पार्किंग की व्यवस्था की जा रही है। यहां से पटना रेलवे स्टेशन तथा महावीर मंदिर, बुद्ध स्मृति पार्क को जोड़ने के लिए भूमिगत मार्ग (सब-वे) का निर्माण किया जा रहा है। इस स्थान पर काफी भीड़भाड़ रहती है।

गंगा सफाई अभियान को ले भागलपुर पहुंची राफ्टिंग टीम

भागलपुर। गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाये रखने को लेकर चलाए जा रहे अभियान में शामिल टीम रविवार को तेरह सौ किलोमीटर दूरी तय कर भागलपुर के बरारी गंगा घाट पहुँची, जहां टीम का स्वागत करने के लिए समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में जिलाधिकारी डॉक्टर नवल किशोर चौधरी के साथ साथ स्कूली बच्चों ने भी भाग लिया। इस दौरान जिलाधिकारी ने आम जनों से गंगा को स्वच्छ रखने की अपील की। इसके बाद जिलाधिकारी ने टीम को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिसके बाद राफ्टिंग की बीस महिला सदस्यीय टीम राफ्टिंग करते हुए साहेबगंज की ओर बढ़ गयी।

जमीयत उलेमा ए हिन्द का एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित

किशनगंज। किशनगंज में जमीयत उलेमा ए हिन्द का एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन रविवार को मारवाड़ी कॉलेज के समीप किया गया। जमीयत उलेमा ए हिन्द के राष्ट्रीय अध्यक्ष महमूद असद मदनी ने बांग्लादेश में हिंदुओं के ऊपर हो रहे हमलों को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने मुस्लिम बहुल किशनगंज में जमीयत उलेमा ए हिन्द द्वारा आयोजित सम्मेलन को संबोधित करने पहुंचे मदनी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि बांग्लादेश में जो घटनाएं हो रही है वो निंदनीय है।

हिंदुओं पर हमला बंद होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई मुसलमान अगर गैर मुस्लिम के साथ गलत व्यवहार करे तो यह बहुत बड़ा अन्याय है।

कबड्डी प्रतियोगिता के लिए पूर्वी चंपारण की टीम का हुआ चयन

पूर्वी चंपारण। बिहार राज्य कबड्डी संघ के तत्वाधान में 50वीं राज्य स्तरीय जूनियर बालिका कबड्डी प्रतियोगिता के लिए पूर्वी चंपारण की जूनियर बालिका कबड्डी टीम का चयन रविवार को मोतिहारी खेल भवन में सम्पन्न हुआ। चयन के लिए ट्रायल देने जिले के विभिन्न क्षेत्रों बालिकाएं पहुंची। सभी ने अपना बेहतर प्रदर्शन का प्रयास किया। जिसमें श्वेता कुमारी, अंजली कुमारी, सीमा कुमारी, खुशी सिंह, अंजली कुमारी, कुमकुम गुप्ता, आस्था कुमारी, पलक राज, आरोही राज, अंशिका झा, अनन्या रानी, नीलू कुमारी, शिल्पी कुमारी, अंजली कुमारी, श्वेता कुमारी, अंजली कुमारी का चयन किया गया है। उक्त बालिका कबड्डी खिलाड़ी जिले का प्रतिनिधित्व करेंगी। मुख्य संरक्षक मुन्ना गिरी,कबड्डी संघ के अध्यक्ष अमित कुमार, प्रो. डॉ. कर्मात्मा पाण्डेय, सचिव भानू प्रकाश, रवि राज,धर्मवीर प्रसाद, अरविन्द कुमार, अमित कश्यप, कुन्दन कुमार आर्य, सोमोजीत बनर्जी, टिंकू जी, दीपक तिवारी, अंशु, विभूद शरण, रश्मि रंजन, कोमल, बेनजीर खान, पूर्णिमा यादव, अब्दुल्ला सहित जिले अन्य खेलप्रेमियो ने चयनित खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते हुए शुभकामनाएं दीं है।

हरसिद्धि में पुलिस जांच टीम से बदसलूखी और मारपीट के मामले में पांच नामजद

पूर्वी चंपारण। जिले के हरसिद्धि थाना क्षेत्र के बैरिया डीह पंचायत के वार्ड 4 स्थित घोघराहा बैरिया गांव में शनिवार को पुलिस जांच टीम के साथ बदसलूखी और मारपीट के मामले में अपर थानाध्यक्ष विभा कुमारी के स्वलिखित बयान पर एफआईआर दर्ज हुआ है। जिसमें तीन महिला सहित पांच लोग नामजद अभियुक्त बनाए गए है। नामजद अभियुक्तों में शराब माफिया उपेंद्र सहनी, वसंत सहनी, उपेंद्र सहनी की पत्नी सरोज देवी, आशा देवी व गुदवाती देवी शामिल है। उल्लेखनीय है, कि शराब माफिया का परिवार उमेश सिंह के बनी बाउंड्री को तोड़ रहे थे। जिसको लेकर पुलिस को सूचना दी गई। थानाध्यक्ष सर्वेंद्र कुमार सिंहा ने गश्ती में निकली अपर थानाध्यक्ष विभा कुमारी को पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर जाने का आदेश दिया। जहां पुलिस बल के साथ दारोगा विभा पहुंची। वहां जाने पर वे दोनों पक्ष को समझाने का प्रयास किया। लेकिन शराब माफिया उपेंद्र सहनी व वसंत सहनी का परिवार नहीं माना। पुलिस के समक्ष ही बाउंड्री को तोड़ डाला। साथ ही पुलिस के साथ गाली गलौज करते हुए हमला बोल दिया। जिसमें लाठी डंडा से मारपीट कर सिपाही पंकज महतो को जख्मी कर दिया गया। पुलिस ने हमलावरों को खदेड़ी जिसमे एक हमलावर महिला आशा देवी पकड़ी गई। अपर थानाध्यक्ष विभा ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर पकड़ी गई हमलावर महिला को रविवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

बुद्धिजीवी मंच ने निकाली शिक्षा जागरूकता रैली

नवादा। नवादा बुद्धिजीवी विचार मंच की सतत शिक्षा जागरूकता अभियान रविवार को लाइनपार मिजार्पुर प्राथमिक विद्यालय से प्रारंभ हुआ और पोषक क्षेत्र के विभिन्न टोले मोहल्ले से गुजरते हुए आकर्षक नारे के साथ प्रभातफेरी निकाली गई। मंच के संयोजक अवधेश कुमार के नेतृत्व में निर्बाध रूप से जारी यह अभियान मिजार्पुर में जन जागरूकता का अतिरिक्त टॉनिक साबित हुआ। जहाँ सैकड़ों स्कूली बच्चों ने उत्साह के साथ नारे लगाये। जन्म दिया तो शिक्षा दो, बेटा-बेटी एक समान सबको शिक्षा सबको मान , गैया बकरी चरती जाय मुनिया बेटी पढ़ती जाय जैसे आकर्षक नारों से टंकित तख्तियाँ लहराते हुए बच्चों का हुजूम मोहल्ले वासियों के लिए कौतुहल का विषय रहा। लोक गायक राजू रंजन और चंदेश्वर प्रसाद के लोकगीत का प्रभाव यह रहा कि महिलाएं झरोखे से झांकते हुए भी सुर सुर मिला रही थी। गलियों में शिक्षा का अलख जगाना बच्चों के शारीरिक और मानसिक ऊर्जा के लिए उत्प्रेरक बनकर सामने आया, जिसकी प्रशंसा मुहल्लेवासियों के अलावे शिक्षाविदों ने भी की है। मौके पर अवधेश कुमार सहित मंच के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

लिंग आधारित हिंसा को समाप्त करने के लिए निकाली गयी जागरूकता रैली

नवादा। समाज कल्याण विभाग बिहार के निर्देश के आलोक में जिला बाल संरक्षण इकाई, नवादा एवं जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग के द्वारा लिंग आधारित हिंसा को समाप्त करने के लिए पदाधिकारी एवं विद्यालय के छात्राओं के जागरुता रैली का आयोजन किया गया। समाहरणालय से निकल कर भगत सिंह चौक एवं विजय बाजार होते हुए प्रजातंत्र चौक पर समापन किया गया। इसके बाद सभी के बीच बाल विवाह, लिंग हिंसा, दहेज प्रथा पर बनी वीडियो को दिखाया गया एवं मोटिवेशनल वीडियो भी दिखाई गई। डॉ राज कुमार सिन्हा , सहायक निदेशक, बाल संरक्षण इकाई, नवादा द्वारा बताया गया कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा के उन्मूलन के लिए अंतराष्ट्रीय दिवस 25.11.2024 से मानवाधिकार दिवस दिनांक 10.12.2024 तक दुनिया में लिंग आधारित हिंसा को समाप्त करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही नई चेतना, पहल बदलाव की ओर इसी अवसर पर जिला बाल संरक्षण इकाई, नवादा द्वारा भी विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि विगत माह में जिले के सभी पुलिस पदाधिकारी को पॉक्सो अधिनियम एवं किशोर न्याय अधिनियम पर प्रशिक्षण दिया गया है। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते ने कहा कि छात्राओं को किसी भी प्रकार की हिंसा को नहीं सहने के लिए एवं अपने लिए आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि छात्राएं अपनी पढ़ाई पूरी कर आत्मनिर्भर बनने के बाद ही विवाह के लिए सोचें। किसी भी स्तर पर हो रही प्रताड़ना की शिकायत दर्ज करने के लिए 112, 181 तथा बच्चों की सहायता के लिए 1098 नंबर पर कॉल कर सकते है। उन्होंने अनेक कानूनी धाराओं पर भी प्रकाश डाला। साथ ही छात्राओं को बाल विवाह के बाद होने वाले हिंसाओं और समस्याओं से बारीकी से अवगत कराया।

अभिज्ञान ने प्रतिभा का किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

किशनगंज। मध्य प्रदेश के एबीवी सीडीएस ग्वालियर में दो दिवसीय 11वीं राष्ट्रीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप फॉर ऑटिज्म में ठाकुरगंज के अभिज्ञान भारद्वाज ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और राज्य सहित किशनगंज जिला व ठाकुरगंज नगर का नाम रोशन किया। अभिज्ञान भारद्वाज ने सॉफ्टबॉल थ्रो में प्रथम स्थान हासिल कर ठाकुरगंज को गौरवान्वित किया। रविवार को इस संबंध में अभिज्ञान भारद्वाज के माता नीना दास ने बताया कि अभिज्ञान बचपन से ही खेलकूद के क्षेत्र में मन लगा रहता है। उन्होंने दिव्यांगता को कभी अपने सामने आने नहीं दिया। उनकी खेलकूद के प्रति झुकाव को देखते हुए उसे तीन वर्ष पूर्व रानी लक्ष्मीबाई महिला विकास समिति सफल विशेष विद्यालय, मुजफ्फरपुर में नामांकन कराया गया। विद्यालय के देखरेख में उन्होंने एक वर्ष पूर्व राज्य स्तर पर तीसरा स्थान और आज राष्ट्रीय स्तर पर सॉफ्टबॉल थ्रो में प्रथम स्थान हासिल कर ठाकुरगंज का नाम गौरवान्वित किया। इस संबंध में रानी लक्ष्मीबाई महिला विकास समिति सफल विशेष विद्यालय, मुजफ्फरपुर के कार्यक्रम समन्वयक लालू तुरहा ने बताया कि अभिज्ञान भारद्वाज अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर राष्ट्रीय स्तर के उक्त प्रतिस्पर्धा में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि उक्त प्रतियोगिता में 16 राज्यों के खिलाड़ियों ने भाग लिया था। उन्होंने बताया कि अभिज्ञान भारद्वाज के माता नीना दास ने भी टीम के प्रशिक्षण और मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यालय की प्राचार्य उषा कुमारी ने वीडियो कॉल के माध्यम से खिलाड़ियों को मार्गदर्शन करते हुए महत्ती भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि यह चैंपियनशिप अभिज्ञान भारद्वाज की कड़ी मेहनत और उनके अंदर छिपी अपार क्षमताओं को दशार्ती है। यह प्रदर्शन न केवल अभिज्ञान की मेहनत का परिणाम है, बल्कि यह अन्य बच्चों और खिलाड़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत है। उनकी इस सफलता से समाज में एक सकारात्मक संदेश गया है और उनकी भविष्य की संभावनाओं को नई उड़ान मिली है।

मृतक अमीन के परिजन को मुआवजा व सरकारी नौकरी देने की मांग

गढ़वा। झारखंड राज्य अमीन संघ के प्रदेश अध्यक्ष कुंदन कुमार ठाकुर ने झारखंड सरकार से लोहरदगा नगर परिषद में कार्यरत अमीन धर्मेंद्र सिंह की उत्तराधिकारी को सरकारी नौकरी एवं उचित मुआवजा देने की मांग की है। इस संबंध में श्री ठाकुर ने झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर एवं भवनाथपुर विधायक अनंत प्रताप देव को आवेदन सौंपकर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए झारखंड सरकार से पहल करने का आग्रह किया है। सौंपे गये आवेदन में श्री ठाकुर ने कहा है कि गढ़वा जिला के जड़गड़ ग्राम निवासी आदिवासी परिवार के धर्मेंद्र सिंह (35 वर्ष) नगर परिषद कार्यालय लोहरदगा में संविदा के आधार पर अमीन के पद पर कार्य थे। गत छह दिसंबर को रांची रिम्स में हृदय गति रुक जाने के कारण उनकी मौत हो गई। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है। उनकी पत्नी मंजू देवी एवं तीन वर्षीया पुत्री नीतू कुमारी के भरण पोषण का अब कोई सहारा नहीं है। इस मामले पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए मृतक अमीन की पत्नी को सरकारी नौकरी एवं उचित मुआवजा उपलब्ध कराना जनहित में आवश्यक है।

गरीब व असहाय कन्याओं की शादी के लिए उम्मीद की किरण बना

कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी 251 कन्याओं का करायेगा सामूहिक विवाह

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी गरीब, असहाय एवं अनाथ कन्याओं की शादी के लिए उम्मीद का किरण बन गया है। जिले में आगामी एक मार्च 2025 को दानरो नदी तट पर 251 कन्याओं की निःशुल्क सामूहिक विवाह कराया जाएगा। इसकी तैयारी प्रारंभ कर दी गई है। सोसाइटी के सचिव विकास कुमार माली ने रविवार को शहर के कचहरी रोड स्थित होटल विकास इन में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विवाह समारोह में हिंदू और मुस्लिम कन्याओं के लिए अलग-अलग हिंदू व मुस्लिम रीति-रिवाज के अनुसार शादी करायी जाएगी।

श्री माली ने बताया कि संस्था की ओर से बिहार, झारखंड में अब तक 14 हजार से अधिक गरीब, असहाय और अनाथ कन्याओं की शादी करायी जा चुकी है। उनकी संस्था समाज के उन वर्गों की मदद के लिए समर्पित है जो दहेज प्रथा और गरीबी के कारण अपनी बेटियों की शादी करने में असमर्थ होते हैं।

प्रेस कॉन्फ्रेंस करते सचिव विकास कुमार माली

उन्होंने बताया कि इस वर्ष भी सामूहिक विवाह का आयोजन एक भव्य समारोह के रूप में होगा। इसमें स्थानीय प्रशासन, समाजसेवियों और शुभचिंतकों का सहयोग लिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि सोसाइटी का कार्य सिर्फ विवाह कराने तक सीमित नहीं है। यह संस्था दहेज प्रथा, बाल विवाह और भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए भी काम कर रही है। इसके अलावा, संस्था गरीब और अनाथ बहनों को शिक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी मार्गदर्शन देती है। इससे पूर्व वर्ष 2023 में संस्था की ओर से गढ़वा में 151 कन्याओं की सामूहिक विवाह करायी गई थी। श्री माली ने समाज के लोगों से अपील की है कि वे अपने क्षेत्र में मौजूद ऐसी कन्याओं को संस्था से पंजीत कराएं, जो विवाह योग्य हैं, लेकिन संसाानों के अभाव में उनकी शादी नहीं हो पा रही है। उन्होंने बताया कि आगामी कार्यक्रम के लिए दानरो नदी तट पर तैयारियां जल्द शुरू की जाएगी।

यह आयोजन न केवल सामाजिक एकजुटता का उदाहरण होगा, बल्कि गरीब और असहाय परिवारों के लिए एक नई उम्मीद लेकर आएगा। कार्यक्रम में कई सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासनिक आिकारी और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी शामिल होंगे।

रमना पुलिस ने कुआं से बरामद किया शव

एजाजत अंसारी की फाइल फोटो

खबर मन्त्र संवाददाता

रमना। थाना क्षेत्र के बहियार खुर्द गांव निवासी 40 वर्षीय एजाजत अंसारी का शव शनिवार की देर शाम सुरंगी पहाड़ के कुछ दूरी पर स्थित कुंआ से पुलिस ने बरामद किया है। मृतक का हाथ व पैर बांाा हुआ था। इस मामले में एजाजत अंसारी की पत्नी सलमा बीबी ने थाना को लिखित आवेदन देकर गांव के ही गुलाम मुस्तफा, इम्तेयाज अंसारी, सुहैल अंसारी, एहसान अली, गुलाम नबी, परवेज अंसारी एवं उनके परिवार वालों पर अपने पति की हत्या कर शव को छिपाने के लिए सुनसान पहाड़ी के पास कुंआ में फेंकने आरोप लगाया है। मृतक की पत्नी सलमा बीबी के लिखित आवेदन के आाार पर रमना थाना ने प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंाान शुरू कर दिया है। जानकारी के अनुसार एजाजत शुक्रवार की रात 10 बजे बजे अपने घर से एक किलोमीटर दूर मुखूतार अंसारी के घर मिलाद में शामिल होने गया था। मिलाद के बाद वह 11 बजे जमाल अंसारी के साथ घर आ रहा था, रास्ते में जमाल अपने घर रूक गया और एजाजत अंसारी अपने घर आने लगा। इसी दौरान जमाल अंसारी द्वारा गुलाम मुस्तफा को एजाजत के पीछे मोटरसाइकिल से जाते देखा गया। लेकिन सुबह तक एजाजत अंसारी के घर नहीं पहुंचने पर उसके परिजनों द्वारा खोजबीन शुरू किया गया। जिसके बाद एजाजत का शव शनिवार की देर शाम सुरंगी पहाड़ से कुछ दूर स्थित कुंआ से बरामद किया गया। मृतक की पत्नी के अनुसार गुलाम मुस्तफा व उनके परिवार वालों से जमीन का विवाद चल रहा है और इस मामले को लेकर कुछ दिन पहले गुलाम मुस्तफा के परिवार वालों द्वारा उन लोगों के साथ मारपीट भी किया गया था।

मुखिया ने की फांसी लगाकर आत्महत्या

मृतका सविता देवी की फाइल फोटो

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। राजेश कुमार मद्धेशिया की पत्नी रंका कला पंचायत की मुखिया सविता देवी 35 वर्ष ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार सविता देवी का कुछ दिन से तबियत खराब था। मेदिनीनगर के निजी अस्पताल में इलाज भी कराई थी।

इलाज के बाद शाम को घर लौटी। उसके कुछ देर बात परिजनों ने देखा कि उनका रुम का दरवाजा अंदर से बंद है। फिर परिजनों ने आवाज लगाया। लेकिन कोई जवाब नहीं मिलने पर लोगो ने रुम का दरवाजा खोला तो देखा कि सबिता देवी फंदे से झूल रही है। तत्काल परिजनों ने उसे रंका स्वास्थ्य केंद में भर्ती कराया। जहां से चिकित्सक प्राथमिकी उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर किया। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। इार घटना के बाद पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

झूठ-फरेब और अनर्गल बयानबाजी को छोड़ जनता की जिम्मेवारियों पर ध्यान दें विधायक : झामुमो

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा विधायक सत्येंद्र नाथ तिवारी अभी भी चुनावी मोड से बाहर नहीं आ पाए हैं। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि वे अब इस क्षेत्र के विधायक बन चुके हैं। अतः दूसरों पर अनर्गल बयानबाजी एवं जनता के बीच झूठ-फरेब परोसने के बजाय उन्हें अब क्षेत्र की समस्याओं एवं जनता की जिम्मेदारी पर यान देना चाहिए। जनता ने पुनः उन्हें इसीलिए मौका दी है ताकि क्षेत्र की मूलभूत सुविधाओं पर काम हो। न कि उनके द्वारा पूर्व के जनप्रतिनिधियों एवं उनके रिश्तेदारों पर लांछन लगाकर अपनी ज़िम्मेदारियों से मुंह मोड़ लें। झामुमो नेताओं ने रविवार को पूर्व मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेस आयोजित कर उक्त बातें कही। जिलाध्यक्ष तनवीर आलम खान ने कहा कि सत्येंद्र नाथ तिवारी अफवाह फैलाकर, षड्यंत्र

प्रेस कॉन्फ्रेंस करते झामुमो नेता

रचकर एवं झूठ-फरेब कर, जनता को गुमराह कर विधायक बनने में तो सफल रहे। परंतु जनता की आकांक्षाओं एवं जरूरत को पूरा करने में वह पूरी तरह से असफल साबित होंगे। अपने पुराने व्यवहार एवं चरित्र के अनुरूप वह पुनः पांच वर्षों तक जनता की गाढ़ी कमाई को लूटने-खसोटने का काम करेंगे। जिसका प्रयास भी उन्होंने शुरू कर दिया है। विधायक श्री तिवारी विधानसभा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों को रोककर संवेदकों को अपने पास मिलने के लिए बुला रहे हैं। जबकि काम में किसी तरह की त्रुटि होने पर वे अपने लेटर पैड के माध्यम से उसकी जांच करा सकते हैं। उनका मकसद सिर्फ संवेदक से कमीशन वसूली कर अपना जेब भरना है। उन्होंने कहा कि श्री तिवारी विकास कार्यों की बजाय अपना पूरा कार्यकाल बतौलाबाजी में ही बिताने वाले हैं। वे संवेदकों पर ठेका प्रकिया में फर्जी कागजात लगाने का आरोप लगा रहे हैं। जबकि उन्हें अपने गिरेबान में झांक कर देखना चाहिए। उन्होंने विाायक रहते हुए अपनी मां के नाम से कंपनी बनाकर अलकतरा घोटाला किया, दो वर्ष जेल में रहे तथा बाद में अपने बहनोई को कंपनी का निदेशक बनाकर फंसा दिया। उनकी कंपनी को माननीय उच्च न्यायालय ने घोटाला में दोषी साबित किया है। परंतु अपने अव्यवहारिक चरित्र के लिए प्रचलित विधायक सत्येंद्र नाथ तिवारी क्षेत्र की समस्याओं एवं विकास करने की बजाय लूटने-खसोटने के जुगाड़ में लगे हुए हैं। बालू के मुद्दे पर भी श्री तिवारी ने विपक्ष में रहते हुए दोहरा नीति अपनाया हुआ था। जब ट्रैक्टर वाले बालू की सप्लाई जनता के बीच शुरु करते तब वे बालू आपूर्ति रोकने के लिए प्रेसवार्ता आयोजित कर प्रशासन पर दबाव बनाया करते थे। जिससे दबाव में आकर प्रशासन ट्रैक्टरों को रोक देती थी। इस तरह जब बालू आपूर्ति रुक जाती थी तो पुनः वह जनता के बीच हल्ला करते की मिथिलेश ठाकुर के कार्यकाल में बालू नहीं मिल रहा है। ऐसे दोहरे चरित्र के व्यक्ति से गढ़वा की जनता हमेशा परेशान रहेगी। मौके पर युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष संजय सिंह छोटू, रोशन पाठक, प्रवक्ता कार्तिक पांडेय, आशीष गुप्ता, अनिल चंद्रवंशी आदि मौजूद थे।

स्पीड न्यूज

आलिया भट्ट ने की ऑटो की सवारी

मुंबई। बॉलीवुड स्टार आलिया भट्ट ने मुंबई में यातायात की समस्या से बचने के लिए अपनी शानदार कार को छोड़कर ऑटो की सवारी की। अभिनेत्री मुंबई के वर्सोवा जेटी पर नजर आई। इसके बाद बोट से उतरकर सफर के लिए ऑटो को चुना। हाईवे फेम अभिनेत्री एक ओवरसाइज स्ट्राइप्ड शर्ट और पैंट पहने हुए देखी गई। यातायात की समस्या से बचने के लिए आलिया भट्ट के साथ ही अन्य हस्तियां भी वर्सोवा से मुंबई के इलाके में शूटिंग स्थलों तक जाने के लिए जेटी राइड का सहारा लेती नजर आ चुकी हैं। इससे सफर करने में लगभग 90 मिनट का समय बचता है। कन्नड़ सुपरस्टार यश और कियारा आडवाणी जैसे अन्य अभिनेताओं को भी शूटिंग स्थलों तक पहुंचने के लिए जेटी का सहारा लेते देखा गया। हाईवे और रानी की प्रेम कहानी अभिनेत्री आलिया भट्ट सोशल मीडिया पर सक्रिय रहती हैं और अक्सर एक से बढ़कर एक पोस्ट शेयर करती रहती हैं।

हरियाणा में एक ही परिवार के चार सदस्यों की हत्या

कैथल। जिले के शाहाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत यारा गांव में रहने वाले कुरुक्षेत्र के जज के यहां रीडर, उनकी पत्नी, बेटा और बहू की घर में घुसे अज्ञात हमलावरों ने शनिवार रात हत्या कर दी, जबकि 13 वर्षीय पौत्र गंभीर रूप से घायल है। सभी के गले को तेज धारदार हथियार से काटा गया है। घटना की जानकारी रविवार को उस वक्त हुई जब पड़ोसी गेट तोड़कर अंदर गए, जहां शवों को देख उनके होश उड़ गए। एक ही परिवार के चार लोगों की हत्या की जांच में पुलिस जुट गई है।

दमिश्क हवाई अड्डे पर सभी उड़ानें 18 तक स्थगित

दमिश्क। सीरिया के सबसे बड़े हवाई अड्डे दमिश्क और अलेप्पो ने सशस्त्र आतंकवादी समूहों के शहरों पर कब्जा कर लेने से रविवार से क्रमश: 18 दिसंबर और 17 दिसंबर तक सभी उड़ानें स्थगित कर दीं। नोटम अलर्ट ने यह जानकारी दी है।

आंध्र प्रदेश में सड़क हादसा, चार की मौत

गुंटूर। आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले में रविवार को एक कार के पेड़ से टकरा जाने से चार लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। पुलिस ने कहा कि मृतकों में से एक तुल्लुरी सुरेश ने एक नई कार खरीदी थी। वह और उनके परिवार के सदस्य अपनी मन्नत पूरी करने के लिए तेलंगाना के कोंडागुट्टा अंजनेय स्वामी मंदिर गए थे। पूजा करने के बाद जब वे नेल्लोर जिले के कवाली मंडल में अपने पैतृक गांव सिरिपुरम वापस जा रहे थे, तो पिदुगुरल्ला मंडल के ब्राह्मणपल्ली गांव में उनकी कार सड़क किनारे एक पेड़ से टकरा गई, जिससे तुल्लुरी सुरेश, टी वनिता, योगुलु और वेंकटेश्वरुलु की मौके पर ही मौत हो गई। घायलों को पिदुगुरल्ला के जीजीएच में भर्ती कराया गया।

पाक में 22 आतंकी ढेर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में 22 आतंकवादी और 6 सुरक्षा कर्मी मारे गए। पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा, इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने शनिवार को कहा कि सुरक्षा बलों ने उत्तर-पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के विभिन्न जिलों में अभियान चलाया। टैंक जिले में एक खुफिया-ऑपरेशन के दौरान नौ आतंकवादी मारे गए और छह अन्य घायल हो गए।

गंगोत्री में पहली बर्फबारी से बढ़ी ठंड

उत्तरकाशी। लंबे इंतजार के बाद रविवार को गंगोत्री धाम, हर्षिल घाटी, यमुनोत्री और हरकीदून घाटी में सीजन की पहली बर्फबारी हुई। बर्फबारी से ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फ की चादर बिछ गई। जबकि निचले क्षेत्रों में कड़ाके की ठंड शुरू हो गई है। गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के आसपास की पहाड़ियां भी बर्फ से ढक गई हैं, जिससे यहां का नजारा और अधिक मनमोहक हो गया है।

किसानों को समृद्ध करना जरूरी : गडकरी

सड़क एवं परिवहन मंत्री ने सीएनजी ट्रैक्टर किया लांच

एजेंसी

चंडीगढ़। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि देश की तरक्की के लिए गांवों के किसान-मजदूरों को समृद्ध करना जरूरी है। देश की उन्नति में 12 से 14 प्रतिशत उन्नति खेतीबाड़ी व सहयोगी इंडस्ट्री से आती है। नितिन गडकरी पंजाब के अमृतसर में सहकार भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन समारोह में देशभर से आए हुए प्रतिनिधियों को रविवार संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि 22 से 24 फीसदी ग्रोथ मैन्युफैक्चर और 52 से 54 प्रतिशत ग्रोथ सर्विस सेक्टर से आती थी। स्वाधीनता आंदोलन की शुरूआत में 90 फीसदी आबादी गांवों में रहती थी, लेकिन अब गांवों में लोग नहीं रह रहे हैं। 30 फीसदी आबादी गांवों से निकल कर बड़े शहरों में चली गई है। अमृतसर में सहकार भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीनानाथ ठाकुर और राष्ट्रीय महामंत्री डॉ.उदय जोशी की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में नितिन गडकरी ने कहा कि बड़े शहरों में लोग झोपड़-पट्टी में रह रहे हैं। वह मजबूरी में शहरों में गए, क्योंकि वहां अच्छे घर व सुविधाएं नहीं थी। हमारे किसान व मजदूरों की हालत अच्छी नहीं है। अगर आज हमें आर्थिक स्थिति को मजबूत करना है तो गांव, गरीब, किसान, मजदूर और को ग्रामीण व कृषि एवं जंगल के क्षेत्र को समृद्ध करना होगा। गडकरी ने कहा कि कृषि क्षेत्र में नई तकनीक आ रही हैं। अगर गांवों का उद्धार करना है तो सहकार क्षेत्र की प्रथमिकता में किसानों को रखें। यह कठिन है, लेकिन असंभव नहीं है। हमारा किसान अब अन्नदाता नहीं है, वह ऊर्जा दाता हो गया है, ईंधन दाता है। ग्रीन ऊर्जा आधारित तकनीक को बढ़ावा देने की वकालत करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अब सीएनजी में बसें आ रही हैं और ट्रैक्टर भी आ रहे हैं। इलेक्ट्रिक पर चलने वाला, सीएनजी पर चलने वाला और इथेनॉल पर चलने वाला ट्रैक्टर आ रहे हैं। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने सीएनजी पर चलने वाला ट्रैक्टर लांच किया है, जिसमें पेट्रोल का खर्च आधे से भी कम हो गया है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर लॉन्च किया जाएगा। सहकार भारती के अध्यक्ष दीनानाथ ठाकुर ने कहा कि 2021 में जब सहकारिता मंत्रालय की स्थापना हुई तो देश में सहकारिता के प्रति एक नई चेतना का निर्माण हुआ। हम सभी को इस बात के लिए गौरवान्वित होना चाहिए कि इसके लिए सबसे अधिक योगदान सहकार भारती का रहा है।

सीरिया में असद शासन का अंत

2011 से चल रहे गृहयुद्ध समाप्त, विद्रोहियों ने की नये युग की घोषणा

एजेंसी

दमिश्क। सीरिया में करीब 50 साल के बाथ शासन और 24 साल के बशर अल असद शासन का रविवार को अंत हो गया। विद्रोही गठबंधन के सामने असद की ताकतवर सरकार 10 दिन भी नहीं टिक पाई। इसके साथ ही 2011 से चल रहे गृहयुद्ध का भी खात्मा हो गया। राजधानी दमिश्क की सड़कों पर लोग जश्न मना रहे हैं। अपने शासन का अंत करीब देख बशर अल असद पहले ही देश छोड़ कर भाग चुके हैं। सीरियाई सेना ने इसकी पुष्टि की। सीरिया के सार्वजनिक संस्थानों पर कब्जे के साथ विद्रोही गुट ने रविवार को सीरिया के आजाद होने की घोषणा की। जेलों से कैदियों को रिहा करने की घोषणा की गई।

इस्लामी चरमपंथी गुट हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) और विद्रोही गठबंधन ने कहा है कि अब नया सीरिया बनेगा, जहां सब शांति से रहेंगे। विद्रोहियों की तरफ से कहा गया कि देश के सार्वजनिक संस्थान 'पूर्व प्रधानमंत्री' की देखरेख में रहेंगे, जब तक नई सरकार सत्ता पर काबिज नहीं हो जाती। पहले प्रधानमंत्री मोहम्मद गाजी अल जलाली ने भी एक रिकॉर्डेड बयान में विद्रोहियों से मिलकर नई सरकार के गठन की बात कही।बशर अल असद ने साल 2000 में अपने पिता हफीज अल-असद के बाद सीरिया की कमान संभाली थी। हफीज अल असद ने 1950-60 के गृहयुद्ध के बाद तख्तापलट कर सीरिया की सत्ता संभाली थी। पिता हफीज अल असद ने 29 साल शासन किया। इस तरह साल 1971 के बाद से 2024 तक असद परिवार का सीरिया पर शासन रहा। असद के पिता हफीज अल अस्साद ने बाथ पार्टी बनाई थी और इस पूरे शासनकाल में यही पार्टी सत्ता का प्रतिनिधित्व करती रही। इसलिए दमिश्क पर कब्जे के बाद विद्रोहियों ने बयान जारी कर कहा कि बाथ पार्टी के शासन के 50 सालों के उत्पीड़न और 13 सालों के अपराध, अत्याचार और विस्थापन का सामना कर आज, 8 दिसंबर, 2024 को उस कालयुग का अंत और सीरिया के नए युग की शुरूआत का हम ऐलान करते हैं। 2011 में अरब स्प्रिंग के दौरान सीरिया में बशर अल असद शासन के खिलाफ व्यापक विद्रोह भड़का था। लेकिन उस समय सत्ता पर मजबूत पकड़ रखने वाले असद को रूस और ईरान जैसे सहयोगियों के कारण विद्रोहियों से निबटने में सफलता मिली थी।

इस बार विद्रोहियों के सामने उखड़े असद के पांव इस बार केवल 10 दिनों में असद का साम्राज्य ढह गया। असद शासन की इस कमजोरी के पीछे मौजूदा वैश्विक परिदृश्य है जहां असद शासन का समर्थन करने वाला रूस खुद यूक्रेन के साथ युद्ध में उलझा हुआ है।

जबकि ईरान इजराइल के साथ सैन्य संघर्ष में उलझे होने के कारण असद शासन के समर्थन में मजबूती से खड़ा होने की स्थिति में नहीं था। ईरान के समर्थन वाले हिज्बुल्लाह के खिलाफ इजराइल के लगातार अभियानों ने उसकी कमर तोड़ कर रख दी है। बशर अल असद सरकार और विद्रोही गुटों के बीच जारी संघर्ष में अब तक पांच लाख से ज्यादा लोगों के मारे जाने का दावा किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, सीरिया में गृहयुद्ध के कारण अब तक कम से कम 3,70,000 लोग विस्थापित हुए हैं। असद शासन के अंत के बाद दुनिया भर की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि आने वाले दिनों में सीरिया की सत्ता की तस्वीर क्या होगी। सीरिया में नई सरकार कैसे बनेगी क्योंकि जिन विद्रोही लड़ाकों ने असद शासन का अंत किया है, उनमें शामिल अलग-अलग गुट सत्ता में ज्यादा भागीदारी का दावा करेंगे। इनमें ज्यादातर कट्टरपंथी विचारधारा के हिमायती गुट हैं जो विचारधारा के हिसाब से देश चलाने पर जोर देंगे। इन सभी में शासन और नई सरकार की नीतियों को लेकर एकराय होगी, इसकी संभावना कम ही है।

▶▶ विद्रोहियों के सामने असद की सरकार 10 दिन भी नहीं टिकी

महाकुंभ के दौरान तीन हजार ट्रेनें चलेंगी :वैष्णव

प्रयागराज। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि महाकुंभ को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए रेलवे ढाई वर्ष से कार्य कर रहा है। इसके लिए अब तक लगभग पांच हजार करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। श्रद्धालुओं को आने एवं जाने में कोई समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके लिए 523 टिकट काउंटर बनाए गए हैं। सात से अधिक नए प्लेटफार्म का निर्माण कराया गया है। महाकुंभ के दौरान तीन हजार ट्रेनों का चलाया जाएगा। वैष्णव रविवार को यहां पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। रेल मंत्री वैष्णव झूंसी रेलवे स्टेशन और नए रेलवे पुल का निरीक्षण करने प्रयागराज पहुंचे हैं।

रेल मंत्री ने कहा कि श्रद्धालुओं को सकुशल लाने एवं ले जाने के लिए तीन हजार स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। टिकट काउंटरों की संख्या में वृद्धि की गई है, ताकि भीड़ का दबाव न बढ़ने पाए। उन्होंने कहा कि रेलवे लगभग दो करोड़ श्रद्धालुओं को यात्रा कराएगा। यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर तैयारियां पूरी कर ली गई है। यात्रियों को किसी प्रकार से असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिए नए प्लेटफार्म भी बनाए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में पूर्वोत्तर रेलवे, उत्तर रेलवे, उत्तर मध्य रेलवे के कार्यों में किसी प्रकार की कोई समस्या न हो इसके लिए समन्वय की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही तीनों रेलवे जोन का बेहतर समन्वय बना रहे इसका पूरा ध्यान दिया गया है। यात्रियों की भीड़ के मद्देनजर 7 से अधिक प्लेटफार्म नए बनाए गए हैं। इसके साथ ही 23 से अधिक होल्डिंग एरिया बनाए गए हैं, स्टेशन के दोनों तरफ यात्रियों के रुकने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि रिंग सर्किट का निर्माण किया गया है। प्रयागराज क्षेत्र में 21 रेलवे फ्लाईओवर और रेल अंडर पास बनाए गए हैं।

किसानों का दिल्ली कूच विफल

हरियाणा पुलिस ने दागे आंसू गैस के गोले एक किसान की हालत गंभीर, पीजीआई रेफर

एजेंसी

अंबाला। हरियाणा-पंजाब के शंभू बार्डर पर धरना दे रहे किसानों ने रविवार दोपहर दिल्ली कूच का प्रयास किया। पुलिस व किसानों के बीच करीब चार घंटे तक जद्दोजहद चलती रही। इस बीच पुलिस द्वारा एयर गन से किसानों की तरफ फूल बरसाए गए। किसानों ने दावा किया कि पुलिस ने चकमा देने के लिए यह सब किया और कुछ ही पलों में फूल बरसाने वाली गन से आंसू गैस के गोले बरसाए गए। कई घंटे के बाद किसानों ने कूच को टाल दिया और वापस लौट गए। शंभू बार्डर पर धरना दे रहे किसानों ने आज दूसरी बार दिल्ली कूच का प्रयास किया। किसान जैसे ही आगे बढ़ लगे तो हरियाणा पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए घेराबंदी शुरू कर दी। इसके बाद किसानों ने बैरिकेडिंग तोड़ने की कोशिश की। इस पर हरियाणा पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े, जिसमें 7-8 किसान घायल घायल हुए। इसके साथ किसानों पर पानी की बौछार भी की गई। हालांकि इस बीच हरियाणा पुलिस ने किसानों पर फूल भी बरसाए।

बीएसएफ ने देश की फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेंस को मजबूत किया : शाह

पूर्वी और पश्चिमी सीमा को सुरक्षित रखने में बीएसएफ का शानदार प्रदर्शन : गृह मंत्री

एजेंसी

जोधपुर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के सुरक्षा परिदृश्य में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है और इसमें हमारे सीमा सुरक्षा बल के जवानों का योगदान स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा। छह दशकों से साहस, शौर्य और बलिदान के बल पर ही सीमा सुरक्षा बल ने देश की फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेंस को मजबूत किया है। बीएसएफ ने सीमा पर आने वाली सभी चुनौतियों का मुकाबला कर देश की सुरक्षा की प्रथम पंक्ति को सशक्त किया है। शाह रविवार को जोधपुर में सीमा सुरक्षा बल के 60वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। शाह परेड में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। गृह मंत्री ने कहा कि आठ दिसंबर 1965 से लेकर आज तक निरंतर देश की पूर्वी और पश्चिमी सीमा को सुरक्षित रखने का बीएसएफ का रिकॉर्ड शानदार रहा है। बीएसएफ के 1992 जवानों ने देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है, जिसके लिए देश की जनता सदैव उनकी ऋणी रहेगी। छह दशकों से सीमा सुरक्षा बल ने हमारी सुरक्षा को चाक-चौबंद रखा है। देश की बढ़ती सुरक्षा जरूरतों को बीएसएफ के बिना पूरा करना असंभव है इसीलिए 25 बटालियन से शुरू हुआ ये बल आज 193 बटालियन तक पहुंच गया है। शाह ने कहा कि दो लाख 70 हजार जवानों की संख्या वाला ये विश्व का सबसे बड़ा सीमारक्षक बल है। बीएसएफ ने 2024 में भी जाली मुद्रा, नारकोटिक्स, घुसपैठ और वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ लड़ने का अपना रिकॉर्ड अनेक अभियानों के माध्यम से बरकरार रखा है।

छह कंपनियों का मार्केट कैप 2.03 लाख करोड़ बढ़ा

शेयर समीक्षा

टीसीएस और एचडीएफसी के बाजार पूंजीकरण में सबसे अधिक वृद्धि

एजेंसी

नयी दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में सोमवार से शुक्रवार के कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 6 कंपनियों के मार्केट कैप में कुल मिलाकर 2,03,116.81 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। इस दौरान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और एचडीएफसी बैंक के मार्केट कैप में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी हुई। टॉप 10 की 4 कंपनियों के मार्केट कैप में कुल मिला कर 28,084.38 करोड़ रुपये की कमी हो गई।

टॉप 10 में शामिल कंपनियों के मार्केट कैप की ये स्थिति तब हुई, जब पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान बीएसई का सेंसेक्स 1,906.33 अंक यानी 2.38 प्रतिशत और एनएसई का निफ्टी 546.70 अंक यानी 2.26 प्रतिशत मजबूत हो गया। सोमवार से शुक्रवार के बीच हुए कारोबार के दौरान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 62,574.82 करोड़ रुपये बढ़ कर 16,08,782.61 करोड़ रुपये के स्तर तक पहुंच गया। इसी तरह एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 45,338.17 करोड़ रुपये बढ़ कर 14,19,270.28 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसके अलावा इंफोसिस का मार्केट कैप सोमवार से शुक्रवार तक हुए कारोबार के दौरान 26,885.80 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,98,560.13 करोड़ रुपये के स्तर पर, रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 26,185.14 करोड़ रुपये बढ़ कर 17,75,176.68 करोड़ रुपये के स्तर पर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 22,311.55 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,71,087.17 करोड़ रुपये के स्तर पर और आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 19,821.33 करोड़ रुपये उछल कर 9,37,545.57 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। दूसरी ओर, भारती एयरटेल का मार्केट कैप 16,720.10 करोड़ रुपये घट कर 9,10,005.80 करोड़ रुपये के स्तर तक गिर गया। इसी तरह आईटीसी का मार्केट कैप 7,256.27 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 5,89,572.01 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 2,843.01 करोड़ रुपये घट कर 5,83,673.71 करोड़ रुपये के स्तर पर और एलआईसी का मार्केट कैप 1,265 करोड़ रुपये कम होकर 6,21,937.02 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 17,75,176.68 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद टीसीएस (कुल मार्केट कैप 16,08,782.61 करोड़ रुपये), एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,19,270.28 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 9,37,545.57 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (मार्केट कैप 9,10,005.80 करोड़), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 7,98,560.13 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया मार्केट कैप 7,71,087.17 करोड़), एलआईसी (मार्केट कैप 6,21,937 करोड़ , आईटीसी का मार्केट कैप 5,89,572.01 करोड़ और हिंदुस्तान यूनिलीवर (मार्केट कैप 5,83,673.71 करोड़) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों के लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।